भाषक ज्योतिष कायस्थ तृतीय भागात्मकं
प्रश्न दर्पणं भाषा भाष्य सहितं ज्यो० बा
लमुकुन्द शर्मणा रचितमिदम्

अस्याधिकारः स्वाधीन एव रक्षितो राज्य
नियमे नियोजितश्च सं० १९५० ज्येष्ठ मा
स [illegible] मुद्रितः [illegible]

पत्र १८४ पर स्वामि सेवक की प्रीति वा वैर ...
१० है का की ता ... गाम में वास करने का विचार ...

२

ओ३म् ॥ *
ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥
अथ प्रश्नदर्शनारंभः ॥

नत्वा गणेश्वरं देवम्पापघ्नं सर्व-
कामदम् लोकानामुपकारार्थं
क्रियते प्रश्नदर्शनम् ॥ १ ॥

मया बालमुकुंदेन प्रश्नदर्शनं क्रियते किमर्थं लोकानामुपकारार्थम् किं कृत्वा गणेश्वरं नत्वा किं भूतं देवं प्रकाशरूपं पुनः किंभूतं पापघ्नं पुनः ... भाषार्थः

लोकोपकारके लिये प्रकाश रूप पापहारक सर्व कामना पूर्ति करणहारे श्री गणेशजी को प्रणाम कर मै बालमुकुंद प्रश्नदर्शन प्रकट करता हूं १

प्रकाशे व्याख्यास्यामः १ भौ
म सित बुधें द्विन सौम्य सिता
रेज्य मन्दकोणउर बोरुद्गाशयाः २

भाषा (प्रकाश) तेजो रूप ईश्वर को (व्याख्यास्यामः) नमस्कार करते हैं वा ग्रहादिकोंका फल-कथन करते हैं १ मेषादि राशियों के स्वामि कहते हैं मंगल १ शुक्र २ बुध ३ चंद्र ४ सूर्य ५ बुध ६

शुक्र ७ मंगल ८ गुरु ९ शनि १० शनि ११ गुरु १२ मेषादि राशि और नवांश राशिके स्वामि कहेहैं

राशिस्वामिनः

मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध	म	कुं	मी
मं	शु	बु	चं	सू	बु	शु	मं	बृ	श	श	बृ

अजोक्षांगनाकर्कीन्दु भान्यागयु
ग्मो केऽष्टवं सप्तभन्नीचं सूर्यात्
३ दिग्गुणाष्टाविंशतिथिशरभ-
नवेन्द्रांशाः परमम् ४ सिंहो
[illegible] विनारीश
रू मन्दौ २२ मध्या परसाद्यं मान-
[illegible]
तामुपनवेन दिक् तिथि नखांशा
स्त्रिकोणं सूर्या रेज्य सिन मंदा-
नां शेषं शेषस्य द्व्यंशान्मूलं चं
द्रस्य ७ निथ दिङ्॰ मूल मतः शर-
स्वभं बुधस्य ८ ॥ ✤

सूर्यादि ग्रहोंकी उच्चराशि कहेहैं मेषका सूर्य उच्च होता है चंद्र २ मंगल १० बुध ६ बृहस्पति ४ शुक्र १२ शनिः ७ राहु ३ केतु ९ यह उच्चहैं २ उच्च राशिसें सप्तम नीच होतीहैं जैसे सूर्य ७ चं॰ ८ मं॰ ४ बु॰ १२ गु॰ १० शु॰ ६ श॰ १

रा॰ ९ के॰ ३ यह नीच हैं ५ अब परमोच्च पर-
म नीचांश कहता है सूर्य मेषके १० परमोच्च-
स्थ॰ तुलाके दश॰ अंश परम नीच होता है ऐसे
१० वृष ३ मृगादि २८ मिथु १५ कर्क ५ म २७
नव २० वृश्च १५ सूर्यादि ग्रह परमोच्च परम नी
च कहे हैं चक्रमें स्पष्ट लिखो है ५ अब मूल त्रिको

उच्चचक्रम्

ग्र	सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के
उच्च	००	१	९	५	३	११	०६	२	८
	१०	३	२८	१५	५	२७	२०	१५	१५
नी॰	१०	३	२८	१५	५	२७	२०	१५	१५

ण कहते हैं सूर्य का मूल त्रिकोण सिंह चंद्र २ मे
१ बु॰ ६ बृ॰ ९ शु॰ ७ कुंभका शनि राहु ५ यह
मूल त्रिकोण है ६ सिंहके आदि अंश २० सूर्य-
का मूल त्रिकोण होता है शेष १० अंश स्वराशीके
हैं भौम मेषके १२ अंश मूल त्रिकोण उपरि १८
अंश स्वराशि होता है गुरु धनके १० अंश मूल-
त्रिकोण उपरि २० अंश स्वराशि कहिये भृगु १५
अंश तुलामे मूल त्रिकोण उपरि १५ अंश स्वराशि
है शनि कुंभका अंश २० त्रिकोण उपरि १० अंश स्व

राशि है ७ चंद्रमा ३ अंश उच्च उपरि वृषके २७ अं
शमूल त्रिकोण कहिये ८ बुधकन्यामे अंश १५ उच्च
उपरि १० मूलत्रिकोण उपरि ५ स्वराशि होताहै ९

शुक्रेज्यौ भौ मेनौच- न्द्रोऽर्कः ॥ज्ञानि राहु वि

अंशविभाग चक्रम् ॥

सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श	
सिं	वृ	मे	कं	धन	तुल	कुंभ	राशि
०	३	०	१५	०	०	०	उच्चांश
२०	२७	१२	१०	१०	१५	२०	मूलत्रि-
१०	१८	१८	५	२०	१५	१०	स्वभांश-

प्रादेः [illegible]
शुक्रेज्यौ मंदज्ञौ राह्विन्दुः १० नपुं-
सकौ मंदज्ञौ सितेन्दू स्त्री नराः शेषाः
११ त्रिविकोणे चतुरस्रे पादवृद्धिः
सर्वेषाम् १२ मन्देज्य भौमे नराणां
मर्णोच्च १३ स्वादाद्य लक्ष्म स्वोलेश
वुः १४ त्रिकोणाय त्रिमिता १५

भाषा शुक्र गुरु ब्राह्मणों के स्वामि हैं सूर्य मंगल-
क्षत्रिय चंद्र वैश्य बुध शूद्र शनि राहु म्लेच्छों के ना
यक हैं ९ सूर्य मंगल चारपादवालों के अधिप-
ता है शुक्र गुरु दोपाद शनि बुध पंखी चंद्रमा

राहु सर्पोंके स्वामीहै १० शनि बुध नपुंसकोंके शु-
क्र चंद्र स्त्री सूर्य गुरु भौम पुरुषहैं ११ तृतीय द
शम घर सर्व ग्रहोंकी एक पाद दृष्टिहोतिहै स्वस्था
न सें नवम पंचम २ पाद चतुर्थाष्टम ३ पाद सप्त
म पूर्णदृष्टी होतिहै १२ सूर्य स्वस्थसें अस्तपर्यंत ग्र
हहानि करतो शनि ३।१० पूर्णदेखताहै ५।९ गुरु
की पूर्णदृष्टि ४।८ भौमकी पूर्ण दृष्टि ७ शेष सू
र्य चंद्र शुक्र राहुकी पूर्णदृष्टि होतिहै फलितार्थ-
येह है १३ ताजिक मतसें दृष्टि ग्रह युक्त स्था-
न सें २।१०।४।७ इन घरोंमे शत्रुदृष्टि ५।९।३।११
इन घरोंमें मित्रदृष्टि

विक्षीणेन्दु गुरुशुक्रा क्रूर गतु
थाः सौम्याः १९ शुक्लादितोदि
दिनैर्मध्य पूर्णक्षीणेंदुः १७ ॥
भौमेनो शैलोशुक्रेन्दुमैत्रो १८

भाषा॰ क्षीण चंद्र नहो · मध्यम वा पूर्ण चंद्र गुरु शु
क्र विना क्रूर बुध (अर्थात्) केवल बुध वा शुभ ग्र
ह सहित बुध येह सौम्य ग्रहहोसी अर्थात् क्षीण
चंद्र भौम शनि सूर्य राहु केतु इनके सहवा-
सी बुध पापीग्रह होतेहै १९ शुक्ल पक्षारंभसें दि
न १० शुक्लदशमी तक मध्यम चंद्रहै उपरि २

शमी से कृष्ण पंचमी तक पूर्ण उपरि अमाव-
स्या तक क्षीण चंद्र होता है १७ मंगल सूर्य
लाल रंग शुक्र चंद्र श्वेत रंग के मालक हैं १८

हरित्पीत कृष्ण नीला बुध गुरु मं
द राहवः १९ जल ग्राम वनच-
रा शुक्रेन्दुज्ञ गुरू शेषाः २० ज्ञे-
ज्यौ सिताकौं तमारी मंदेन्दू सौमा-
रि मखाः २१ तिर्य्यक् सम व्योम
भू द्वक् सितज्ञौ गुर्विन्दू विनाशेरा
हु मन्दौ २२ मध्यापरसायं प्रात-
र्बलिनो सूर्यारी शुक्रेन्दू मंदाहीने
ज्यौ २३ ज्ञेज्यौ रवीन्दू शेषाः स्व
र्णनागपाः २४ धर्म ग्रहा देवलो
कस्य २५ भौमार्के द्वक्षज्ञेज्या-
र्कि सर्पाश्चतुरस्त्रस्थूलखंड वर्तुल
दीर्घाः २६ ॥

भाषा॰ सब्ज रंग बुधका पीला रंग गुरुका का
ला रंग शनिका नीला रंग राहुकेतु का समझ-
ना चाहिये प्रयोजन प्रश्नति के वस्त्र तथा चो
रके वस्त्र नष्ट वस्तुका रंग नष्ट वस्तुका रंग दे
खना चाहिये १९ शुक्र चंद्रमा जलचारी हैं ।

बुध गुरु ग्राम चारीहैं शेष सूर्य मंगल शनि रा
हु केतु रण चारीहैं प्रयोजन नष्टवस्तु के स्थान-
पर जीवमूलादि प्रश्नपर चलना है २० बुध
गुरु उत्तर मुखहैं शुक्र सूर्य पूर्व मुख राहु मं
गल दक्षण मुख शनि चंद्र पश्चिम मुख प्रयो
जन मुखज्ञान २१ तिरछी नजर शुक्र बुधकी
गुरु चंद्र समदृष्टि सूर्य मंगल की आकाश पर
दृष्टि राहु शनि भूमिपर दृष्टि प्रयोजन जा
नककी दृष्टि और नष्टवस्तुका स्थान देखना
२२ सूर्य भौम मध्यान्ह बली शुक्रचंद्र अपरा
न्ह बली शनि राहु सायंकालमें बली बुध गु
रु प्रातः कालमें बली होते हैं प्रयोजन काल-
ज्ञान में उपयोगी है २३ बुध गुरु स्वर्गलोक
पतिहैं सूर्य चंद्र पुरुष लोक मंगल शुक्र-
शनि राहु केतु पाताल वासीयों केस्वामी हैं ॥
२४ प्रयोजन जन्म लग्न वा प्रश्न लग्न सें नव
म स्थानजो ग्रह हो जिस लोक मे मरण सें प्रा
प्तिहो वा उक्त रीतीसे स्वस्वलोक से आगमन-
अथवा मृत्यु समय लग्नसें भीतलोक प्रामिकहि
ये अगर नवम ग्रह न होतो सर्ता अधिक है
वने बालेके लोक मेकहै अगर कोई देखना-

नशेनो नवम राशिपति के लोकमे प्राप्तिकहै
२५ भौम सूर्य चारकोण वस्तुको देनेहै चं
द्रमा स्थूल शुक्र दूरी वस्तु बुध गुरु गोलव
स्तु शनि राहु दीर्घ वस्तुके पति हैं ॥ प्रयो
जन गई वस्तु तथा मुष्टि मे वस्तु तथा गु
प्त प्रश्न मे धातु आदिका आकार देखना २६

वह्निकस्कंद विष्णु महेंद्र शचीक
पितामहयुता स्तेषां पर्याय चौर
रनाम सर्वं सर्यात् २७ स्थूल
नव दग्धछिन्नमध्य हृतस्फोटं
हृति चौरादि वस्त्रम् २८ ता-
म्र मणि हेम कांस्य रौप्य मुक्ता
लोहानि नष्टादि धातवः २९।
वर्षा शरद्ग्रीष्म हेम शिशिर वसं
त शिशिरा नष्ट जन्मादौ लग्नगा
देग्विपाद्या ३० अस्थि रक्त मज्जा
चर्म मेदो रेतः शिरा साराः ३१।
अयनक्षण वासरर्तु मासाब्द स-
माः ३२ लग्नप तुल्यकालो
लग्नांश सम संख्यकः ३३।

टीका· सब ग्रहों के देवता कहते है (सर्यान)

सूर्यका देवता अग्नी है चंद्रका जल भौम का स्वा
म कार्तिक बुध का विष्णु गुरु का महेंद्र शुक्र
का दुर्गा शनि का ब्रह्मा देवता है राहुका पिशा
च केतुका यमदेवता है इन ग्रहों मे सें जो ब
ली ग्रह हो तिसके देवता के नामके पर्याय वा
चक नामों मे सें चोरका नाम समझना चाहिये
गण (पूर्व) शब्दका आदि अर्थ है इस सें जो
किसी पुरुष को अनिष्ट कारक ग्रह हो तिस ग्रह
के अधिष्ठातृ देवता की उपासना पूजनादि क
रणे सें ग्रह दोष जाता है वा जिसकी ज
न्म कुंडलीमे पंचमेश नवमेश और सर्व ग्रह
नों मे सें बली ग्रहके देवता का इष्ट होता है वा
पंचम स्थित ग्रह सें वा पंचम दृष्ट ग्रह सें वा न
वम स्थित वा नवम दृष्टग्रहसें इनमे सें बली
ग्रह की प्राधान्यता है २७ सूर्यात् यस्पद मू
र्व सूत्र सें विंचना सूर्यके मोटे वस्त्र चंद्रमा के-
सुंदर नवीन वस्त्र भौम के अग्निसें जलेहुये॥
बुध के जलसें भीगे हुये गुरुके मध्यम न न
ये न पुराणे शुक्रके पक्के लट्ठा आदिके श
नि राहु केतु के मलीन फटे हुये प्रयोजन॥
प्रश्नके वस्त्र और चोर आदिके वस्त्र उक्त प्रका

२ कहने चाहिये २८ ॥ अब सूर्यादिकों के धातु कहते हैं सूर्य का तांबा मणि रत्न चंद्रमा का स्वर्ण मंगल का कांसी बुध का चांदि गुरु का मोती शुक्र का लोहा शनि राहु केतु का प्रयोजन ॥ नष्ट जाति मे द्रव्य देषना २९ अब ऋतु कहे हैं सूर्य की वर्षा ऋतु चंद्र की शरद ग्रीष्म भौम- की हेमंत बुध की शिशिर बृहस्पति की बसंत शुक्र की शिशिर शनि राहु केतु की प्रयोजन जन्म मे ऋतु ज्ञान तथा नष्ट पत्री- मे वा नष्ट वस्तु के लिये ॥ ऋतु ज्ञान देखना माघ फाल्गुण मे शिशिर चैत्र वैशाख वसंत ज्येष्ठ आषाढ ग्रीष्म श्रावण भाद्रपद- वर्षा आश्विन कार्तिक शरत् मार्गशिर पौष हेमंत लग्न गत बली ग्रह से ऋतु जानो- अगर लग्न मे कोई ग्रह न हो तो लग्न के द्रे- ष्काण पति कि ऋतु समझो द्रेष्काण १० अंश का होता है यथा १० अंश तक उसी राशि का पति द्रेष्काण पति होता है २० अंश तक पंचम राशि का पति द्रेष्काण पति होता है ३० अंश तक नवम राशि का पति द्रेष्काण पति होता है ३० अब शारीरक सार कहते हैं॥

सूर्य अस्थिसार (अर्थात्) हड्डी मजबूत है चं द्र रक्तसार भौम मिज्जा सार है बुध चर्म सार है गुरु मेदा सार है शुक्र वीर्य सार शनि राहु केतु नाडी सार है॥ प्रयोजन रोग प्रश्न मे रोग ज्ञान चोर का सार ज्ञान होवे है ३१ अब काल कहे हैं सूर्य का आयण मास ६ चंद्र का क्षण १ घटी मंगल का दिन १ बुध का ऋतु २ महीने गुरु का महीना शुक्र का पक्ष १५ दिन शनि का वर्ष एक ३२ लग्न पति के तुल्य काल और लग्न नवांश तुल्य संख्या होति है (प्रयोजन) प्रश्नकाल मे कार्य होने की अवधि ज्ञान सूत्र है॥ जैसे लग्न मेष अंश १२ है नवांश ४ है लग्नपति मंगल का दिन १ नवांश चतुर्थ मे है इस लिये दिन ४ को कार्य होना चाहिये गा ३३॥

ब्राह्मणनृपवैश्य स्त्रीकार विप्रव
णिग्वैश्य निषाद हृषलाः सूर्य-
न् ३४ मुक्ता रजितत्र पुसर्णा
न रौप्य लोहास्थीनि ३५ पूर्वा
द्यु इ यापने नष्टादि दिक ३६
क्रूराक्रान्त हष्ट युमा लारिगो न
मूगर्भा रिपु ३७॥

भाषा॰ सूर्य से क्रम कहा है सूर्य लत्रयाधिपाता चंद्र तपस्वी है मंगल स्वर्णकार है बुध ब्राह्मण गुरु वैश्य इनिकारक शुक्र वैश्य अंत्य जाति शनि भील आदि राहु केतु प्रयोजन आजीविका प्रश्न मे तथा चोर जात्यादि ज्ञान मे उपयोगी हैं॥

२७ सर्व सूत्र में सूर्यात् इसपद की अनुवृत्ति करणी सूर्य के मोती चंद्र का रजित भोमका सिको बुध का स्वर्ण गुरु का रत्न शुक्र की चांदी शनिका लोह राहु केतु की हस्तिदंत आदि हड्डी प्रयोजन इन नष्ट थान प्रश्न विषय मे-

२८ आगे भी बहुत सूत्रों पर सूर्यात् की अनुवृत्ति करणी जहां अनुवृत्ति की समाप्ती होगी वहां हम लिखेंगे पूर्व का स्वामि सूर्य वायुकोणका चंद्रमा मंगल दक्षिणका बुध उत्तर का बृहस्पति ईशानका शुक्र अग्नेय का शनि पश्चिम का राहु केतु नैऋत कोन का पति होवे है प्रयोजन व्यापार कौन दिशा मे हो चोरकी दिशा प्रवृति मंदर की दिशा वाग्दानादि की दिशा के लिये २९ क्रूराक्रांत इति जोग्रह भिन्न २ अंशोंमे होकर क्रूर दृष्ट वायुत नहो उसको क्रूराक्रांत कहते हैं द्रष्टा और द्रश्य एक अंशमे नहोंगेतो

यह योग होगा क्रूराक्रांत जो हो वो नष्ट बल-
होता है जिस ग्रह को क्रूर पूर्ण दृष्टि देखता हो वो
ह क्रूर दृष्ट वो भी नष्ट होता है क्रूर के साथ जो ए
क अंश और एक ही राशि में हो वोह क्रूर युक्त हो
ता है सो भि नष्ट कहिये जो ग्रह सूर्य साथ साला
त ग्रस्त है वो भि नष्ट है बहुत ज्योतिषी बुधग्र
हको अनस्त (सदा उदय) मानते है यह मत ठी
क नही है इस विषय पर संस्कृत कहता हूं ॥

तथा चंद्रा प्राय युतो मूर्तिं वितत
तो दैन्यंच हीनौजस इति क्रूरा
क्रान्त इति क्रूरा क्रांतो यो ग्रहः स
नष्टः अंशाभेद तथा क्रूर दृष्टो यु
तो वासः क्रूरा क्रांत इति पूर्ण दृ
ष्ट्या क्रूरेण दृष्टः सः क्रूर दृष्टः ।
सोपि नष्टः क्रूरेण सहैकांश गतः
क्रूरयुतः सोपि नष्टः यः सूर्येण
स्त गतः सोपि नष्टः केचित् स्वक
पोल कल्पनया बुधस्यास्तगत ।
स्याप्यनस्तं वदंति तद सत् आर्षव
चनस्य प्रमाणं भावत् केचित् ग्रह
र्न मार्तंडस्य प्रमाणं वदंति न

दीपिन सम्यक् प्रमाण मिदम् या-
लौ योधिट युग्म भीरू धनुषां वि
ज्ञास्तभांशौ तथा चंद्रा पुण्ययुतौ
मूर्तिं वितनुतौ दैन्यं च हीनौ जन्म
इति अस्यार्थ टीका कारेण प्रति
पादितस्सचायं श्लोश इति घ
टस्तुला युग्मं मिथुनं भीरूः कं।
न्या धनुः प्रसिद्धं एषामंशोना
वांशाः शस्ताः तत्रापि विशेष माह
विज्ञास्तभांशा विति विगतः ज्ञोबु
धोयेभ्यस्तेविज्ञा तेचते अस्तांश्च
तेषांभांशौ राशि नवांशौ मूर्तिं वि
तनुत इति तथा चंद्रेन पाप ग्र
हेणवायुक्तौ मूर्तिं वितनुतः नि
र्बलस्यभांशौ दैन्यं वितनुत इति
अत्र बुधस्यास्तंगतस्य नदोष
इति प्रति पादितः आर्ष वचन
प्रमाणाभावान्न समीचीनमिति।
अन्य ज्योतिर्निबंधादि ग्रन्थेषु तु
बुधस्यास्त्याप्रव विगतो बुधो वि-
ज्ञः वाक्शेषेण ज्ञो वित्त। अर्घ्य

द्रेकस्य प्रामाण्यमिति संशय निराक
रणे आर्ष वचनस्या वश्यकमिति बुध
अस्त मनस्त वारिति चेत् कथ मङ्गं
नारदेन अस्तं गतस्य सौम्यस्य वार
स्तान्यो ह्निजन्मनीति गुरुः शुभो बु
धो नास्त मितः पाप ग्रह युतोपिवे
ति अत्र मार्तंड नारदादि वाक्या
स्मरणतः पूर्वा पर विरोधः प्रति
भाति अत्रेयं व्यवस्था बुधस्या
स्तभांशो विशेषेण त्याज्यो अर्था
त् मृत्युकारकौ ननु बुधस्या
स्त भांशो निंदितो इतर ग्रहास्तभां
शौ शुभौ भवदीयमते नच विशे
षार्थ बोधने इतर ग्रहाणामप्या
स्तभांशौ त्याज्यावित निष्कर्षार्थः
यदि चेत् बुधंविना अयमर्थः स
मीचीन स्तदा हीनो जसइति।
परं व्यर्थं पुन रुक्ति दोष भया
त् वल हीनस्य भांशो मृति प्रदो
अस्त गतोयो ग्रहः सएव वल।
हीनः यद्यस्त बुधस्य दोषो मा-

ति चेत्तदा कथमुक्तं नारदेन वा
स्तं गतस्य बुधस्य वारो वर्ज्यः
मौंजि कर्माणि शुभस्य वारो न-
निंदितः शुभे अत एव अस्तं ग-
तो बुधोपि नष्टः शेषा ग्रहा यत्र
स्तंगतास्तेपि नष्टाः योग्रहः शत्रु
राशिगः सोपिनष्टः गर्भ विवा
हादि चिंतायां गर्भ प्रश्ने पंचमे
शे नष्टे गर्भनाशः पुत्र प्रश्ने पुत्रा
भावः सप्तमेशे नष्टे स्त्री नाशो
ऽभावो वा दशमेशे नष्टे पितृना
शः एवं प्रश्न जन्म वर्ष मुहू
र्तादिषु यद्भावेशो नष्टस्तद्भाव
हानिरित्याशयः अन्यथा उक्त
प्रकारादन्यथा न नष्टः अर्थात्
बली ग्रहो भवतीति सिद्धांतः॥

भाषा संस्कृत लिखनेपर अत्यंत चित्त प्रसन्न हो
ता है परंतु क्या करें जो चिट्ठी प्राप्त होतिहै उ
समे येही लिखा होता है के भाषा टीका सहित

प्रमदर्शन भेजो लाचार हमको भाषा टीका लि
खना पड़ा संस्कृत लघु भाष्य टीका तैय्यार है
१०० ग्राहक होने पर छपेगी के ज्योतिषी क
ल्पना में बुध अस्तको शुभ मानते हैं-
इहाँ ऋषीका वचन नही मिलता के मुहूर्त
मार्तंड का प्रमाण देते है बुध बिना शेष ग्रह
अस्त होतो राशि अंश त्याज्य है बुध अस्त के
नही बिन शब्द के दो अर्थ हैं बुध बिना बा
ध विशेष त्याज्य है दो अर्थो मे किस अर्थ को
प्रमाण करणा इस लिये ऋषि प्रमाण चाहि-
ये सो नही है इसी पर नारद और गुरु जी
ने यज्ञोपवीत मे अस्त बुध का वार त्याज्य
कहा है बुध अस्त का दोष नहोता तो बुध-
वार यज्ञोपवीत में क्यूं त्याज्य होता हमारा-
वाक्य नारद ऋषि और बृहस्पतिदेव गुरु)का
है इस लिये विशेष है जेकर बुध अस्तको-
निर्दोष मानेतो आगे मुहूर्त मार्तंड वाले नेहीन
बल ग्रहभांश भी त्याज्य है अस्त ग्रहभी पूर्ण-
निर्बल होता है सर्वा पर विरोध हूआ इसलि
ये नारद वाक्य ठीक है अस्त गत बुध सहित
सर्व ग्रह नष्ट होते हैं जो ग्रह शत्रु राशि मेहो

बोइ भी नष्ट होता है गर्भ विवाहादि प्रश्नों मे चिंतन करणा गर्भ प्रश्न मे पंचमेश नष्ट होतो गर्भ नाश होता है पुत्रेश नष्ट होतो पुत्रनाश सप्तमेश नष्ट मे स्त्री नाश हो दशमेश नष्टहोतो पितृ नाश हो इसी प्रकार प्रश्न जन्म वर्ष महूर्त्तादि मे जिस भाव का पति नष्ट हो उस भावका नाश होता है उक्त प्रकार से अन्यथा ग्रह होतो नष्ट नही होता अर्थात् बलवान् होता है ३७ ॥ ❖ ❋ ❋

भौमे ह्विज्या बुधः सित मंद सर्पाः सूर्यस्य ३८ इंदोशेषा राहुस्वदस्य ३९ इंद्विज्येना मंद सितोज्ञ सर्पौ भौमस्य ४० सितेन सर्पा मंदारेज्या स्वन्द्रो बुधस्य ४१ सूर्यारेन्दवः सर्प मंदो सितज्ञौ गुरोः ४२ मंदज्ञ सर्पाभौमेज्यौ शशी शुक्रस्य ४३ सर्प सितज्ञा गुरुःशेषा मंदस्य ४४ मंद सितज्ञा गुरु शेषाराव्हीः ४५ मंदेन्दु सर्पा बुधे

द्यौ शेषाः केतोः ४६ मित्रसम
शत्रवः क्रमात् ४७ रवींदारेज्याः
परस्परं सुहृदः ४८ ज्ञाच्छमंद
भौ वैराहवः ४९ ग्रन्थे ग्रवयः ५०

भाषा. अब मित्र सम शत्रु कहे हैं मंगल बृहस्पति चंद्रमा सूर्य के मित्र हैं बुध सम शुक्र शनि राहु केतु शत्रु ३२ बुध सूर्य मित्र भौम

मित्र सम शत्रवः

सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के	
मं.चं बृ.	बु. सू.	चं.बृ. सू.	सू.शु रा.के	सू.मं चं	श.बु रा.के	रा.के शु.बु	श.के शु.बु	श.चं रा.	मित्र
बु.	मं.बृ. शु.श.	श. शु.	श.मं बृ.	श.रा. के.	मं. बृ.	गुरुः	गुरुः	बु.गु रु.	सम
शु.श. रा.के.	रा. के.	बु.रा. के.	चंद्रमा	शु.बु	सू.चं	सू.चं मं.	सू.चं मं.	सू.मं शु.	शत्रु

मंगल बृहस्पति शुक्र शनि सम ॥ राहु केतु शत्रु चंद्रमा के हैं ३३ चंद्र गुरु सूर्य मित्र हैं शनि शुक्र सम बुध राहु केतु शत्रु भौम के हैं॥ ३४ शुक्र सूर्य राहु केतु मित्र शनि भौम गुरु सम ॥ चंद्रमा शत्रु बुध के हैं ३५ सूर्य भौम चंद्रमा मित्र ॥ राहु केतु शनि सम ॥ शुक्र बुध शत्रु गुरु के ३६ शनि बुध राहु केतु मित्र

भौम गुरु सम शेष सूर्य चंद्र शुक्र शत्रु शु-
क्र के है ३७ राहु केतु शुक्र बुध मित्र गु-
रु सम शेष सूर्य चंद्र मंगल शनिके शत्रु है
३८ राहु केतु मित्र शनि शुक्र बुध केतु हैं गुरु स-
म शेष सूर्य चंद्र मंगल शत्रु हैं ३९ शनि चं-
द्र राहु मित्र है केतु के बुध गुरु सम शेष सूर्य
मंगल शुक्र शत्रु हैं ४० एक एक सूत्रमे तीन
पद हैं ॥ प्रथम पद मित्र द्वितीय सम तृ-
तीय शत्रु क्रम से जानो ४१ काशीनाथ के
मतमे मैत्री सूर्य चंद्र भौम गुरु आपसमे मि-
त्र है ४२ बुध शुक्र शनि राहु केतु आपसमे
मित्र है ४३ दूसरे २ आपसमे शत्रु है जैसे
सूर्य के बुध शुक्र शनि राहु केतु शत्रु है ॥
एवं चंद्रमा के बुध शुक्र शनि राहु केतु शत्रु है
एवं भौम के बुध शुक्र शनि राहु केतु शत्रु है
एवं गुरु के बुध शुक्र शनि राहु केतु शत्रु है

काशीनाथ मतेन मैत्री चक्रम् ॥*

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.	ग्रह
चं.मं. बृ.	सू.म बृ.	सूर्य चं.बृ.	शु.श रा.के	सू.चं मं	बु.श रा.के	बु.शु रा.के	बु.शु श.के	बु.शु श.रा	मित्राणि
बु.शु. श.रा के.	बु.शु श.रा. के.	बु.शु. श.रा के.	सू.चं मं.बृ.	बु.शु श.रा के.	सू.चं मं.बृ	सू.चं मं.बृ	सू.चं मं.बृ	सू.चं मं.बृ.	शत्रवः

इसी प्रकार बुध शुक्र शनि राहु केतु में से प्र-
त्येक ग्रह के शत्रु सूर्य चन्द्र मंगल गुरु है

चंन्द्र. नसिता राहु स्वाः ज्ञोमध्यो
न्ये दीर्घाः ५१ बलीनष्टौरजा
त्यादि हृत नष्ट वस्त्वाकारः ५२
सूर्या रौ सितेन्दू ज्ञेज्यौ शनि स
र्पौ पित्त श्लेष्म सम वाताः ५३॥
भौमार्कौ गुरुर्ज्ञश्चन्द्रः सितो म
न्द सर्पौ कटु मिष्ट नवरला रा-
म्लनीरस रसानाम् ५४ सिते-
न्दू गुरुः सूर्यौ ज्ञो भौमो मंदस
र्पौ जलदेवपाक्षि हृक दग्धवा
त्य स्थानपाः ५५ पभिस्त्रावा
न्नपादिभूमिः ५६ ॥ ॐ

भाषा. अब आकार कहते हैं ॥ चंद्रमा सूर्य शु
क्र मंगल का आकार ह्रस्व (छोटा) है (ज्ञ) बुधका
मध्यम न बड़ा न छोटा शेष ग्रह बृहस्पति श
नि राहु केतु के दीर्घ आकार है ५१ बली ग्रह से
हृत नष्ट वस्तुका आकार वा चौरकी जाति वा
आकार कहिये गा ५२ सूर्य मंगल पित्त प्रकृ
ति है ॥ शुक्र चंद्र कफ प्रकृति बुध गुरु सम

धान शनि राहु केतु वायु प्रकृति है प्रयोजन जानक चौर रोगि का स्वभाव और रोग को जानना अब ग्रहों के रस कहता है॥ मंगल सूर्य कटु (कौड़ा रस) प्रिय हैं गुरु का मीठा रस बुध का कसैला चंद्र का खारा रस शुक्र का खटा रस शनि राहु केतु का तिखा रस होता है (प्रयोजन) प्रश्न कर्ता पूछे मैने क्या रस आज खाया है वा जानक वा चौर कौन रस का प्यारा है प्रसूति ने क्या रस भक्षण कीया था इनका देखना प्रयोजन है अब स्थान विशेष कहता है॥ शुक्र चंद्र जलस्थान के अधिपति हैं गुरु देवता स्थान पति॥ सूर्य चतुष्पाद भूमिपति बुध ईटों के समूह की भूमिपति है मंगल जले हूये स्थान का पति है शनि राहु केतु देश ग्राम के बाहर वा खराब भूमि पति है (प्रयोजन) नष्टवस्तु किस भूमिपर है वा प्रसूति कौन भूमिपर प्रसूत हूई॥ उक्त ग्रह योग दृष्टि चतुर्थ घर मे होने सें नष्ट वस्तु कि भूमि कहे जैसे प्रश्न लग्न सें चतुर्थ घरमे सूर्य हो वा देख ताहो तो पशु स्थान मे नष्ट द्रव्य कहिये॥ इसी प्रकार चंद्रादि ग्रहों का दृष्टि योग होतो चंद्रादि कों की भूमि जाननी

कुज बुधेन्दु शुक्रास्तुव बालमध्यावृद्धा
स्युः ५७ शनिभौमौतमः शुक्रः ज्ञौरजःसात्वि
काः ५८ गुरुसितारज्ञा ऋग्यादिविद्यानां
विज्ञानम् ५९ ज्योतिर्भैषज्यवणिक यवन
पुराणध्यानत्वगांधर्वशिल्पमंत्रविद्यासूत्रभौ
मगुचंद्रराहुकानाम् ६० त्रिकोणतोगेहदृक्कोटेर्क
दिवाक्षितिलिंगोरुजानुजंघांघ्रयोलग्नान्मेषाद्याः
कुमोयुमेन्ययोपूर्वःपूर्वादिदिक्याः ६३ पुंस्त्री
क्रूरसौम्यौचरागद्वयाः ६४ भाषा॰

भौम जवान है बुध बालक है शुक्र चंद्रमा म
ध्यम अवस्था हैं चकारसे शेष ग्रह सूर्य श
नि राहु गुरु केतु वृद्ध है प्रयोजन चौर प्र
कृति आदिका आयुज्ञान ५७ शनि भौम तमो
गुण प्रधान है शुक्र बुध रजोगुणी चकारसे
शेष ग्रह सूर्य चंद्र गुरु सात्विक है राहु के-
तु शनि जैसे है प्रयोजन चौर ज्ञानका
दिका प्रकृति ज्ञान श्लोक-

यस्य त्रिंशांशगे सूर्ये तस्यसत्वाद
योगुणः ५८ जिस ग्रहके त्रिंशांश
मे सूर्य है तिस ग्रहके सत्वादिगुण बालक मे
कहे ५८ गुरु ऋग्वेद शाखा पति है शुक्र यजु

वेद शाखापति है मंगल साम वेद शाखा पति
है व ध अथर्वण वेद शाखा पति है ॥ प्रयोजन॥
विद्या शाखा ज्ञान के लिये है ५५ सूर्य की ज्यो
तिष विद्या वैदक शुक्र की बातियों की विद्या॥
भौम की म्लेछ विद्या फारसी अंगरेजी शनि की
वेद पुराण धर्म शास्त्र इतिहास व्याकरण न्या
य वेदांत सांख्य मीमांसा प्रभृति पांडित्य विद्या
गुरु की अस्त्र शस्त्र धानुष्य विद्या चंद्रमा की
गंधर्व विद्या राहु की शिल्प विद्या लिखना चि-
त्रकारी भोजन आदि यंत्र तेल आदि बनाना॥
यह शिल्प विद्या बुध की है मंत्र यंत्र गंडा तवी
ज टूना मूठ चलाना आदि विद्या केतु की है पंच
म नवम घर में स्थित बली ग्रह वा जिस ग्रह की
दृष्टि इन दो घरों में से एक घर को हो तिस ग्रह की
विद्या बालक पढ़ता है इसमें बली ग्रह देखना
चाहिये ६. मेष शिर २ वृष मुख मिथुन छाति
कर्क हृदय सिंह पेट कन्या कमर तुला बस्ति
नाभि से नीचे वृश्चिक लिंग धन पट्ट मकर जानु
कुंभ जंघा (पिंडियां) मीन चरण) इसि प्रकार
लग्न से १२ भाव लगाना चक्र में स्पष्ट है ६१ जिस
भाव में शुभग्रह हो उस अंग में पुष्टि जिसमें अशु

अशुभहो उसअंशमे हानि ६२ मेषसें पूर्वादि दिशाके स्वामि जानने मेष सिंह धन पूर्व वृष कन्या मकर द क्षिण मिथुन तुला कुंभ पश्चिम वृश्चिक कर्क मीन उत्तरपति हैं प्रयोजन दिशाज्ञाने बालग्नसें दिशा जाने लग्न पूर्व दशम दक्षिण सप्तम पश्चिम चतर्थ उत्तर १२।११ आग्नेय ९।१० नैऋत्य ५।६ वायव्य २।३ ईशान पति हैं ६३ मेष पुरुष वृषस्त्री मिथुन पुरुष कर्क स्त्री इसीप्रकार १२ राशि जानो मेष क्रूर वृष सौम्य इसीप्रकार मेष चर वृष स्थिर मिथुन द्विस्व भाव इसीप्रकार १२ राशियां चक्रमे देखो मिथुन क न्या धन मीनका पूर्वार्द्ध चर परार्द्ध स्थिर होता है प्रयोज न चरस्थिर कार्य देखना ६४ ॥

मेषचारोगोकलादौनृत्यगीतमृमंरे जलेच नेस्त्रीगृहेखेरणे शिल्प जलेभांडे जलस्थमी वि भुविदं पं रक्तश्वेत हरिपाटल पांडु चित्रकृ ष्णपीत पिंगल कर्बुरबभ्रुलक्षाः ६६॥ युग्मेषणा क्रमोहर यः सुता घटी च समन्वि बाः ६७ गोजवदौन्या हूस्वाः ॥ हर्यादिवेदादीर्घाः समास्त्व ६८ दीर्घेपि दीर्घेदे जातस्यांगोदीर्घोन्यथान्यथा ६९

अथ नक्षत्रलक्षणम् ॥ पूर्वे सूत्रसें मेषान इस शब्दकी अ

नहनिकरके मेषसे १२ स्थान राशिके कहते हैं मेष
का बकरे भेड आदि स्थान है वृषका गो महिषघो
डा आदि स्थान (मिथुन) नाचने गाने के और युद्ध
के स्थान मे है कर्क का जल स्थान सिंह का वन॰
स्थान कन्यास्त्रिगृह स्थान है तुलास्व गृहमे वृश्चि
क गामें धन शिल्प जलस्थान मे मकर भांडे के॰
स्थानमे कुंभ जलके पास स्थान मे मीन जमीन मे
प्रयोजन नष्टवस्तु का स्थान देखना ६५ मेष लाल
रंगवाला है. वृष श्वेत मिथुन हरित कर्क पाट
ल श्वेत रक्त मिलाहुआ, सिंह पीला रंग कन्याका
चित्र बहुत रंग तुला का कृष्ण काला रं॰ वृश्चि
क का पीला रंग धन काभि पीला रंग मकर काज
मीनका रंग कुंभका नेवलाका रंग मीन का शुद्ध
श्वेत रंग होवे है प्रयोजन नष्टवस्तु का रंग और
प्रकृति के वस्त्रों का रंग देखना ६६ मिथुन मकर
मेष वृष सिंह यह राशियां सरवा बहुत शब्द करे हैं
कंन्या कुंभ मध्यरव अर्द्ध शब्द वाली हैं चकार से॰
शेष राशि कर्क तुला वृश्चिक धन मीन विरवा शब्द
रहित हैं अर्थात् बोलनहीं सकती प्रयोजन जन्म
काल में बालकका रोना वा न रोना देखना ६७ अब
आकार कहते हैं वृष मेष कुंभ मीन ह्रस्व छोटा आ

कारहैं (सिंहसे चार (सिंह कन्या तुला वृश्चिक) यह)
दीर्घ लंबे हैं चकार से शेष मिथुन कर्क धन मकर म
ध्यम आकार है प्रयोजन नष्ट वस्तुका आकार और-
चोरका कद देखना है ६८ फिर सूत्रकार प्रयोजन क-
हता है दीर्घ पति ग्रह दीर्घ राशियों मे होतो बाल
कका अंग दीर्घ होता है अंग विभाग शिरो मुखोरो
इस सूत्र से समझना मध्य पति मध्य राशियों में हो
तो वोह अंग मध्यम लघु पति ग्रह लघु राशियोंमे
होतो अंग लघु होवे है लघु राशि पति ग्रह दीर्घरा
शि में होतो अंग मध्यम लघु पति मध्य राशियों में
होतो कुछ क लघु अंग हो दीर्घ पति मध्य राशिमे
होतो किंचिद्दीर्घ दीर्घ पति लघु राशि मे होतो म-
ध्यम मध्यम पति दीर्घ राशिमे होतो किंचिद्दीर्घ-
मध्यम पति लघु राशि मे होतो किंचित लघु अंग
कहियेगा ॥ ६९ ॥

१ २ ६ ४ ८ ३
वृगोजकर्कीक युग्मं निशाख्यम् ७०
विधुग्मं पृष्ठोदयाश्च दिनाख्याः ७१ मधु
मम शीर्षोदयो भयोन्यः ७२ गृहप
गृहं समदेहं र्क योन्यथा विषमे ७३
स्वेष्वकपाश्चिके ऽगांशाः आद्विषमे
समेस्तभात ७४ स्वभादिनांशोक्षवा

गाद्धीनोनवांशाः ७५ शरपंचाष्टा
ग वागांशाया कुजमंदेज्यज्ञाच्छा
न्यथासमे ७६ चरादा वादिमध्या
न्यांशा वर्गोत्तमाः ७७॥ ❖

अब दिनरात्रि बली कहते हैं मकर वृष मेष क
र्क धन मिथुन रात्रि संज्ञक हैं७८उक्त राशियां मि-
थुन रहित वृष मेष कर्क धन मकर पृष्ठोदय रा
शियां हैं चकार से शेष रात्रि की राशियों से शेष
(सिंह कन्या तुला वृश्चिक कुंभ मीन) येह दिन
बली हैं७९मिथुन सहित पृष्ठोदय की शेष राशि-
(मिथुन सिंह कन्या तुला वृश्चिक कुंभ) ये शीर्षो
दय हैं मीन उभयोदय है पूर्वार्द्ध शीर्षोदय प
रार्द्ध पृष्ठोदय है केचित आचार्य मीन राशि को
उभय बली भी कहते हैं जैसे पूर्वार्द्ध दिनबली-
परार्द्ध रात्रिबली यह मत ठीक नही है८०राशि
राशि के स्वामि की होती है राशिपति पूर्व लिख
दीये हैं समराशिमे २।४।६।८।१०।१२ प्रथम
१५ अंश चंद्रमा की होरा फिर आगे १५ अंश सू
र्य की होरा होति है विषम राशि १।३।५।७।९।११
मे उलटा प्रथम १५ अंश सूर्य की होरा फिर १५ अं
श चंद्रमा की होरा है चक्र मे स्पष्ट है८१त्रिके द्रेष्का

होराचक्रम् ॥ ✤ ॥

मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी
१५ सू	१५ चं	१५ सू	१५ चं	१५ सू	१५ चं	१५ सू	१५ चं	१५ सू	१५ चं	१५ सू	१५ चं
३० चं	३० सू	३० चं	३० सू	३० चं	३० सू	३० चं	३० सू	३० चं	३० सू	३० चं	३० सू

ण पती स्वराशिका स्वामी १० अंशतक पंचम राशिका स्वामी २० अंशतक नवम राशिका स्वामी तीस ३० अंशतक द्रेष्काण पति होता है सप्तमांश स्वराशि सें जितने समांश बीतगये हों उतनी राशिका स्वामिस

द्रेष्काणचक्रम्

मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी
१० मं	१० शु	१० बु	१० चं	१० सू	१० बु	१० शु	१० मं	१० गु	१० श	१० श	१० गु
२० सू	२० बु	२० शु	२० मं	२० गु	२० श	२० श	२० गु	२० मं	२० शु	२० बु	२० चं
३० गु	३० श	३० श	३० गु	३० मं	३० शु	३० बु	३० चं	३० सू	३० बु	३० शु	३० मं

मांश पति होता है यह विषम राशिका प्रकार है सम राशि मे ग्रह होतो सप्तम राशि सें समांश के हिसाब पति लगाना चक्रमे स्पष्ट है ७४ द्वादशांश॰ अपनी राशिसें ढाई २ अंश २ क ३० होता है ॥ नवांश अंश तीस ३० के ९ हिस्से होते हैं अंश ३ कला २० एक नवांश होता है मेष सिंह धन का नवांश मेष से जानना वृष कन्या मकर का म

16

॥ * अथादिसप्तांशचक्रम्

	मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	अंशःकलाविकलाः
१	मं १	मं ८	बु ३	१० श	५ सू	१२ बृ	७ शु	२ शु	९ बृ	४ चं	११ श	६ बु	४।१७।८
२	शु २	बृ ९	चं ४	११ श	६ बु	१ मं	८ मं	३ बु	१० श	५ सू	१२ बृ	७ शु	८।३४।१७
३	बु ३	१० श	सू ५	१२ बृ	७ शु	२ शु	९ बृ	४ चं	११ श	६ बु	१ मं	८ मं	१२।५१।२५
४	चं ४	११ श	बु ६	१ मं	८ मं	३ बु	१० श	५ सू	१२ बृ	७ शु	२ शु	९ बृ	१७।८।३४
५	सू ५	१२ बृ	शु ७	२ शु	९ बृ	४ चं	११ श	६ बु	१ मं	८ मं	३ बु	१० श	२१।२५।४२
६	६ बु	१ मं	मं ८	३ बु	१० श	५ सू	१२ बृ	७ शु	२ शु	९ बृ	४ चं	११ श	२५।४२।५१
७	७ शु	शु २	९ बृ	४ चं	११ श	६ बु	१ मं	८ मं	३ बु	१० श	५ सू	१२ बृ	३०।०।०

नवांशचक्रम् ॥

	अंश कला	मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध	म	कुं	मी
१	३।२०	१ मं	१० श	७ शु	४ चं	१ मं	१० श	७ शु	४ चं	१ मं	१० श	७ शु	४ चं
२	६।४०	२ शु	११ श	८ मं	५ सू	२ शु	११ श	८ मं	५ सू	२ शु	११ श	८ मं	५ सू
३	१०।००	३ बु	१२ बृ	९ बृ	६ बु	३ बु	१२ बृ	९ बृ	६ बु	३ बु	१२ बृ	९ बृ	६ बु
४	१३।२०	४ चं	१ मं	१० श	७ शु	४ चं	१ मं	१० श	७ शु	४ चं	१ मं	१० श	७ शु
५	१६।४०	५ सू	२ शु	११ श	८ मं	५ सू	२ शु	११ श	८ मं	५ सू	२ शु	११ श	८ मं
६	२०।००	६ बु	३ बु	१२ बृ	९ बृ	६ बु	३ बु	१२ बृ	९ बृ	६ बु	३ बु	१२ बृ	९ बृ
७	२३।२०	७ शु	४ चं	१ मं	१० श	७ शु	४ चं	१ मं	१० श	७ शु	४ चं	१ मं	१० श
८	२६।४०	८ मं	५ सू	२ शु	११ श	८ मं	५ सू	२ शु	११ श	८ मं	५ सू	२ शु	११ श
९	३०।००	९ बृ	६ बु	३ बु	१२ बृ	९ बृ	६ बु	३ बु	१२ बृ	९ बृ	६ बु	३ बु	१२ बृ

कर से गिनना मिथुन तुला कुंभ का तुला से कर्क मीन वृश्चिक का कर्क से गिनना चाहिये ७५ त्रिंशांश पति विषम राशि १।३।५।७।९।११ मे अंश ५ मंगल फिर ५ अंश शनि अंश ८ का पति गुरु फिर ७ अंश पति बुध फिर ५ अंश का शुक्र पती होता है सम राशि २।४।६।८।१०।१२ मे प्रथम ५ अंश शुक्र ७ अंश बुध ८ अंश गुरु ५ अंश शनि फिर ५ अंश मंगल होता है यह त्रिंशांश प्रकार है ॥७६॥ उदाहरणम् सूर्यस्पष्ट ५।१७।२१।४०

द्वादशांश चक्रम्

मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	अंशादि
१ मं	२ शु	३ बु	४ चं	५ सू	६ बु	७ शु	८ मं	९ बृ	१० श	११ श	१२ बृ	२।३०
२ शु	३ बु	४ चं	५ सू	६ बु	७ शु	८ मं	९ बृ	१० श	११ श	१२ बृ	१ मं	५।००
३ बु	४ चं	५ सू	६ बु	७ शु	८ मं	९ बृ	१० श	११ श	१२ बृ	१ मं	२ शु	७।३०
४ चं	५ सू	६ बु	७ शु	८ मं	९ बृ	१० श	११ श	१२ बृ	१ मं	२ शु	३ बु	१०।००
५ सू	६ बु	७ शु	८ मं	९ बृ	१० श	११ श	१२ बृ	१ मं	२ शु	३ बु	४ चं	१२।३०
६ बु	७ शु	८ मं	९ बृ	१० श	११ श	१२ बृ	१ मं	२ शु	३ बु	४ चं	५ सू	१५।००
७ शु	८ मं	९ बृ	१० श	११ श	१२ बृ	१ मं	२ शु	३ बु	४ चं	५ सू	६ बु	१७।००
८ मं	९ बृ	१० श	११ श	१२ बृ	१ मं	२ शु	३ बु	४ चं	५ सू	६ बु	७ शु	२०।००
९ बृ	१० श	११ श	१२ बृ	१ मं	२ शु	३ बु	४ चं	५ सू	६ बु	७ शु	८ मं	२२।३०
१० श	११ श	१२ बृ	१ मं	२ शु	३ बु	४ चं	५ सू	६ बु	७ शु	८ मं	९ बृ	२५।००
११ श	१२ बृ	१ मं	२ शु	३ बु	४ चं	५ सू	६ बु	७ शु	८ मं	९ बृ	१० श	२७।३०
१२ बृ	१ मं	२ शु	३ बु	४ चं	५ सू	६ बु	७ शु	८ मं	९ बृ	१० श	११ श	३०।००

त्रिंशांशचक्रम्

मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध	म	कुं	मी
५ मं मे	५ शु २	५ मं १	५ शु २	५ मं १	५ शु २	५ मं	५ शु	५ मं	५ शु	५ मं	५ शु
५ श कुं	७ बु ६	५ श ११	७ बु ६	५ श ११	७ बु ६	५ श ११	७ बु ६	५ श ११	७ बु ६	५ श ११	७ बु ६
८ गु ध	८ गु १२	८ गु ९	८ गु १२	८ गु ९	८ गु १२	८ गु ९	८ गु १२	८ गु ९	८ गु १२	८ गु ९	८ गु १२
७ बु मि	५ श १०	७ बु ३	५ श १०	७ बु ३	५ श १०	७ बु ३	५ श १०	७ बु ३	५ श १०	७ बु ३	५ श १०
५ शु तु	५ मं ८	५ शु ७	५ मं ८	५ शु ७	५ मं ८	५ शु ७	५ मं ८	५ शु ७	५ मं ८	५ शु ७	५ मं ८

५।१७।२२।४० चंद्र ७।१२।२०।४५ भौम ८।५।१७।२१ बुध ६।०२।२२।१३ बृहस्पति ११।०७।१३।२१ शुक्र ५।१२।२१।३० शनि ७।२८।१३।२७ राहु ५।२२।०७।१३ केतु ११।२२।०७।१३ लग्न १।८२।५७।३२ इन ग्रहों की समवर्गी लगाता हूं स्वगृहे बल सूर्य कन्या का है स्वामि बुध सूर्य

सप्तवर्गीचक्रम्

सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श	ल	
बु ६	मं ८	बृ ९	शु ७	१२ बृ	बु ६	मं ८	२ शु	गृहं
सू ५	सू ५	सू ५	सू ५	चं ४	चं ४	सू ५	सू ५	होरा
१० श	चं ४	बृ ९	शु ७	बृ १२	श १०	चं ४	श १०	द्रेष्का०
चं ४	शु २	श ११	शु ७	शु ७	शु २	मं ८	मं १	सप्तांश
बु ३	श १०	बु ३	शु ७	बु ६	मं १	श ११	४ चं	नवां०
बृ १२	चं ४	बृ १२	शु ७	शु २	श १०	बु ६	श १०	द्वादशां
१२ बृ	१० श	श ११	मं १	बु ६	बृ १२	मं ८	श १०	त्रिंशां०

का गृहपति बुध है सूर्य सम राशि के अंश १७ है होरा

दूसरी सूर्य की होरा भई द्रेष्काण दूसरा कन्या में पंचम मकर का स्वामि शनि द्रेष्काण पति है सूर्य पंचम सप्तांश मे है कन्या के सप्तम मीन में पंचम कर्क का स्वामि चंद्रमा सप्तांश पति है नवांश छठे मे सूर्य है कन्या का नवांश मकर से गिन कर छठा मिथुन का स्वामि बुध नवांशपति है द्वादशांश सप्तम है कन्या से सप्तम मीन स्वामी गुरु द्वादशांश पति है त्रिंशांश सम राशिके १७ अंशमे स्वामि गुरु त्रिंशांश पति है इसी प्रकार सर्व ग्रहों का तथा लग्न का सप्त वर्ग लगाना चाहिये चक्र मे स्पष्ट देखो बहुत पत्रीयों पर कुंडलीयां लगती है उनका अन्य प्रकार का उदाहरण प्रथम लग्नकी कुंडली स्थापन कर यथा स्थान ग्रह लगादेने से स्व गृह बल होता है लग्न जिस राशि की होरा मे हो वोह लग्न लगाना और ग्रह सप्त जिस २ राशि की होरा मे हो वोह लगाना लग्न बुध

स्वगृहकुंडली	होराचक्रम्	सप्तांशचक्रम्
द्रेष्काणचक्रम्	नवांश लग्नम्	द्वादशांशचक्रम्

के अंश २२ हैं समराशि में प्रथम १५ अंश चंद्रमा-
के फिर १५ अंश सूर्य के होरा सूर्य की हुई सूर्यकी
राशि ५ लग्न लगाना ग्रह समभीस्वस्व होरामे स्था
पन कीये चक्रमे देखलो द्रेष्काण तीसरे मे लग्न
है वृषसे नवम मकर लग्न हुआ लग्न छठे सप्तांश
मे है राशि वृष सम है सप्तम वृश्चिक में छठी राशि
मेष सप्तांश लग्नग्रह भि सप्तांश राशियों मे लगाना ल
ग्न सप्तम नवांश मे है वृषका नवांश मकर सें गि-
ना तो कर्क लग्न नवांशे का भया लग्न नवम द्वादशां
श मे है वृष सें नवम मकर द्वादशांश लग्न भया त्रिंशां
श समराशी का उलटा गिनना जैसे
लग्न-२२ अंश है प्रथम ५ अंश शु-
क के फिर ७ अंश बुध के योग १२
फिर ८ अंश गुरु के योग २० फिर ५
शनिके योग २५ शनि के त्रिंशांश मे लग्नभया शनि कि-
दो राशि है मकर और कुंभ कौन लग्न होना चाहिये ल
ग्नसम हो तो राशि सम विषम हो तो विषम लग्न लगाना ल
ग्न समहै इसलिये लग्न मकर भया और ग्रह भी इसी
प्रकार जिस जिस राशिमे लगें उसी उसी मे लगाने चा
हिये ॥ अब वर्गोत्तम नवांश कहते हैं चर
राशियों १।४।७।१० का आद्य नवांश वर्गोत्तम

त्रिंशांश लग्नम्

११ के.
९
शु. १२ बु.
१० चं.
८ श.
१ गु.
७
२
४
६ सू.
३
५

होताहै स्थिरराशियों २।५।८।११ का मध्य पंचमन
वांश वर्गोत्तम होताहै द्विस्वभाव ३।६।९।१२ रा-
शियोंका नवम नवांश वर्गोत्तम होताहै प्रयोजन
वर्गोत्तम नवांश मे सर्व कार्य पूर्ण सिद्ध होते हैं ॥

चापांत्यनक्राद्यमजगोसिंहाश्चतुष्प
दाः ७८ कुंभमृगांत्यकीटाल्यंत्या
जलगाः ७९ नराश्शेषाः ८० कंटक
केंद्रचतुष्टयं लग्नास्तचतुर्थखानाम् ८१
परतः पणफरमापोक्लिमं चतत्परतः
८२ एवं त्याष्टकं त्रिकम् ८३ ॥
शरादिकृतत्रिमानं पूर्वार्द्धे न्यथोत्त
रार्द्धे ८४ दृशक्राहमानं षड्भाना
म् ॥ ८५ ॥ अथ भाषा

धनु राशिका अंत्यभाग अंश १५ सें ३० तक मकर
का आद्यभाग अंश १५ यावत् मेष वृष सिंह चतु
ष्पद राशि है ७८ कुंभ मकर का अंत्य भाग कर्क
वृश्चिक मीन येह जल चारी है ७९ शेष राशियां
मिथुन कन्या तुला पूर्वार्द्ध धन अंश १५ तक पुरु
ष राशिहैं (अर्थात्) द्विपद हैं ८० कंटक वा कें
द्र वा चतुष्टय संज्ञा लग्न सप्तम चतुर्थ दशम इ
न ४ चारों की कंटक वा केंद्र वा चतुष्टय संज्ञा है ८१

परभावों २।५।८।११ की पणफरसंज्ञा आगे के ३।६।९।१२ भावोंकी आपोक्लिमसंज्ञाहै ८२ लग्नसें ६।८।१२ की त्रिक संज्ञा है ८३ पांच सें लेकर ६ अंकों को चार ४ अंकसें गुणों मेषादि राशियों कामान होता है जैसे २०।२४।२८।३२।३६।४० तुलासें उलटा गिणेंगे तो उत्तराई तुलादि ६ राशियों का मान होताहै चक्रमें स्पष्टहै ८४ उक्त अंकको दश

राशियोंकामानचक्रम्												
मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	
२०	२४	२८	३२	३६	४०	४०	३६	३२	२८	२४	२०	मानम्
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

गुणा करेंतो ६ राशिका पूर्णमान होता है उलटा करें तो अग्रिम ६ राशिका पूर्णमान होताहै प्रयोजन राशि लघुदीर्घ देखना वा कापिच्छदेपाके श्लोकसे समझियेगा ८५

लवतत्त्वाम्याशाव्योम ८६ लयो हि द्वादशांशे शिवो शिकौ ८७ तनुतर्याम्त्रवसतद्विजायम्बं ९ शंसंवान्यत्ततः स्वाद्येदंवेदाधि भू १४४ प्रमाम ८८ ॥

भाषा जिस राशिका जो नाम है उसकी दिशाके पार्श्व

सें (सवन्व) निम्नत्व) नीवाँ होवे है दिशास्वामी सर्व कहे है जैसे वृहज्जातक मे लिखेहैं प्रागाद्या रविशुक्र लोहितनमः सौरेंदु वित्सूरयः अर्थ पूर्व का सूर्य आग्नीका शुक्र दक्षिण का मंगल नैर्ऋत का राहु पश्चिम का शनि वायु कोणका चंद्रमा उत्तर का बुध ईशान का गुरु स्वामि है सर्व सूत्र सवादउ ई आपने नक्षादि दिक् सूत्र अ० १ पा० १ सू २५ अर्थ पूर्वतुल्य ही है जैसे मेषका स्वामि मंगल स्वामी दक्षिण दिशाका है मेष दक्षिणके पार्श्वसे सवन्व है एवं सर्व राशी स्वामि के अनुसार चक्र मे देखो ८६ जिस

मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	रा०
दक्षिणे	आग्नि	उत्तरे	वायव्ये	पूर्वदिशि	उत्तरे	आग्नेय	दक्षिणे	ईशाने	पश्चिमे	पश्चिमे	ईशाने	सवनम

स्थानमे सूर्य हो उस राशि से द्वितीय भाव की वेशिसंज्ञा और द्वादश भाव की वोषी संज्ञा होतिहै ८७ अब एकही क्षणमे वहुत प्रश्न करता पूछें तो किस लग्न सें देखना सो कहते है तन्विति प्रथम प्रश्न कर्ता को लग्न सें प्रश्न कहे दूसरा प्रश्न चतुर्थ को लग्न कल्पना कर कहे तीसरा सप्तमभावसें चौथा दशमसें पांचवा पंचम भावसें छठा प्रश्न अष्टम भावसें सप्तम प्रश्न ग्यारवें भावसें अष्टम प्रश्न दूसरे भावसें नवम प्रश्न तीसरे भावसें दशम प्रश्न छठे भावसें ग्यारवां प्र

अनवम भावमें १२ प्रश्न बारवें भावमें कहे आगे दूसरे भावमें क्रम पूर्वक कहना जावे चक्रमें स्पष्ट देखलो॥

प्रश्न लग्न चक्रम् ॥ १० ॥

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	संख्या
१	४	७	१०	५	८	११	२	३	६	९	१२	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	भाव·
२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	संख्या
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	४	५	६	७	८	९	१०	११	११	१	२	३	भाव·
४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	संख्या
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	भाव·
७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	संख्या
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	भाव·
९७	९८	९९	१००	१०१	१०२	१०३	१०४	१०५	१०६	१०७	१०८	१०९	११०	१११	११२	११३	११४	११५	११६	११७	११८	११९	१२०	संख्या
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	१०	११	१२	१२	[illegible]	३	४	५	६	७	८	९	भाव·
१२१	१२२	१२३	१२४	१२५	१२६	१२७	१२८	१२९	१३०	१३१	१३२	१३३	१३४	१३५	१३६	१३७	१३८	१३९	१४०	१४१	१४२	१४३	१४४	संख्या
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	भाव·

आरोग्यपूजागुणमानहूतायु
र्वयोज्ञातिजदोषसुखस्वैशाक
ति लक्षणवर्णमातामहपिता
मही रत्नादिलेनात् ८९ मणि
मुक्ताधातुवस्त्रांबरसुगिंहया
दितामादिधान्यक्रयविक्रयादिः
त्वात् ९० भ्रातृजनेत्रसुहृद्-
लाभभृत्यदासमठभातृकनि
ष्ठपालकज्येष्ठमातृपितृव्या
मातृमातुलवृद्धप्रपितामही मि
त्रादि विक्रमात् ९१ गृहनिधा
नप्रवेशौषधिबलक्षेत्रमित्रव्रत
स्त्रीपरपुंयोगगमागमयानस्वावस्था
नलाभच्युतिप्रवेशावृद्धि बंधुमि
त्रप्रमातामही प्रपितामहस्नरस्मात्
देशादिकार्यं सुखात् ९२ भाषा॥ अब लग्ना
दि १२ भावों में प्रश्न देखने की रीति किसीके वा अपने
शरीर मे आरोग्य है वा नही (कोई पुरुष किसी से मि-
लने गया है उसकी पूजा होगी वा नही वा अमुक पुरुष
किसी देवता की पूजा करता है वा नही हमारी भेट पू
जा अमुक सेठ करैगा वा नही एवं मान प्रतिष्ठा होगी

वा नही लोगों से अमुक इत्तेला सुनाहै ठीकहै वा नही हमारी बाउआदिकोंकी उमर है वा नही आज तक कितने वर्ष कि उमर मे होगा अमुककी वा चोर आदि की क्या जातिहै अमुक मे कोई दोष है वा नही हमको शरीर का सुख होगा वा नही हमारा क्लेश मिटेगा वा नही चोरकी वा अन्य मित्रादिकों की क्या आकृतिहै॥ क्या लक्षण है क्रूर वा सौम्य क्या वर्ण है ब्राह्मण वा क्षत्रय वा वैश्य शूद्र म्लेछ अंत्यजादि हमारा नाना वा जो बालक अमुक दिनमे जन्मा है उसका नाना (माताका पिता) जीवेगा वा नही वा दादी (पिताकी माता) जीवेगी वानही हमारे बहुत दुशमन है हमारी स्त्री सेवेगी वा नही इत्यादि प्रश्न वा जन्म पत्र मे ऐसा हाल देखना हो तो लग्नसें देखे अब देखने का प्रकार षट्पंचाशकायाम

योयोभावः स्वामिदृष्टोयुतो वा सौम्यैर्वास्यात्तस्य तस्यास्ति वृद्धिः पापैरेवं तस्य भावस्य हानिर्निर्देष्टव्यः पृच्छतोजन्मतोवा इति जिसभावकास्वामी अपने भावको देखता हो उस भाव की वृद्धि होगी स्वामि सौम्य हो वा क्रूर हो स्वामिमात्र के देखने से वृद्धि होगी जैसे मेष राशि का लग्न है स्वामि मंगल लग्नसें छठे घर का रणमें बैठा है लग्नकी तर्फ देखरहा है तो लग्न में जो देखने योग्य बात कही है उनकी वृद्धि होगी वा स्वामी भाव

का भावमें बैठा होगा तो भि भावकी वृद्धिको देगा वा शुभ ग्रह (शुक्र गुरु पूर्ण चंद्र शुभ सह वासी वा केवल बुध) जिस भा व को देखने हो वा युत हों उस भावकी वृद्धि होति है अगर लग्न शुभ वा स्वामि दृष्ट युत हो तो शरीरादिकों का सुख धन घर इसी प्रकार होतो धनादिकोंकी प्राप्ति वा भ्रातृ भाव ऐसे होतो भ्राता आदिकोंका सुख सुखभाव इसी प्रकार हो तो माता आदिका सुख निरोगता पंचम भाव शुभ स्वामी दृ ष्ट युत होतो पुत्रादिकोंका सुख लाभ आरोग्यता षष्ठेशा- इसी प्रकार शुभ स्वामी दृष्ट युत होतो रोग वृद्धि विचार वि पदा भाव ६।८।१२ उलटा समझना शुभ ग्रह दृष्ट योगसें शुभ अशुभ ग्रह दृष्ट योगसें शुभ समझ शुभ स्वामि दृ ष्ट युत होतो स्त्री आदिकोंका लाभ सुख कुशल अष्टम भावको शुभ स्वामि दृष्ट युत होतो मृत्युनाश (अर्थात्) आयु कि वृद्धि होति है यह भी उलटा है नवम भाव- शुभ स्वामि दृष्ट युत होतो धर्म भाग्य आदि कों की प्रा प्ति सुख आरोग्यता दशम गृह को शुभ स्वामि देखने हो तो व्यापार राज्यकर्म पितृ आदिसें सुख लाभ आ रोग्यता एकादश भाव शुभ स्वामि दृष्ट युत होतो लाभा दिकोंका सुख प्राप्ति आरोग्यता द्वादश भाव स्वामि- शुभ गृह दृष्ट युत होतो (व्यय) खरच आदि अधिक शुभ पासे मे होंगे उक्त प्रकार से पापी (अर्थात्) क्रूरग्र ह शनि मंगल सूर्य क्षीण चंद्र राहु केतु क्रूर युतबुध

येह जिस भाव को विना स्वामित्व) उनके

स्वामि न होवें (देखते हो वा युक्त हो उस भाव का नष्ट होता है जैसे उक्त प्रकार क्रूर ग्रह देखने हों वा युत हो तो शरीर आयु आदिका नष्ट होता है इसी प्रकार धनादि भावों का समझना चाहिये और कहते हैं ॥

होराप्रकाशे भावाधिपः प्रनष्टश्चेद्भावना
शस्तदा वदेत् सबलेनतु संविद्धस्त्रिके-
चेद्भावनाशदः ॥ १ ॥

जिस भाव का-स्वामि नष्ट हो उस भावका नाश होता है नष्ट प्रकार पूर्व ३७ वें पत्र मे देख लो जिस भावका पति होच त्रिकोण मित्र स्वनवांश स्वद्वादशांश स्वत्रिंशांश स्वगृह स्वदृक्काण-मे हो अथवा शुभ ग्रह वली के साथ हो उस भाव की वृद्धि होति है जिस भावका पति लग्न में ६।८।१२ भाव मे हो उस भाव का नाश होता है उक्त योगों मे वली शुक्र गुरु की पूर्ण दृष्टि भाव को वा भाव पति को हो तो पूर्व नष्टादि योग होने पर भी भाव की वृद्धि होति है ॥

तत्र विशेष उक्तं गर्गेण नीचस्थो रिपुगेहस्थो ग्रहो भाव विनाशकृत् उदासीनो ग्रहो मध्यो मित्र वर्ग त्रिकोणगः स्वोच्चस्थः स्वगृहे ष्येवं भाव वृद्धिकरः स्मृतः १

उशना चार्यः सौम्याः पुष्टिं पापा विपर्यय संस्थिता-ग्रहाः कुर्युः मूर्त्यादिषु निधनांत्यरिपु भावे व्यक्त मा

त्फलदा ७२ अन्यञ्च सौम्य वर्गाधिता भावाःशुभ नां प्राप्नुवंतिहि पाप वर्गाधिकानेष्टा लग्नाद्याः नात्र संशयः ३ लग्न लग्नाधिपौस्यातां वलाधिकतरौ यदि तत्फलानां प्रवृत्तिः स्याद्धीनोहानिकरः स्मृतः ४ एवं भावेषु सर्वेषु भावभावे शयोर्बलात् ततोऽन्यद्वि वक्तव्यं हानिर्वृद्धिस्वकोविदैरिति ५ सर्वार्थ चिंतामणौ लग्नादिभावाद्रिपुरंध्ररिःफे पापग्रहा तद्भवनादिनाशः सौम्यास्तुतेशुभ फलप्रदाः स्युलग्नादिकानां फल मेव माहुः ६ यद्भावनाथोरिपुरंध्ररिःफे दुःस्थानपो यद्भवनस्थितोवा तद्भावनाशंकथयंतितज्ज्ञाः शुभेक्षिते तद्भवनस्यसौख्यम् ७ तत्तद्भावेत्रिकोणेवस्वसदनगेवास्यदे सौम्ययुक्ते पापानां दृष्टिहीने भवनप सहितेपापवेशैरयुक्ते भावानां पुष्टिमाहुस्त्वयच शुभकरोप्यन्यथात्वे प्रणाशं मिश्रं मिश्रैर्ग्रहेंद्रैः सकलमपितथा सूर्निभावादिकानाम् ८ एषां श्लोकानामर्थः गर्गाचार्य कामतें ॥

जिस भावका पति नीच शत्रु राशि मे हो तिस भावका नाश करे है जो ग्रह समराशि मे हो वो मध्यम होता है जिस भाव का स्वामि मित्र राशि मे मित्र द्रेष्काण मित्र द्वादशांश मित्र सप्तांश मित्र नवांश-

मित्र राशांश मे हो वा मूल त्रिकोण मे हो वा उच्चमेहो वा स्वराशिमे हो तिस भावकी वृद्धिहोवे है १ उत्तरा चार्यमत शुभ ग्रह भावकी पुष्टि पापी ग्रह नाशकर ते हैं अष्टम द्वादश षष्ट भावका उलटा फल कहा है २ और कहै शुभ ग्रह के षड वर्ग मे जो भावहो वा शुभग्रहों का अधिक वर्ग हो वोही भाव शुभ फलको देता है क्रूर ग्रहों का अधिक वर्ग होतो अशुभ फल देता है ३ लग्न और लग्नेश अधिक बली होतो त नु भाव का फल शरीर पुष्टादि अधिक होतेहै॥ दोनो हीन बल होतो नाश होता है दोनो मेंसे एक बली एक निर्बल होतो मध्यम कहिये ४ एवं इसी प्रकार सर्व भाव और भाव पतिका अधिकबल हो तो पुष्टि । हीन मे नाश मध्यमे मध्यम फल होताहै जन्म प्रश्न वर्ष गोचर मे हानि वृद्धि विद्वानो ने क हा है ५ सर्वार्थ चिंतामणि कारक मत जिस लग्ना दि भावों सें ६।८।१२ पापीग्रह हों तिस भावका नाश होवे है यदि सौम्य ग्रह होतो सर्व फल होता है यह तन्वादिकीका फल आचार्य कहते हैं जि स भावका पति ६।८।१२ लग्नसें हो तिस भावकाना श विद्वान कहते हैं वा ६।८।१२ का स्वामि जिसभा व मे हो तिसकामि नाश होता है शुभग्रह शुकतन

उक्त योगमे पूर्ण देखता हो तो भावकी वृद्धि होति है ७
जिस भावके १।५।४।७।१० सौम्य (शुक्र गुरु बुध पूर्ण
चंद्र) हों पापी ग्रहों की (सूर्य मंगल शनि क्षीण
चंद्र) दृष्टि भावको वा उक्त सौम्य ग्रहों की न हो तव भा
व की पूर्ण वृद्धि होति है उलटा योग होतो भाव
का नाश होता है मिश्र योग होतो मिश्र फल हो
ता है इसी प्रकार १२ भावों का फल देख जान
ना ८ जैसे लग्न को स्वामि देखता हो वा युत हो
वा शुभ ग्रह का दृष्टि योग आदि सर्वक स्थित शुभ
योग होतो शरीर आरोग्य रहता है रजा गुण मान
अधिक होता है आयुदीर्घ हो उत्तम जाति देष
का अभाव है क्लेश नाश आकृति लक्षण सौम्य
वर्ण गौर रता उत्तम होति है अगर उक्त योग लग्न
मे क्रूर होतो उक्त आरोग्यादि कों को उलटा समझ
ना चाहिये इसी प्रकार सर्व भावोंको देखना अल
मति प्रसंगेन विशेषस्तु मदीयर चित जातक दर्शन
ग्रंथे द्रष्टव्य मिति ८९ मणियां (पन्ना पुखराज नी
लम मानक लसनिया वैडूर्य) मोती धातु (रजित
तांब सिका कली जिस्त मृतिका गेरु आदि) ही
रा वस्त्र शपी हस्ती घोड़ा आदि चारपाया तां-
बा आदि इन द्रव्योंका लाभ वा इनके व्यापारके

य विक्रयादिसें लाभ वा इन द्रव्योंकी परीक्षा वा इ
न द्रव्योंकी दुकान (विक्रयार्थ) निकालनी उक्त द्र
व्योंकी खान प्राप्ति यह सर्व दूसरे घरसें देखिये ९.
(क्रूर) पराक्रम भाई खेति वृद्धि (अन्नादिकि) लाभ
(अन्नादिसें) नौकर चाकरी सेवक धर्मशाला माता
का चाचा वा चाचा. माता का मामा नैंकर दादी छो
टा भाई बड़ा साला (स्त्री भ्राता) इनसे फाइदा वा ला
भ वा सुख तृतीय घरसें देखो ९१ घर दुकानपाठ
शाला किला कोट सराय आदि मे प्रवेश दवाई अ
न्न समूह वा खाना (जमीनका धन गुप्त) मित्र सुख
भ्रम परस्त्री संयोग। स्त्री विषये पर पुरुष संयोग (ग
म) पात्राका सुख (आगम) आवने मे सुख) घोडेआ
दि जानवरका सुख स्थानमें च्युति (अधिकारहानि)
वा उक्त वस्तु से लाभ शहिर नगर गुफा तीर्थ आदि
मे प्रवेश वृद्धि (सुख आदिकि) माता देश विशेष
का सुख लाभ कृपाराना पडनानी परदादा सोरा
(स्त्रीपिता) इत्यादिको का सुख वा इनका शरीर
रोग्य वा कष्ट वा इनसें लाभ चतुर्थ घरसें देखना
९२॥ प्रयोगविनयज्ञान विद्यावृद्धिमं
त्रसंतानगर्भवाग्दानं पंचमात् ९३
रोगस्फोटगवोत्‌दासोग्रकर्मपरम्·

त्रुशंकाभय युद्धारिभीमातुल लु
लायायुरिप्रत: ५४ वल्लकयस्था
नवणिक्सवादकामजयदासकल
त्रपौर्यनिह्नन्निगमागमपितामहह्
हृप्रमातामहमातामही ज्येष्ठपितृ॰
व्यस्तीत: ५५ ॥ भाषा॥ पाठप्रयोग ग्र

नुष्ठान जप होम का करण और उससें फाइदा नफ्वना प
र प्रश्नका ज्ञान होना वा नहोना विद्या प्राप्ति वा विद्या पू
र्ण वा अपूर्ण और कौन कौन विद्या यह जानक पढ़ेगा-
बुद्धितीक्षण वा स्थूल मंत्र यंत्र तंत्र से नफा होगा वा नहीं
वा अमुक देवताके मंत्र जपनेसें सिद्धि होगी वानहीं किन
ने लड़के वा लड़कीयां होंगी वा यह जन्मा लड़का शाव
ेगा वा नहीं अमुकस्त्री को गर्भ है रहेगा वा नहीं वा इस
गर्भ सें लड़का वा लड़की पैदा होगी इस बालक की सगा
ई(कुड़माई) होगी वानहीं यह सर्ववार्ता पंचम घरसें दे
खना ५६ अमुक पुरुष कोरोगहै कबजावेगा वा नहीं
जावेगा और क्या रोगहै फोड़ा फिनसी गौ बैल नैकर सें फा
इदा उग्र कर्म मारण मोहन उच्चाटन विद्वेषण वशीकरण
मूठचलाना मुकद्दमा शत्रूका हालदेखना अमुक पुरुष॰
काशी गयाहै वोह मरगया वा जिंदाहै हमारा भयदूरहोगा
वानहीं शत्रूसें लड़ाई में जीतूंगा वा नहीं हम दोनो आपस
में कुशली करेंगे कौन नीचे गिरेगा शत्रुभयसें कब बचेंगे॥
वोह बालक मामेको कैसा फलदेगा वा इस बालकका मामा
बिमार है कब राजीहोगा वा हमारामामेसें लड़ नीयां है वानहीं
भैंस वा भैंसा लीयाहै नफादेगा वानहीं इत्यादिसभछठेघरसे

नेचाहिये विद्वन आपने पृष्ठ लिखाहै के मामेकाचर छ
टा ६ है जो कुलमामेका हाल देखनाहो छठेघरसें देख
ना हमसम्झतेहैं जिस पुरुषके ५ वा ६ वा ७ वा ८ वा
वा १० मामे (माताके भाई) होंगे उन सबों का छठे घ
रसेंही देखना अथवा एक लरका पैदा हुआ है उसके
छठेघर मंगल है और छठे घरका स्वामी पूर्ण अस्तहै।
तो कुलमामे मरजांयेंगे कदापिनहीं है अगर ज्यो।
तिष की रीति सें देखाजावे तो १० भाई एकहीसमे मे क
भी नहीं मर सकते क्युं के उन दशभाईयो के जन्म ग्रह
दशा मारक एकही कभी नहीं होसकते एकही सम
ये मे व्रजयोग १० भाईयोंको कभीलग नहींसकता॥
उत्तर महाशय ज्योतिष का ध्रुवाठीक है जैसे किसीपु
रुषके ५ लड़के हैं लटका एक मरगया है उसमे हा
म विचार कर देखेंगे तो प्रथम जो मरगया है उसकी
जन्म कुंडली में कोई क्रूर ग्रह मारकेवाला पड़ा है जि
ससें वोह मरगया दूसरा लटका के पिता की जन्मव
र्ष कुंडलीमेलरके के मरनेका योग दशा अंतरदशा तु
ल्य समेपर मालूम होगे तीसरा उस लरके के भा
ईयोंकी जन्म वर्ष कुंडली दशा अंतर दशा द्वारा एक
ही समयपर भाई का मरण योग होगा फिर चौथा उ
सी लरके की स्त्री की कुंडली में भी उसी समय पतीके
मारक योग अवश्य हीहोता है और भी दादा चाचा
आदि सर्व संबंधियोंको अपने अपने जन्म लग्नमे सें मा
रक योग पोत्तरा भ्रात आदि कोंको पडा होगा तो मार
क योग होगा ज्योतिष का ध्रुवा केसा सच्चा है एक
पुरुष के जन्म होने पर कुलसंबंधियोंके लग्न द्वारा अ

पने २ स्थानपर मारक योग उसी मरण वोरको होगा॥
ज्योतिषी पूर्ण पंडित हो   अब प्रश्नका उत्तर देते हैं।
जातक जन्म लग्न में वा प्रश्न लग्नमें छठा ६ घर
ज्येष्ठ मातुल काहै फिर छठे से ३ घर अर्थात् ८ मे
दूसरा मातुल फिर १० घर में तीसरा छोटा मातुल इ
सी प्रकार आगेभी देखते जाना   इसी प्रकार संतान पं
चम घरमें ज्येष्ठ पुत्र फिर पंचम में ३ घर अर्थात्
सप्तम में तत् कनिष्ठ पुत्रका देखना सप्तम में ३ घ
र अर्थात् ९ घरमें तीसरे लड़के का हाल देखना
इसी प्रकार सर्व संबंधियोंका हाल विदित होसकता
है   इसी प्रकार जिस भावका मालिक अस्त हो वो
नाश होता है   जैसे प्रथम मामे का घर छठे का
मालक अस्त हो तो ज्येष्ठ मातुल का नाश हो अ
ष्टम घर का स्वामी अस्त हो तो दूसरा मामा मृत हो
१० घरका पति अस्त हो तो तीसरा मामा मृत हो
ता है   इसी प्रकार सर्व को समझना ९४ ॥ वस्त्र
(कपड़े) का कर्म व्यापार (खरीद बिक्री खरीदना
किसी द्रव्यका) स्थानका सुख प्राप्ति फायदा (उधा
रो का काम करणा वा कराणा (स्वल्प वाणिज (हि
जार छोटा (१०००) के अंदर) झगड़ा में फायदा (का
म विषय) जीतना (दास से प्रीति (स्त्रीका सुख दुःख
स्त्रीका सौम्य क्रूर स्वभा (वर्ण स्त्रीका) चिन्ह जाती
आदि (पुरुषार्थ (बल) विदेश में स्वगृह को चल
ना लघु यात्रा यात्रा में गृह का आवना बाबा (ना
के का बाबा) नानी (नाना) इन का सुख वा हाल
देखना सप्तम घर में समझना चाहिये ॥ ९५

आयुर्विरोध निधन दुःखं स्व
स्वैषम्य दुर्गादि कलत्र शत्रुन
आदिको न्नरणं नष्टछिद्ररणा ।
भानरं निधनान् ५६ स्वाध्या
य दीक्षा सुरगेह यात्रा मठकान्य
गुरु कार्याभिषेक जलाशय देव
र भक्ती पुण्य भाग्य ज्येष्ठभ्रात
कनिष्ठश्यालमातृ ज्येष्ठपित्र
पत्नीर्थ्य पुण्यात् ५७ आकाश
सनजन पत्तनस्थान पितृ कर्म
यात्रा सख्यमान पुण्य कर्म नृपसु
ताकृषिव्यापार प्रपितामही प्रमा
नामह स्वभ्रुखान् ५८

भाषाटीका

आयु (उमरका निश्चय) विरोध का होना (मरणादुः
खनि वृत्ति वा रोग परीक्षा (वस्त्रप्राप्ति वा वस्त्रसें धन
प्राप्ति) विषमता का वर्तना (किला कोटका जीतना स्त्री
का मरणा वा स्त्रीका द्रव्य मिलना शत्रुका नाश वा
शत्रुके भाई वा उद्यमका नष्ट होना नदी समुद्र सें पा
र होना वा संसार समुद्र सें पार होकर वैकुंठमे जा
ना वा मरकर कौन स्थान जाना (नष्ट वस्तु चोर के पा
स है वा नही वस्तु आदिको (छिद्र (छेक (वा पुरु
ष छिद्री वा छिद्रान्वेषी है वा नही (रणमे) जाना सु
भहै वा नही भाईको रोग वा कष्ट है वा नही वा भाई ह

माया सज्जन है वा इच्छामन यह अष्टम घरसें देखना ९६ विद्याका अध्ययन होगा वा नही दीक्षा (मंत्रदीक्षा वा यज्ञदीक्षा (देव दर्शन वा देवयात्रा धर्मशाला का बनाना वा कार करणा गुरुवोंका कार्य वा सेवा वा प्रीती) राजतिलक गादी नवीन होना तालाव कूव वावली का बनाना (स्त्रीकी कुंडली में देवरका हाल) भैनउपय भाग्य बडाभाई छोटा सालाका हाल (मामाका भाया) तीर्थ यात्रा नवमसें ९७ आकाशकी खबर पुरुष समूह पत्तन स्थान सें लाभ पिताका (कर्मकरण) राजासें लाभ वा राजकार्य (राजमुद्रा वर्षा (व्यापारका) हादी (वडनाना) सास) यह दशमघरसें देखना ९८ ॥ ॥ ॥ कार्यसिद्धि क्रयवृद्धि गजाश्ववस्त्रभूषण यानशय्यादि धार्यनष्टकन्यासुवर्ण लाभ तत्र हृस्वसुरादिके लाभात ९९ त्या गभोगविवाहदान कृषिव्ययमातल सौख्ययुद्ध हानि पराजय पितृव्या दीनादिके व्ययात् १०० इति श्रीपद्देशांतर्गत पंडितज्ञातीय पं० यात्मारामज्ञ वालमुकुंदशर्मणा कृतप्रश्नदर्शन प्रथमाध्याये प्रथमः पादःसमाप्तः ॥ १ ॥ अथषड्ङ्गनाम (पंडितः पाठकोऽडोगड्रोझेंत्वक मिप्याशुकडारव्यसप्तषड्ड यो: क

अथपादिकलोक्तवाः १ शुभम् ॥ ॐ

टीका॰ कार्यकी सिद्धि खरीद बिक्रीमे लाभ बुद्धिका लाभ हाथि घोडा वस्त्र भूषण असवारी मंजा आदि द्वारा लाभ वा प्राप्ति (अर्थसिद्धी) वा विद्या सें द्रव्य (नष्टवस्तु का लाभ कन्याका लाभ स्वर्ण लाभ) रोग (खेहरादि) कोसें लाभ (अर्थात् अन्यलाभ) बारवें घरसें देखना त्या वा भोग विवाह मे द्रव्य व्यय दान (खेतीसें) खरच मामले सें सव युद्ध मे युद्ध ताई हानि हार चाचा का हाल बारवें घरसें देखना इतिश्री प्रश्नदर्शनस्य सरवबोधनी टीकायां प्रथमाध्याय प्रथमःपादः समाप्तः

पश्यति लग्नपोंऽगं कार्यं कार्यपः
कार्यं तनुं वा कार्यपं तनुपं वेन्दुः
स्यात्सर्वं कार्यम् १ तनुपसौम्य
कार्यपयोगाभावे पादार्धत्रिपाद
म् २ द्विगुण प्रश्न वर्गेडुगणित
शेषैरेकद्वित्रिभिर्विधान मूलम् ३
ऊर्ध्वे समाधो ह्रस्वा वा ४ ॥ ॐ

टी॰ अथ सर्व कार्यसिद्धियोगाः लग्नपति लग्नको देखताहो कार्यपति कार्यको देखता हो (कार्यपति क्या है) जैसे किसीने पूछा मेरे घरमे संतान कब होगी तो कार्य क्या है संतानका होना सो पंचम घरसें

देखना पंचमका पतिकार्य पति होता है वा लग्नपति कार्य भावको देखे कार्य पति लग्न को देखता हो वा लग्न पति कार्य पतिको देखे कार्य पति लग्नको देखता हो वा लग्न पति कार्य पति को देखे कार्य पति लग्न पति को देखता हो उक्त योगों को चंद्रमा की पूर्ण दृष्टि हो तो पूर्ण कार्य सिद्ध होता है १ उक्त योगों में लग्न पति का अभाव हो यथा लग्न पति लग्न को न देखता हो कार्य पति कार्यको देखता होवै वा कार्य पति लग्न को देखता हो वा कार्य पति लग्न पति को देखता हो चंद्रमा की दृष्टि (कार्य पतिको वा कार्य को वा लग्न को वा लग्नपति को) हो तो पाद योग चतुर्थांश कार्य सिद्ध होता है १ सौम्य (चंद्र दृष्टिका अभावहो) यथा लग्न पति लग्न को कार्य पति कार्य को देखता हो चंद्र दृष्टि दोनो पर न हो वा लग्न पति कार्य को कार्य पति लग्न को वा लग्न पति कार्य पति को कार्य पति लग्न पति को देखता हो चंद्रमा न देखता हो तो अर्धयोग होता है (कार्य पतिका अभाव) लग्न पति लग्नको वा कार्य को वा कार्य पति को देखता हो चंद्रमा की दृष्टि हो कार्य पति न देखता हो तो त्रिपाद तृतीयांश योग होता है २ प्रश्न के अक्षरोंकी संख्या को दो गुणा करके एक और मिलाकर तीन ३ का भाग देने से एक बचे तो जीव दो २ बचे तो धातु शून्य बचे तो मूल प्रश्न कहे उदाहरण (पंडित साहिब देखो हमारा प्रश्न) संख्या वर्ण १५ जितने अक्षर मिले हों उनको अलग समझना (प्रश्न) (१ पद छन) ५ पूर्व अक्षर ११ कुल १५ द्विगुण ३० प

क मिलाया ३२ तीनका भाग शेष १ जीव प्रश्न हुआ इ प्रश्नकर्ता प्रश्न करके ऊपर नजर करे तो जीव साम्ह ने बराबर देखे तो धातु नीचे देखे तो मूल प्रश्न होता है धातु जीव मूल किंना किसको कहते हैं विना उगनेवा ले द्रव्यसें विना जिंदे जीवसें जो द्रव्य है वोह धातु है जैसे स्वर्ण चांदी तांबा जिस सिक्का गेरी पारा पत्थर रत्न आदि धातु है जीव देहधारी पुरुष पंछी सर्प म छि गौ भैंस घोड़ा आदि मूल जो वीजने सें पैदा हो क नक छोले हरी लकड़ी आदि कैं धातु जीव मिले हुये है जैसे किसी पुरुष से रुपैये लेते है के धातु मूल मि ले हुये है घर मकान है के जीव मूल धातु मिले हुवे है जैसे विद्याका पढ़ना कागज मूल (स्याही धातु सरस्वती देवता वा आप पढ़नेवाला जीव है) ५

द्विचतुष्पदं गर्भं व्यवहारं राज्यस्त्री भयं द्रव्यं कलिकं स्थानं ध्येय चिंताजायें गेवलले वा ५ कुजा कें मंदत्ते पेषु स्तवले कें द्रे धातुमूल जीवाः ६ पग्रमानवापद है मह त्तादयो ग्रह राश्यन्त. रूपात ७ तनुं धनं वादं जयं सुताध्व स्त्रीवा वं पांथगं राजहत्यं धनं पां घरिं लग्नादि गेर्के सबले ८ ॥

राश्यन्तरूपचक्रम॥ १०॥

	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
पुरु. स्त्री.	पुरुषः	स्त्री.	पुरुष	स्त्री.	पुरुष	स्त्री.	पुरुष	स्त्री.	पुरुष	स्त्री.	पुरुष	स्त्री.
चरादयः	चरः	स्थिरः	द्विस्व	चरः	स्थिरः	द्विस्व	चरः	स्थिरः	द्विस्व	चरः	स्थिरः	द्विस्व
तत्वे	अग्नि	भूमि	वायुः	जल	अग्नि	भूमि	वायुः	जल	अग्नि	भूमि	वायुः	जल
विषमादि	विष	सम	विष	सम	विष	सम	विष	सम	विष	सम	विष	सम
पादः	चतुष्पात	चतु	द्विप	बहुपाद	चतु	द्विप	द्विप	बहुपाद	द्विप	चतुजल	अपद	अपद
वर्णः	रक्तवर्ण	श्वेत	हरित	पील	धूम्रपीत	पांडु	चित्र	कृष्ण	स्वर्णवर्णाः	पिंगला	कर्बुर	बभ्रुवर्णः
स्वभावः	उग्र	उग्रक्षीण	उग्र	क्षीण	उग्रः	उग्रक्षीण	उग्रः	क्षीण	उग्रः	उग्रक्षीण	उग्रः	क्षीण
प्रकृतयः	पित्तः	वात	धातुस	कफ	पित्तः	वातलः	धातुस.	कफ	पित्तः	वातलः	धातुस	कफ
शब्द	ऽतिशब्दः	ऽतिशब्दः	ऽतिशब्दः	ऽशब्दः	ऽल्पशब्दः	अर्द्धशब्दः	ऽशब्दः	ऽशब्दः	ऽतिशब्दः	ऽर्द्धशब्दः	ऽर्द्धशब्दः	शब्दरहितः
चारी	अद्रि	भूधू.	वनचारी	जलचारी	पर्वतः	वनचारी	वनचारी	जलचारी	पर्वतचा.	शुभभूमि	वनचारी	जलचारी
स्वभा	पीनउग्रः	सौम्य	क्रूरः	सौम्य	पीनक्रूरः	सौम्य	क्रूरः	सौम्य	पीनःक्रूरः	सौम्य	क्रूरः	सौम्य
बली	दिने	रात्री	दिन	रात्रि	दिन	रात्रि	दिन	रात्रि	दिन	रात्रि	दिन	रात्री
दशा	पूर्वा.	दक्षि	पश्चि	उत्तर	पूर्वा.	द.	पश्चि	उत्तरा	पूर्वा.	द.	पश्चि	उत्तर
उदयः	विषमउ.	विष	विषमाद.	सम	समोदयः	समो	समो	समो	समो	विष	विष	विष
संगः	ऽल्पसंगः	बहु.	मध्यसंगः	बहुसंगः	मध्यसंगः	मध्यसंगः	अल्पसंगः	बहुसंगः	अल्पसंगः	मध्यसंगः	बहुसंगः	बहुसंगः
कांतिः	रूक्षः	रूक्षः	स्निग्धः	स्निग्धः	रूक्षः	रूक्षः	स्नि	स्नि.	रूक्ष	[illegible]	स्निग्धः	स्निग्धः
वर्णाः	क्षत्रि	वैश्य	शूद्र	ब्राह्म	क्षत्री	वैश्य	शूद्रः	ब्रा.	क्षत्री	वैश्य	शूद्र	ब्राह्म
संज्ञा	क्रि.	ताबुरि	जितुमः	कुलीरः	लेयः	पाथोन	जूका	कौर्प्य	तौक्षिकः	आकोकेरो	हृद्रोग	अन्त्यभम
पुत्र	ऽल्पपुत्रा	बहु.	मध्यप्रजा	बहुप्रजा	मध्यपुत्रा	मध्यपुत्रः	अल्प	बहुप्रजा	अल्प	मध्यपुत्रः	बहुपुत्रः	बहुप्रजा
उद	पृ.	पृ.	शीर्ष	पृष्ठो	शी.	शी.	शी	शी.	पृष्ठो	पृष्ठोद.	शी.	शी.उ.

अथ ग्रहस्वरूपचक्रम् ॥ ॐ

	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
वर्णाः	क्षत्रीयः	वैश्यः	क्षत्रिय	शूद्रः	ब्राह्म	ब्राह्मण	शूद्रः [illegible]	अन्त्यजः	अन्त्यजः
पुरुषस्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	स्त्री	स्त्री	स्त्री
शरीरम्	चतुर सुनेत्र	स्थूल	चतुरस्र	वर्तुल [illegible]	स्थूलः	स्निग्ध कान्ति	दीर्घः	दीर्घः	दीर्घः
[illegible]बली	मध्याह्नबली	अपराह्ने	मध्याह्ने	प्रभाते	प्रभाते	अपराह्णे	संध्या [illegible]	संध्याबली	संध्याः
दिक्स्वामी	पूर्वदिक्स्वामी	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशानस्वामी	आग्नेय दिक्	पश्चिमः	नैरृत [illegible]	नैरृत [illegible]
धातवः	स्वर्ण [illegible]	रजत	ताम्र [illegible]	स्वर्ण	रत्न [illegible]	रजित	लोहं	लोहः	लोहः
पादः	चतुष्पात्	द्विपात्	द्विपात्	द्विपात्	द्विपात्	द्विपात्	बहुपादः	बहुपादः	बहुपादः
क्रूरसौम्य	क्रूरः	सौम्यः	क्रूरः	सौम्यः	सौम्यः	सौम्यः	क्रूरः	क्रूरः	क्रूरः
गुणाः	सत्वगुणः	सत्वगुणः	तमः	रजः	सत्वगु	रजः	तमः	तमः	तमः
स्वभाव	स्थिरः	चरः	स्थिरः	चरः	स्थिरः	चरः	स्थिरः	स्थिरः	स्थिरः
रसः	तिक्तः	क्षाररसः	कटुरसः	सर्वरसः	मिष्टरसः	[illegible]	तुवररसः	तुवररसः	तुवररसः
जाति	पशु	सर्प	[illegible] कारः	[illegible]	जीवः [illegible]	जलजीवः	पक्षी	निषाद	पक्षी
तत्त्वं	पृथिवी	जल	दग्धभूमिः	[illegible]	[illegible]	जलावनी	[illegible]	उत्कर	उत्कर
प्रकृति	पित्तप्रकृति	कफ	पित्तकफः	समधातुः	समधातुः	कफी	वातधातुः	वातधातु	वातधातु
वयः	वृद्धः	युवा	युवा	बाल	वृद्धः	मध्यम	ऽतिवृद्धः	ऽतिवृद्धः	ऽतिवृद्धः
वर्णाः	[illegible] रक्तः	गौरः	रक्तः	नील [illegible]	पीतवर्णः	श्वेतः	नीलः	नीलः	नीलः
धात्वादयः	मूलं	धातु	धातु	जीवः	जीवः	मूलं	मूलं	मूल स्थिर	मूल स्थिर
चारि	वनचर	जल	वनचर	ग्रामः	ग्रामः	जल	वनचर	वनचर	वनचर

मेषादि बली लग्नसे चिंतन कहते हैं मेषलग्न बली होय प्रश्नसमय मे तो दो पायेकी चिंता कहिये वृष लग्नमें चार पायेजीव की चिंता मिथुन मे गर्भ चिंता कर्क में व्यवहार चिंता सिंहमें राज संबंधिकर्म की चिंता कन्या मे स्त्री संबंधि चिंता तुला में भय चिंता वृश्चिकमें द्रव्य चिंता धन में गृह झगडादि चिंता मकर में कर्म वा आजीवका (रोजगार) की चिंता कुंभ मे स्थान संबंधि चिंता मीन में खरच आदि चिंता होति है यही प्रकार प्रश्नाध्यायमें देखो ॥ मंगल वा सूर्य बली होकर प्रश्न लग्नसें १।४।७।१० केंद्र में होतो धातु चिंता शनि बुध होंतो मूल शेष चंद्र गुरु शुक्र होतो जीव चिंता होगी ६ पशु वा पुरुष सर्प पक्षी आदि जीव प्रश्नमें ग्रह राशि के अनुसार कहे लग्न की राशि बली होतो राशी के अनुसार पति बलि होतो लग्न पति के अनुसार कहै धातु प्रश्नमे स्वर्णादि धातभि ग्रह राश्यनुसार कहै मूल प्रश्न मे वृक्षादिभि ग्रह राश्यनुसार कहै वर्ण आदिभि च क्र सें देखकर कहै ७ बली सूर्य लग्न मे होतो शरीर संबंधी प्रश्न समझो २ सूर्य होतो धन प्रश्न (३ सू.) झगडे का प्रश्न (४ सू.) जय ऊच नाका प्र.) ५ सू.) पुत्र प्रश्न (६ सू.) यात्रा संबंधि प्रश्न (७ सू.) स्त्री संबंधि प्र. (८ सू.) जहाज बेडी दरिया जल संबंधि प्र (९ सू.) यात्रा विदेश निमित्त प्रश्न (१० सू.) राज कर्म संबंधि प्र. (११ सू.) (धनलाभ क्रय विक्रय लाभ) १२ सू. (शत्रु जगडा परदेश खरच का प्रश्न कहो ८

झगडे का (margin note)

नेत्र धनाशा नृ विन वादं हैंि माँ
न एवं चतेंगे ढीं भोज में नाल।

यांगोदेव खलश्चि वैर्यवैते
लाभे चेद् ९ भयवादं नर्तेभा
न्मित्रकलिमित्र वैरपक्ष्क्रिये।
क्रुद्धस्थानये स्वर्णमेघ नष्ट
लार्थयुक्तभूमि मार्गवाद् गदे यातं।
लाभेमंगरोभोमे १० मात्रक्लवस्त्र
धनंगं स्वक्लभानो लंपवृक्षिवा
दिकं लेनान कार्यं कार्यार्थ गुम
स्त्री पतीस्त्री नपालानष्टं पतिधा
त्वकयाप्तवे मर्थलाभं पावेंद्रो
ह्स्तवं बुधे ११ ॥

टीका· चंद्रमा बली होकर लग्नमें स्थित हो तो देव धन कै न खानेका प्रश्न कहिये २ होतो धन और जगडे का प्रश्न कहे ३ होतो वर्षा जलका प्रश्न ४ होतो माता का वा घर मकानका प्रश्न ५ होतो पुत्रका प्रश्न ६ होतो रोग प्रश्न ७ होतो स्त्री प्रश्न ८ होतो भोजन चिंता (९ होतो घर मकान का प्रश्न) १० होतो यात्रा प्रश्न ११ चंद्रमा होतो देव स्थान दुष्ट पुरुष शुच पवित्रता वस्त्र कपडे आदिका प्रश्न १२ होतो नष्ट वस्तु का लाभ प्रश्न कहिये ॥ लग्नमें बली मंगल होतो १ भय वा जगडे का प्रश्न २ नष्ट वस्तुका प्रश्न ३ भाई वा मित्र वा क्लेश का प्रश्न· ४ मित्र वा वैर वा पक्ष चार पाया वा खरीद विक्री का प्रश्न (५ क्रोधास्थिति नीति नौकरी का)६ स्वर्ण सिक्का कली चांदिका प्रश्न) ७ मंगल होतो नष्ट वस्तुका लाभ धन और जमीन का प्रश्न) ८ मंग

ल होतो यात्रा संबंधि चिंता) नवम ९ मंगल होतो झगड़े
का प्रश्न १० मंगल होतो शत्रुके आवने का प्रश्न ११ ला
भका प्रश्न १२ युद्धझगड़े का प्रश्न होता है १ लग्नमें शुभ
थ होतो (१ आत्म वा मूल का प्रश्न) (२ वस्त्र धन शरीर का)
३ सास भाई का ४ वा वली जल खेती बगीचा का) ५
संतान और कार्य सिद्धि ६ कार्य सिद्धि धन गुमस्ती कौमे
त्री का प्रश्न (७ होतो पंछीका और स्त्रीका) ८ राजा वा
आज्ञा नष्ट चीजका (९ पंछीका) १० शास्त्र वा कथा वा
स्थल का प्रश्न ११ धन वा लाभ प्रश्न १२ पाखंड श्रोह
छल और सब प्रश्न कहिये ॥ ११ ॥ ❖ ॥ ❖

स्वं धन क्षेम सत्वं स्वजन ससुरं कु
लवंधु विवाहं सुतक्षे होराहं स्त्रीवा
ह्गार्भ मर्थ सिद्धिं कृपणं देशाध्वध
नागमं मित्र विग्रह सौख्यं स्थैर्यंसौ
ख्यं यशोगृरे १२ नृत्यसुखेष्टगीतं
रत्नधनावरे निजसारगर्भ सुहृन्मा
नं विवाह सावं मित्र भ्रातृ सुतं गर्भ
प्रसवं स्त्री योगस्नेह सर्वंपर स्त्रीप्र
सत्तं सुकर्मस्त्री कवटं नष्टंशुक्रे १३
रोगस्त्री पठन पुत्रं भ्रातृनाशं सन्य
मत्यहृय कार्यं रिपुस्त्री सुतव्यापा
रं गमं धनारोग्य विद्यायशः सुभग्य
यंशनौ १४ सुत विद्या यश सारोग्यं
मित्रभ्रातृदार सुवद्रव्यं पापा न्यद्रे

गं नष्टं निधि कूप देव गृहं जयं
शोक दुःखभय लाभं विवाहं व्ययं
राहो १५ व्यय लाभं मैत्र जयं शो।
क पुत्रभान्दं दूत्य द्वत्तं स्त्री सन्ताप
दं नृत्यराग रोगं सिद्धिं क्रूर मन्त्रं।
विद्यापरस्त्री गृहस्थानसवे सर्वला
भं नष्टदृष्टि व्ययं केतो १६ ॥ ॥

टीका· गुरु बली लग्नमें होतो सवका प्रश्न २ धन
कल्याण सव ३ संबंधि सौरीका प्रश्न ४ कुल संबंधि वि
वाह प्रश्न ५ पुत्रप्रीती विवाह प्रश्न ६ स्त्री·वा द·
(झगड़ा·) गर्भ प्रश्न (७ अर्थ द्रव्य) मंत्र सिद्धि वा म
नोर्थ सिद्धि प्रश्न ८ स्नान ९ परदेश मार्ग·धन प्राप्ति प्रश्न·
१· मित्र·फूटना·सव ११ स्थिति·सव·१२ ययाक प्र
श्न १२ भृगु बली होकर लग्नमे होतो नाचना सव।
१ देव वा मित्र गायन प्रश्न· २ रत्न धन वस्त्र प्र·३
स्त्री·गर्भ·भैन·भाई·का प्रश्न ४ विवाह·सव का
प्रश्न ५ मित्र·भाई·स्वन प्रश्न ६ गर्भोत्पत्ति प्रश्न·७
स्त्री·योगाभ्यास·प्रीती·सव प्रश्न·८ दूसरेकी स्त्री प्र
श्न·९ स्नानका प्रश्न १· श्रेष्ठ कर्मका प्रश्न·११ स्त्री·झ
गड़ा·का प्रश्न·१२ गुवाची (नष्ट) वस्तुका १३ शनि
बली लग्नमे होतो १ रोग·स्त्री·का प्रश्न·२ मरना·पु
त्र·प्रश्न·३ भाईका नाश प्रश्न ४ स्त्री के दुःख वा अन्य
दुःख का प्रश्न·५ दो पुरुषों का कार्य सिद्धि ६ शत्रुका
·७ स्त्री·पुत्र·प्रश्न·८ व्यापार·९ यात्रा·१· धन·या
रोग्य·११ विद्यायश १२ शुभ कर्म·खरच·वा शुभकर्म

मे खरच॰ १४ लग्नमे राहु होनो पुत्र विद्या॰ प्र॰ २ यश आ
रोग्य प्र॰ ३ मित्र॰ भाई प्र॰ ४ स्त्रीसुख॰ ५ द्रव्य प्र॰ ६
व्यापार॰ प्र॰ ७ अन्यदेश प्र॰ ८ नष्ट द्रव्य प्र॰ जमीनका
धन॰ पूजा॰ सरकार॰ ९ जय १० शोक दुःख॰ भय॰ ११ ला
भ १२ विवाह॰ खरच वा विवाह मे खरच १५ लग्नमे केतु
होनो खरच लाभ २ मैत्री जय ३ शोक पुत्र भाई॰ ४ द्र
व्य हूल॰ ५ स्त्री॰ नौकर अधिकार॰ ६ नृत्यगायन रोग
७ मंत्र सिद्धि ८ क्रूर कर्म मरण ९ विद्या अभ्यास परदे
शंग १० घर॰ मकान॰ सुख ११ सर्व प्रकारका लाभ १२ नौ
छ वस्त्र॰ नजर॰ दफ्तर॰ खरच॰ प्रश्न कहना चाहिये और
भी कहते है नवग्रहों में जो ग्रह अधिक बली (उच्च स्वरा
शि मित्र राशी मूल त्रिकोण वा नवांश मे ग्रह बली होता
है) लग्न में जिस भावमे होनो उस भावका निस्संदेह प्रश्न
कहे आज मालूम कीया हूआ है मूकप्रश्न सर्ग मिलता
है अगर २ दो ग्रह उच्च मे होनो दोनो में से कौन बली
होवे है दोनो में जो अधिक अधिकारी होसो बली होता है ॥

विषम अंकोंको धातु मूल जीव मं॰
त्यधामसे चरादिननौका १७ खनि
रौप्य तांम्र वंगार मृदादि लोहत्रपुकौ
श्रेयस्थान् १८ पत्रपुष्प फलमूल॰
त्वकपर्णशाखाहकनः शुभके पापे
तांस्च १९ मेषाद्रकंभांत्याः ह्रस्वाः
२० युग्म कर्क धनर्मृगामध्याः २१
स्त्री तुललेयालयो दीर्घाः २२ श

।नि राहौ चंद्रा रो गुरौ शनौ सिलोदी
र्धं त्रिकोण वर्तुल चतुरस्रायतनकम्
२३ मौलिस्त्रीपुरुमांशो द्विपात् २४॥
कर्कालिमीनेपक्षवः २५ नखापदाद्रे
चतुरप्ये २६ प्रनेभौ द्विमूकादिके।
मेकातेतोशेषाः २७ इतिश्री पं॰ श्या
मरायणात्मजबालमुकुंदकृतप्रश्न
दर्शन प्रथमाध्याये द्विमूकाख्यो
द्वितियःपादःसमाप्तः ॥२॥

टीका॰ विषम १।३।५।७।९।११ राशिका द्रेष्काण॰
वा नवांश वर्तमान प्रश्न लग्न मे होतो धातु मूल जीव क
मसें जो नामहो वोह कहै जैसे मेष राशिके प्रथम द्रेष्का
ण मे धातु २ मे मूल ३ मे जीव प्र॰ वा नवांश कहे है मे
ष राशिके प्रथम नवांश १ मे धातु प्रश्न २ नवांशमे मूलप्रश्न
३ जीव ४ मे धातु ५ मूल ६ जीव ७ मे धातु ८ मूल ९
मे जीव समराशि २।४।६।८।१०।१२ मे उलटा प्रथम
द्रेष्काण मे जीव २ मूल ३ मे धातु समराशी के प्रथम न
वांश मे जीव २ मूल ३ धातु ४ जीव ५ मूल ६ धातु ७
जीव ८ मूल ९ धातु उक्त सर्व प्रकार द्वारा प्रश्न देखकर जो वस्तु नवांशमे नि
कले वोह कहै चर लग्न मे धातु स्थिर लग्न मे मूल द्विस्वभाव मे जी
व प्रश्न कहिये १) धातु प्रश्न मे सर्व ग्रहों मे सूर्य बली
हो वा लग्न मे हो वा लग्न को देखता हो तो स्वर्ण का प्रश्न इ
सी प्रकार चंद्रमा होतो चांदी मंगल होतो तांबा बुध क
ली बृहस्पति होतो पितल शुक्र होतो सिंदि गेरी पर्वत प

पर उध य घरी आदिशनि का लोहा राहुका शिल के
तुका कांषी प्रश्न १८ मूल प्रश्नमे सूर्य के पत्र चंद्रमा
पुष्प भौम के फल बुध के मूल वा कंद गुरु की त्वचा
शुक्र के पत्र शनिकी शाखा राहु केतु का स्थंभ आदि इ
न ग्रहों मे से जिस ग्रह की दृष्टि लग्न को हो वोहि मूल प्र
श्न कहे सूखा मूल क्रूर ग्रह सें शुभ ग्रहों सें हरा गीला
मूल कहे १९ वृष मेष कुंभ मीन लग्न होतो हृस्व छो
टा द्रव्य है मिथुन कर्क धन मकर लग्न होतो मध्यम
न छोटा न बडा कन्या तुला सिंह वृश्चिक लग्न होतो दीर्घ
लंबा द्रव्य होता है २२ शनि राहु लग्न मे हो वा देखते हों
तो दीर्घ लंबा आकार द्रव्य का होता है चंद्र मंगल होंतो
तीन कोण द्रव्य हो गुरु होतो गोल बुध सूर्य होतो चार
कोना शुक्र होतो बहुत कोण वा (आवर्तक खरबूजेकी तरें)
२३ अब जीव प्रश्न का भेद कहते हैं तुल कन्या मिथुन
का नवांश लग्नमें हों वा येह लग्न होंतो दो पायें का प्रश्न
कर्क वृश्चिक मीन का नवांश लग्नमें हो, वा राशि हो
तो बहुत पैरोंवाला जीव प्रश्न धन कुंभ लग्न वा न
वांश होन अपाद पैरों बिना सम्य राशियें मेष वृष सिं
ह मकर लग्न वा नवांश लग्न हो चार पाद प्रश्न॥
२६ इन सूत्रों से मुष्टि मूक चौर आदि को कहे पोथ
वा की जाति वर्ण वा वृक्ष भेद धातु भेद चरित ॰ चा
रित आदि संज्ञा ॰ ध्यायसे जान लेना २७ ॥
इति श्री सं॰ पं॰ बालमकुंद कृत प्रश्न दर्शन टीका
यां सुख बोधिन्यां प्रथमा ध्याये मुष्टि मूकाध्यो द्वि
तीयः पादः समाप्तः २

शुक्रे द्विज्ये लाभे तत्र दृष्टे वा ९ शुक्रे सतांगाय स्वोच्चे १० श्रम्ये र्वा ११ राजयोगैर्वा १२ श्रभावेध र्मे धर्मप शुभ दृग्युतेवा १३ यस्य पृष्टिस्तस्य लाभो भावेषु १४ ला॰ भांगयो लग्ने वा लाभे कश्चिन्चेन्दु दृष्टोवा १५ लग्नायपयो र्दृष्टि॰ र्लाभे सौम्यस्यवा १६ प्रवंधनादो॰

टीका॰ शुक्र चंद्र गुरु ११ …

टीका चंद्रमा…

मे वा लग्न मे वा नवम पंचम …

ग्रह देखते होतो द्रव्य लाभ होता है …

१।५।१।४।७।१० शुभ ग्रह हो तोभि लाभ प्रश्न मे लाभ कहियेगा २ पापी (क्रूर) शनि मंगल क्षीण चंद्र सूर्य क्रूर गत बुध येह ग्रह १।५।१।४।७।१० हो तो॰ लाभ नही होता ३ लग्नसें ३।१०।११ इन भावों मे उच्च राशी के शुभ ग्रह हों और शुभ ग्रह देखते हों तो लाभ होता है ४ नवम चर शुभ ग्रह बुध शुक्र हो लग्नमे गुरु हो चर राशि (मेष कर्क तुला मकर) मे सूर्य हो वा शुभ ग्रह ७।११ स्थर हों तो भि लाभ होता है ५ तीसरे ३ ग्यारवें ११ क्रूर ग्रह हों ६ क्षीणचंद्र ११ चरहो शुभ शुक्र गुरु वा बुध उच्चमे होकर १० चर हों वा ११ चर होंतोभि लाभ होता है ७ लग्न पति लग्नमे हो लाभ ११ पति ११ चर वा ७ चर हो तोभि लाभ होता है ८ ॥

अथ लाभप्रश्नप्रकारः

लाभ स्वङ्गगपस्वपाः स्वांग त्रिकोण स्थाः परस्पर दृष्टाः १ त्रिकोण केंद्रे सौम्येश्च २ पापैर्न ३ स्वर्वेग उच्च शुभे शुभ दृग्येक्ति ४ धर्मे सौम्येगुरौतनौ चैरस्थे शुभे लाभे वा ५ वात्रिकामे क्रूरे ६ एतौ तु लाभे सौम्ययुगेः स्वर्वार्थे शुभे वा नेन्दुपेन नौ लाभ पापे म देवा ८

लेवाल ... फल ३ पति लग्नमें दूसरे भाव... नो दीर्घ संवा आकार ... लाभ पति ... तीन कोण द्रव्ये हो ४ शुक्र ५।१।११।४। इन स्थानो मे उच्च राशि य का हो तोभि लाभ हो १० वा अन्य शुक्र विना और शुभ ग्रह शुक्र की तरां (५।१।११।४ स्थानों में) उच्चके होतो लाभ हो ११ वा प्रश्न कुंडली मे राज योग पडजावे तोभि लाभ होगा ग्रंथ वृद्धि भयसें कुछ राज योग लिखता हूं ॥ बृहज्जातके वक्रार्क जार्कमगुरुभि स्सकलै स्त्रिभिश्च स्वोच्चेषु षोडश नृपाः कथितेक लग्ने द्वेका श्रितेषु च तथैक तमेवि लग्ने स्वक्षेत्रगे शशि नि षोडश भूमिपाः स्युः १ वर्गोत्तम गते लग्ने चंद्रे वा चन्द्र वर्जितैः चतुराद्यैर्ग्रहैर्दृष्टे नृपा द्वाविंशतिः स्मृताः २ यमे कुंभेर्के जेगवि शशिनि तेरेव मन्मथेर्मेषु कु सिंहालिस्थेः शशिज गुरु वक्रे र्नृपतयः यमेन्दू तुंगेंगे सवितृ शशिजौ षष्ठ भवने तुलाजेंदु तेत्रे सशिन कुज जीवेश्च नरपौ ३ कुजे तुंगेर्के शर्थेन शषि यम लग्ने च कुपतिः पतिर्भूमे श्चान्यः क्षितिसुत विलग्ने स...

शशिनि सचंद्रे सौरेऽस्ते सुरपतिगुरौ चाप धरगे स्वतुं
गस्थे भानौ तुरयमुपयाते क्षितिपतिः ४ वृषे सेंदौ
लग्ने सवित्र गुरु तीव्रांशु मतनयैः सहजायायवस्थै
र्भवति नियमात् मानव पतिः मृगे मंदे लग्ने सहज रि
पु धर्म व्ययगतैः शशांकाद्यैः ख्यातः पृथुगुणयशाः
पुंगलपतिः ५ हये सेंदौ जीवे मृगमुखगते भूमितनये
स्वतुंगस्थौ लग्ने भृगुज शशिजावत्र नृपतिः ॥ स्वतस्थे
वक्रार्कौ गुरु शशि सितास्चापि हिबुके बुधे कन्यालग्ने
भवति हि नृपोऽन्योऽपि गुणवान् ६ झषे सेंदौ लग्ने घट
मृग मृगेंद्रेषु सहितैः र्यमारार्केर्योभूत सबल मनुजः
क्षितिवसुधां अजे सारे मूर्तौ शशि गृहगते चामरगुरौ
सुरेज्ये वा लग्ने धरणीपतिरन्योऽपि गुणवान् ७ कर्कि
णि लग्ने तत्स्थे जीवे चंद्रसितज्ञै राय प्राप्तैः मेषगतेऽर्के
जाते विद्यादिक्रम युक्तं पृथ्वीनाथम् ८ मृगमुखेऽर्कत
नय लग्न संस्थः क्रियकुलीर हयाधिप युक्ताः मिथुन
तौलि सहितौ बुध शुक्रौ यदि तदा पृथुयशाः पृथिवीशः
९ स्वोच्च संस्थे बुधे लग्ने भृगौ मेषूरणाश्रिते सजीवे
ऽस्ते निशानाथे राजा मंदारयोः सुते १० अपि खल कुल
जाता मानवा राज्यभाजः किमुत नृपकुलोत्थाः प्रो
क्तभूपाल योगैः नृपति कुलसमुत्थाः पार्थिवा वक्ष्य
माणै र्भवति नृपति तुल्यस्तेषु भूपालपुत्रः ११ उच्च
स्वत्रिकोणगैर्बलस्थैस्त्र्याद्यैर्भूपति वंशजा नरेंद्राः पंच
ादिभिरन्यवंशजाता हीनैर्वित्तयुतान भूमिपालाः १२
लेखस्थेऽर्के जेंदौ लग्ने भौमे स्वोच्चे कुंभे मंदे चाप प्राप्ते
जीवे राज्ञः पुत्रं पृथ्वीनाथम् १३ स्वर्क्षे शुक्रे पाताल
स्थे धर्मस्थानं प्राप्ते चंद्रे दुश्चिक्यांग प्राप्ति प्राप्तैः शे

मे जातः स्वामीभूमेः १४ सौम्ये वीर्ययुते तनु युक्ते वीर्याढ्ये च शुभे शुभयाते धर्मार्थी प्रचयेष्ववशेषैर्धर्मात्मानृपजः पृथिवीशः १५ वृषोदये मूर्ति धनारिलाभगैः शशांक जीवार्क सुतापरैर्नृपः सखेगृहे खेशशि जीवशौर्यिनौ यमोदये लाभगते नृपोऽपरैः १६ मेषूरणायतनुगाः शशि मंद जीवा ज्ञारो धने सित रवी हिबुके नरेंद्रम् वक्रासितौ शशि सुरेज्य सितार्क सौम्या होरासवा लशुभखान्नगता प्रजेशम् १७ यह राज योगोंके श्लोक हैं ॥ इनके अर्थ हमारे भाषा टीका सहित वृहज्जातक मे स्पष्ट है इहां ग्रंथ वृद्धि भय से नही लिखे १२ पूर्व कथित सर्व योगोंका अभाव होतो नवम घरका स्वामि नवम घर हो शुभग्रह नवमको देखते हों वा साथहों तोभि लाभ होताहै १३ लग्नादि द्वादश भावों मे जो भावपुष्ट हो (संज्ञाध्याये) तिसी २ भावका लाभ होता है जैसे संतान ५ भाव पुष्ट होतो संतान लाभ होवे है इसी प्रकार सर्व भावों को पुष्ट होनेसे लाभ होता है १४ ग्यारवें ११ घरका स्वामी और लग्नका स्वामी दोनो ग्यारवे हों वा दोनो लग्न मे हों वा एक लग्नमे एक ग्यारवे ११ हों चंद्रमा देखता हो तो लाभ होताहै १५ लग्नपति और लाभ पति ग्यारवें ११ देखते हों वा शुभ ग्रह देखते हों तोभि लाभ होता है १६ एवं इसी प्रकार धन आदि भावों मे विचारणा (जैसे) धनेश लग्नेश धन घर में हों वा दोनो लग्नमे हों वा धनेश धनमे लग्नेश लग्नमे वा धनेश लग्नमे लग्नेश धन मे इस योगमे चंद्रमा कि दृष्टि हो तो धनीधापनलाभ युक्त होता है एवं

धनाहै येह्सूत्र पूर्व १५।१६ के सूत्रों के साथ संबंधक रना है फिर लग्नपतिकि और धन पतिकि दृष्टि दूसरे (धन) घर मे हो वा शुभ ग्रहकी दृष्टि धन घर मे होतो धनाप्तिः इसीतरां तृतीय लग्नका योग होतो भ्राता सें लाभ व। सुख चतुर्थ पति लग्नपति का सर्व रीति सें योग होतो सुख मातृ आदिसें फाइदा होता है इसीप्रकार सर्व भावों को सोचना १७ ॥

चरेंगे शुभ दृष्टे लाभे दौ त्रिकोण केंद्रे सौम्येवा १८ तनु राशि दिशि स सुभ दृकेंद्र गग्रहाना १९ वा केंद्रग सु ३ पदात् २० चरा- द्रंगे लाभ द खगा द्वा दूरे स्वेवाद्ये वाः २१ पितृ मातृ अरि मित्र भ्रातृ स्त्री भृत्यानस्वामि स्वाज्ञन्विहोंरि नात् २२ तत्केंर्दु खपोश पहतिः २३ स्तणकृषि धातु लिपि द्विजमाणि क्रमादितः २४ खेषांशात्कर्मसि द्विः २५ मित्रारि स्वदेंतनः २६ सवले तंगे केंस्वात् २७ तन्वाद्यै- स्वैतैः शुभै रनेकधात्वम् २८ ॥

इति श्री पं॰ आत्मारामज बालमु कुंद कृत प्रश्न दर्शन प्रथमाध्या- ये तृतीयः पादः समाप्तः ३ ॥

का विहार करे (शिल्प) नवीन रचित पदार्थों से आजी
वका वा धन प्राप्ति होवे है २४ लग्न से दशम घरके
स्वामि के कर्म (अर्कांशे नृणा कनकोर्णादित्यादि) की
सिद्धि होनिहै अर्थात् जिस किसीने पृछा के मैं आ
जीवनार्थ वैद्य विद्या औषधि कर्मका आरंभ करता
लगा हूं सिद्धहोगा वा नहि लग्न मेष में दशम १०
का स्वामि शनि वृष राशिके अंश २५ है सिंह के न
वांश में है सिंह का स्वामि सूर्य (कर्म) अर्कांशे नृणा
कनकोर्णव भेषजाद्यैः (ओषधि पद ग्रन्थ मे है) औष
धि कर्म सिद्ध होगा (भगवान् गार्गिः) लग्न कर्मा
धिपो यस्मिन्नवांशे वर्त्तते ग्रहः चार कर्मणा न त्वस्य
कर्मणां सिद्धि मादिशेत् २५ (चंद्र लग्न) इनमे से
दशम घर ग्रह न हो तो इस प्रकार द्रव्य प्राप्ति देख
ना के लग्न सूर्य चंद्र से दशम पति के नवांश का
स्वामि मित्र राशि मे होतो स्व दशा न्तर्दशामे मित्र द्वारा
द्रव्य प्राप्ति होगी शत्रु राशिमे शत्रु द्वारा धनाप्तिः स्व
राशि मे होतो स्व गृह से अपने उद्यम द्वारा धन प्राप्ति
हो सम राशिमे होतो किसी समपुरुष से द्रव्यमिलेग
२६॥ पूर्व रीतिसें सूर्य धन दाता उच्चराशि १ मे वली
होतो स्व पुरुषार्थ सें द्रव्याप्तिहो २७ लग्न मे ग्यारवें
दूसरे ११।११।२ वली शुभ ग्रह होतो अनेक प्रकार के
कामो विद्यायों द्वारा धन प्राप्ति हो २८ इति श्री वाल
मुकुंद कृत सुखबोधनी भाषा भाष्य टीकायां प्रथमा
ध्याये तृतीयः पादः समाप्तः ॥३॥

अथ पत्र प्रश्न प्रकारः ॥ॐ

लग्नेन्दो स्थाने लि ह रिगो स्त्री चेदल्प

प्रजा १ स्वर्क्षे मृतौ मंदेनौ वंध्यायाः पतिः २ मृक्तेज्यौ मृतपुत्रायाः ३ विधुबुधौ काकवंध्यायाः ४ पुष्यानायाः ५ सबलाष्टपेऽष्टे भौमे गर्भस्रावः ६ शुक्राकीवनेत्याष्ट गैः क्रूरै मृतजातः ७ सुतेस्वामिगुरुज्ञेक्षितयुते। चिरायुः ८ यदा लग्ने ब्रजेन्न्त्यनीत्यशाले सुतपे पुत्राप्तिः ९ नत्र सुतपे सितेंदु दृष्टे पुत्रः स्त्री गृहेस्त्री १० नत्र नरादि दृष्टे नरादिः ११ पुत्रांगपौ नतौ सुतावेक्षकै पुत्रः १२ एवं सर्व भावेषु १३ ॥ ❖ ॥ ❖ ॥ ❖

भाषा. लग्न वा चंद्रमा इनमें जो अधिक वली हो तिससें पंचम वृश्चिक सिंह वृष कन्या राशि हो तो अल्प संतान होति है १ उक्त वली सें अष्टम स्व राशी १०।११ का शनि होतो वंध्या स्त्रीका स्वामि होता है २ शुक्र चंद्रमा अष्टम के होंतो मृतपुत्रोंवाली स्त्रीका पति होता है ३ चंद्र बुध होंतो काक वंध्याका पति प्रश्न कर्ता होता हैं वंध्या उसको कहते है एक संतान होकर फिर नहो जिसके जन्म के पुत्र मरैं वो मृत पुत्रा जिसके विवाह सें मरण तक संतान न हो वोह काक वंध्या होतिहै

अष्टम पति स्वराशिका अष्टम होतो जरत रहित।
स्त्रीका पति हो ५ मंगल अष्टम होतो गर्भ स्रव (पा
त) हो ६ शुक्र सूर्य अष्टम हों शेष क्रूर ग्रह ८।१२
न होंतो मृत पुत्र पैदा हो ७ पंचम का स्वामी गुरु
बुध पंचम घर हो या पंचम को देखते हों तो चिरा
यु पुत्र होता है उक्त योग जो अष्टम घरके कहे हैं
सप्तम पंचम घर भी इसी प्रकार वंध्यादि समझने चा
हिये ८ लग्नपति पंचम पतिके साथ इत्थशाल क
रे लग्नमे जब आवे तब पुत्र प्राप्ति होगा ९ सुतपति
लग्नमे हो शुक्र चंद्रमा देखते हों तो पुत्र जन्म हो
स्त्री राशि २।४।६।८।१०।१२ मे पुत्र पति होतो कन्या
होती है १० पुत्र पति पुरुष राशिमे हो पुरुष ग्रह सूर्य
मंगल गुरु देखते हों तो पुरुष जन्म स्त्री राशिमे हो स्त्री
ग्रह देखते हों तो कन्या जन्म होता है नपुंसक देखें तो
नपुंसक पैदा होता है ११ पंचम पति और लग्न पति
दोनो लग्नमे हों वा दोनो पंचम एक द्रेष्काण मे हों
तोभि अवश्य ही पुत्र प्राप्ति होता है १२ इसी प्रकार ध
नेश लग्नेश धन २ घर वा लग्नमे एक द्रेष्काण मे हों तो
धनी होता है तृतीय पति और लग्नेश तृतीय वा लग्न
मे एक द्रेष्काण में होंतो पूर्वोक्त तृतीय के द्रव्यों का ला
भ होता है एवं चतुर्थेशका योग होने पर मातृ आदि
का सुख लाभ मातृ आदिसे इसी प्रकार बारां १२ भाव
वों का योग जान लेना १३ ॥

तनुप उऽजर्दैशोबा १४ ततोन्हते कें-
वा १५ स्त्रीभगत मासतिथिवार हूं है:
केऽऽगशेहेस्मानिवातोऽपुत्र: १६ शुक्र भृ

तिथि नाम वर्णाग योगे विशेषे केवा १७ सूर्यज्या वोजेवा १८ शुक्रे द्वाराः समेन्यथा १९ शुक्रे द्विज्य ऊजे वा। २० भौमशुभाभ्यामेके सुते नहूस्त्वा २१ विशुक्रेन्दुभ्यांन २२ ॥

टीका लग्न पति लांक १।३।५।७।९।११ राशिमे वा लांक राशिके नवांश मे हो तो पुत्र हो १४ लग्नमे पुरुष राशि १।३।५।७।९।११ का सूर्य हो तोभि पुत्र होगा १५ स्त्री नाम के अक्षर गत मास तिथि शुक्ल प्रति पदादि वार रवि वार आदि छंद ७ इनका योगको ७ का भाग देकर शेष १।३।५ बचेतो पुत्र पैदा होता है अन्यथा २।४।६ बचेतो कन्या जन्म हो शून्य बचेतो गर्भ स्राव होगा १६ शुक्ल प्रति पदा दि तिथि और नामा। तर ७ सप्त और मेलकर तीन का भाग देनेसे १ बचेतो पुत्र २ बचें तो कन्या शून्य बचेतो शून्य होवेहै १७ सूर्य गुरु लांक राशी १।३।५।७।९।११ मे होतो भि पुत्र पैदा हो १८ शुक्र चंद्र मंगल समराशि मे हो तो कन्या जन्म हो १९ शुक्र चंद्र गुरु लांक मे हो। तो पुत्र। २० भौम शुभ ग्रह इनमे एक पंचम हो दूसरा देखता हो तोभि पुत्र हो २१ शुक्र वा चंद्रमा उक्त योग मे नहो तो पुत्र नही होता २२

सुतपे केंद्रे गप मथ शिल्ले गर्भोस्ति। २३ तयोरापोक्लि मस्थयोः परस्परादृष्ट्योर्न २४ शुभदृष्टोन्यपे केंद्रे वेंडः।

तेमे गर्भस्य २५ सतेंगये तत्पेंगे नट द्वेवा २६ शुक्रे वेंदौ सतेलाभेच २७ तत्स्थौ परस्परं तौवा २८ सतेकन्या हष्टेपुत्रः २९ विनीचास्तौ लाभेवा ३० तत्पयोरंध्रे यावद्गृहे स्तेमृताः ३१ दंतो ष्ट जिव्हा ष्टष्टालिललाटकर्णस्पर्शे क॰ न्यान्यथापुत्रः ३२ चंद्रेन स्वरे कन्या सतेोच ३३ सताष्टपौयावन्निर्गृहेर ष्टगोमृताल्ते ३४ ॥ * * * ॥

टीका कोई पूछे हमारे घरमे गर्भ है वा नही पंचमे श केंद्र १।४।७।१० होकर लग्न पती के साथ इत्थ॰ शाल करता हो तो गर्भ हैं २३ लग्न पति ५ पति दो तो आपोक्लिम ३।६।९।१२ हैं आपसमे न देखते होंतो गर्भ नही होता वा केवल आपोक्लिम मे होकर परस्प र दृष्टि होतो गर्भ अवश्य ही होता है यह दृष्टिपर यो ग है २४ ह्रादश पति केंद्र मे शुभ दृष्ट हो वा चंद्रमा केंद्र मे शुभ दृष्ट होतो गर्भ को कल्याण होता है २५ लग्न पति पंचमा हो पंचम पति लग्नमे तिस साल मे पुत्र हो २६ शुक्र वा चंद्रमा पंचम वा ग्यारवें ११ होतो॰ मि पुत्र होता है २७ पंचम वा लग्न मे शुक्र चंद्रमा॰ स्थित होकर आपसमे देखते हो तो पुत्र हो २८ पंच म घर दोनो स्थित होंतो कन्या ५ घर को दोनो देख॰ ते होंतो पुत्र होवे है २९ नीच शत्रु शत्रु राशि बिना और उच्च त्रिकोण स्वमित्र राशि मे शुक्र चंद्र ११ घर-

होंनोभि पुत्र प्राप्ति हो ३० पुत्र पति लग्न पति अष्टम जितने ग्रहों के साथ स्थित हो उतनी संतान नष्ट होगी ३१ दांत ओठ जीव पीठ नेत्र मस्था कान इनको प्रश्न कर्त्ता प्रश्न समय स्पर्श करे तो कन्या इनसे और अंगों को स्पर्श करे तो पुत्र गर्भ मे होता है ३२ चंद्र स्वर वाम नासका चलती हो तो कन्या सूर्य स्वर दाहिणा नासका चलती हो तो पुत्र ३३ पंचम और अष्टम पति जितने ग्रहो साथ अष्टम हो उतने पुत्र मृत होंगे ३४

सार राहुभ्यां सुतपो वा नयोर्मध्याःसुत हा ३५ पापास्त नीचगो वा ३६ मंदे। चंद्र ज्ञ हष्ट युते उच्चे ऽनस्तेन ३७ ॥

टीका मंगल राहु युक्त पंचम पती हो वा मंगल राहु के मध्य मे हो पुत्र मरजाये ३५ पंचम पति क्रूर हो वा अस्त हो वा नीच राशि मे हो नवमी मृत्यु ३६ शनि चंद्र बुध करके हष्ट युत हो वा उच्च का शनि हो अस्त न हो तो नही मरता ३७

सुतमदंगे सबल क्रूरैर्मृतगर्भः ३८ विन सबालैः शुभेर्न पीडा वा न्यैरन्यथा ३९ शुभ ततो वेसुतायेः गुरौ सवले शुभे सपुत्रो ऽन्यथा न ४० ह्यंगेगे शुभो वली सुते द्विस्थिरै कमे रेव ४१ सुतेपुंस्त्री हक्रू तल्पुत्रास्तदं क सख्या वा ४२ शुभे राशुर्नान्यथा ४३ स्वोच्च मित्र नीचारिग ह हैं स्व भास्तु

 टीका पंचम सप्तम वली क्रूर ग्रह होंतो गर्भ मे मरा लटका होता है ३८ लग्न सें दूसरे २ चौथे ४ सप्तम ७ शुभ होंतो गर्भ सुखी रहता है माता को प्रसव समय मे पीडा नही होती क्रूर होतो कष्ट वहुत होता है ३९ शुभ ग्रह लग्न मे हो १०।५।११ गुरु होतो पुत्र सपुत्र (लायक) पैदा होता है वा अन्य शुभ ग्रह वली पंचम हों क्रूर न हो तवभी सुपुत्र पैदाहोता है अन्यथा (उलटा) योगहो (लग्नमेक्रूर ।१२।१०।११।५ शुक्र गुरु न होतो कुपुत्र ॥ वा नवल क्रूर ग्रह पंचम हों शुभ ग्रह न हों तोभि कुपुत्र होता है के आचार्य लिखते हैं पंचम घरको शुभ देखते होंतो सुपुत्र क्रूर देखते होंतो कुपुत्र होता है ४० द्विस्व भाव ३।६।९।१२ लग्न हो शुभ ग्रह वली होकर पंचम होतो २ पुत्र पैदा होते है स्थिर लग्न हो ५ शुभ ग्रह होतो (एक पुत्र) चर लग्नहो शुभ ग्रह पंचम होतो)च (वहुत पुत्र होते है ४१ पंचम घरको जितने पुरुष ग्रह देखते हों उतने वालक जितने स्त्री ग्रह देखते हों उतनी कन्या जन्मती है वा पंचम घरकी संख्या जितनी जितनी हो उतने पुत्र कन्या पैदा होते है ४२ पंचम घर जितने शुभ ग्रहों का दृष्टि योग हो उतने उमर वाले होते जितने क्रूर ग्रहों का दृष्टि योग हो उतने मरजाते है ४३ स्व राशि उच्च मित्र राशि मे शुभ ग्रह होकर देखता हो वा युतहो तो शुभ नीच शत्रु राशीका और शुक्र होकर देखता हो तो अशुभ समझो ४४ ॥

लग्ने शुभे सर्व दृष्टे वा ४५ शुभे सुते

सुतभांकतुल्याः ४६ बलीगुरुर्विनाशः
शुरैकाग्निदाः ४७ सितेन्दुजमंदारसुत
द्विवेदांगाश्च ४८ सुतगबलीनोदृष्टि
नश्च ४९ लग्नात्पुत्रांशगृहेऽरिकोण
गोशे स्वपाताङ्कतमालादिः ५० यदाम
न पारिपद्येरेकोऽस्थेसूतिः ५१ चंद्रेस्वो
च्चर्क्षमित्रैवा ५२ विनीचक्रूरविष्टात
गतेस्वर्क्षे सुतपेवा ५३ पुत्रतनुपयो
गसमयेवा ५४ पुत्रर्देविशेषात् ५५
नक्रूरेन्दुदृष्टयुते ५६ यावद्दिनांशेन्दो
तावत्तनोजन्म ५७ मंदेमदेष्टत्रयेवं
मेर्कवत्सरे ५८ तनुपेदिनाद्यर्क्षसंख्य
केष्वादिनादिषु ५९ नागमिंदुचगुरुदृ
ष्टे सार्केंदुवासपापार्के चन्द्रोन्त्यजः ६०
इतिश्री बालमुकुंदशर्मणा कृत प्रश्नद
र्शने प्रथमाध्याये तृतीयः पादः १ ॥

टीका किसी स्थान उच्च राशिका शुभ ग्रह शुभ दृष्ट
हो वा पंचम शुभ ग्रह शुभ दृष्ट हो तो दीर्घायु होता है
४५ शुभ ग्रह पंचम हो तो सुत ५ की राशि की संख्या
पुत्र कहे ४६ बली गुरु पंचम हो तो ५ पुत्र सूर्य हो
तो १ पुत्र मंगल हो तो ३ पुत्र होते हैं ४७ शुक्र पंच
म हो तो ६ कन्या चंद्रमा हो तो २ कन्या बुध ५ हो तो
४ कन्या शनि पंचम हो तो ७ कन्या होती है राहु के

न ज्ञानि तुल्य समजो ४८ पंचमवली पुरुष होतो बा
लक अधिक कन्या अल्प वा पुरुष ग्रह अधिक देखते
हों तो बालक अधिक स्त्री ग्रह अधिक देखते हों तो
कन्या अधिक बालक अल्प होते हैं ४९ लग्न सें नव
म राशि तक जितनी संख्या मे शुक्र हो उतने गत मास
कहिये अगर नवम राशि सें आगे शुक्र होतो पंचम
सें गिणकर गत मास कहै दिनादिकों के लिये त्रै राशि
क करणे मे जितने दिनादि प्राप्त हों उतने दिनादि कहै॥
त्रै राशिके सूत्रं पाट्याम् प्रमाणं मिच्छाच समानजाति
राद्यन्तयोस्तत्फल मन्य जाति मध्ये तदिच्छाहत मा
द्य हृत्स्या त्रै राशिके व्यस्त विधिर्विलोमे अर्थ प्रमाण
और इच्छा की एकजाति आद और अंत मे स्थापन क
रणा मध्य विषे फल स्थापन करणा फलको इच्छा साथ
गुणना प्रमाण का भाग देवना फल त्रै राशिक मे हो
ता है उलटा त्रै राशिक हो तो उलटी विधि प्रमाण को
इच्छा स्थान इच्छा को प्रमाण कल्पना उदाहरण १८) रु
की ५० सेर कनक मिलती है ८) की कितनी मिलेगी
आने | १६ प्र | सेर ५० फल | आने ३ इच्छा | फल ५० को इच्छा साथ गु
णा ५० को प्रमाण का १८ भाग दीया लब्ध सेर ३)
छटांक ८ एक आनेकी मिली इसी प्रकार लग्न मेष
शुक्र ६ का अंश १५ है सिंह गत है मास ५ गत हुए त्रै
राशि क सें छठे मास के दिनादि मिलेंगे : अंश ३० मे दि
न ३० मिलते है १५ अंश सें कितने दिन मिलेंगे दिन १५
कुल साढेपांच महीने गुजरे दश मास मेसें कम करे तो शे
ष प्रसव के मास रहे ४।१५ दिन और प्रकार सें प्रसू
ति समय कहता हूं जब पंचमेश वा षष्ठेश प्रश्न लग्न

मे वा पंचमेश षष्ठेश जिस राशि मे प्रसूति समय हो वे ह लग्न होगा तो प्रसूति होगी ५२ वा चंद्रमा स्वरा शि उच्च मित्र राशि मे जब शेष गर्भ मासों के समीप प्राप्त होगा तब प्रसूति होगी ५२ नीच राशि क्रूरयु क्त वा क्रूरांत वा अस्त इनसे विना पुत्र पति स्वराशि में जब प्राप्त होगा तब प्रसूति होगी ५३ वा पुत्रेश लग्नेश का जब संयोग होगा तब प्रसव होगा ५४ पं चम घर मे पुत्रेश लग्नेश का योग होने सें विशेष है॥ ५५ चंद्रमा क्रूर दृष्ट युत हो सौम्य ग्रह एक भी न दे खता हो उस समय नहीं प्रसव होता ५६ चंद्रमा प्र श्न मे वा निषेक समय मे राश्या रंभ सें जितने द्वादशां श मे हो उसी राशि सें आगे उतनी संख्या राशि मे चंद्रमा (गर्भांतिम मास मे) के प्राप्त होने पर प्र[illegible] होगा के[illegible] चार्य कहते है जिस राशिके द्वादशांश मे चंद्रमा उस राशि मे जब चंद्रमा होगा उस दिन प्रसव होगा उदा हरण प्रश्न समय चंद्रमा ५।२५।॥५।३५ कन्या राशि के सप्तम द्वादशांश मे चंद्रमा है कन्या सें सप्तम मीन का द्वादशांश हुआ फिर मीन सें सप्तम राशि मे जब चंद्र मा होगा तब प्रसूत होगा इस सें कन्या चंद्रमा में प्रसव समझना (अन्य आचार्य मत) चंद्र ५।२५ द्वादशांश॥ सप्तम कन्या सें सप्तम मीन जब मीन का चंद्रमा होगा त ब प्रसव होगा यह पूर्वापर विरोध हुआ विशेष येह है के वली चंद्रमा प्रश्न वा निषेक मे होतो दोनो प्रका र सें प्राप्त राशियों दोनो मे देखना के किस राशि मे चं द्रमा अधिक वली है जिस राशि मे जाने सें चंद्रमा व ली हो उस राशि मे जब चंद्रमा प्राप्त होगा तब प्रसव हो

गा अगर निर्बल चंद्रमा होतो उक्त प्रकार दोनो राशीयों मे जिस राशिमे चंद्रमा निर्बल हो उसी राशिमे प्राप्त चंद्र मे प्रसव होगा उक्त उदाहरण मे चंद्रमा कन्या का १५ अंशमे है स्वामि बुध है चंद्रमा निसर्ग शत्रु है चंद्रमा शत्रु राशि मे होने से निर्बल है प्रथम प्रकार से चंद्रमा कन्या राशि का ही प्राप्त है इस लिये निर्बल राशि कन्या मेही प्रसव होगा दूसरे प्रकार द्वा से मीन ५ कि राशि प्राप्त होति है चंद्रमा गुरु का मित्र है इस लिये १२ राशि बली है अगर दोनो प्रकार से बली राशियों प्राप्त होतो प्रश्न मे शुभ राशि चंद्र की होतो प्राप्त राशि भी शुभ की लेनी अगर दोनो शुभकी राशियां होतो प्रश्नमे चंद्रमा जिस राशिमे हो उस राशि से सभी दोनो मेसे जो राशि हो उस राशिका चंद्रमा होने पर प्रसूति होगी ॥ ः ॥ अब इसी पर विरोध दिखलाता हूं. सारावल्यां यस्मिन् द्वादशभागे गर्भाधाने व्यवस्थितश्चंद्रः तमल्पकैः प्रसवो गर्भस्य समादिशेत् प्राज्ञः भगवान् गार्गियाचार्य्ये द्वादशांशे यतिनराशिर्व्यवस्थितः तत्संख्ये यस्तनो राशीर्जन्मेन्दो तं कुतो वदत् १ बृहज्जातक के टीका कार भट्टोत्पलजीने भी गार्गीजीका वाक्य ठीक सिद्धांत माना है परंतु इस वाक्य से भी कैं ज्यों फरक पड जाता है जो मैने पूर्व लिख दीया है वै ह ठीक सिद्धांत है (जातक तत्व विवेक प्रमाण है)

५७ लग्नमे शनिका नवांश हो लग्न से सप्तम शनि हो तो निषेक दिनसे तृतीय वर्षमे प्रसव हो कर्क राशिका नवांश लग्नमे हो चंद्रमा लग्नसे सप्तम हो तो १२ बारवें वर्ष प्रसूति हो ५८ लग्न पति दिन राशिमे

होतो दिनमे जन्म रात्रि राशीमें रात्रि जन्म कहिये (सं
ज्ञके) वा लग्न दिन संज्ञक होतो दिन मे रात्रि संज्ञक
होतो रात्रिमें जन्म होगा उभय संज्ञक १२ होतो दुं...
समय का जन्म होगा इष्ट समय का प्रकार हलग्नांश
के यावान्देति दिन रात्रि सम्भन भागो तावद्गते दिन
निशोः प्रवदंति जन्मेति अर्थ जितने लग्न के अंश
अतीत हों जितने दिन रात्रिके हिस्से मे जन्म होगा॥
(त्रैराशिक) यदा एक राशि कलाभि १८०० दिनमा
न घटिका लभ्यंते तदा प्रश्न लग्नांश कलाभिः किं
मिति उदाहरण लग्न ११२०।१५।१५ दिन लग्नम् ए
क राशी कला १८०० इष्ट लग्न कला ६१५ (त्रैराशि
क) |१८००| ३०| ६१५| इच्छा ६१५ हतं फलं १८४
नम् १८४५० प्रमाण १८०० भक्तं लब्धं घटी १० शे
षे ४५० षष्टि गुणीते २७००० प्रमाण १८०० भक्तं
जातानि पलानि १५ इसी प्रकार इष्ट निकाल लेना
५९ लग्न वा चंद्रमा को गुरु न देखता होतो पर
जात कहै सूर्य चंद्रमा एक राशि मे हों गुरु न देखता
ना होतो भि परजात कहिये चंद्रमा सूर्य और एक
क्रूर ग्रह साथ हो तोभि परजात कहिये ६० इति श्री
बाल मुकुंद कृत प्रश्न दर्शन भाष्य टीकायां सर्वबो
धिन्यां प्रथमा ध्याये चतुर्थः पादः ४ ॥

इति प्रश्न दर्शनस्य पूर्वार्द्धः समाप्तः

अथ रोग प्रश्न प्रकारः ॥ ॐ

अशुभ खेगा क्षोणोऽभावे ह्यष्टुः १ मंदस्थि
तावनीसारम् २ राहुमंदौवातम् ३ मुक्त
शोवलहानिः ४ सक्रूरे बुधे सन्निपातम् ५

सान्ये: शनि रन्यत् ६ मंद भौमाभ्यां रा
हुर्काभ्यां च कुष्टम् ७ भौमार्कौ रक्तस्रव: ८
गुरुज्ञाभ्यां क्षय: ९ सक्रूरेज्ये त्रिदोष: १०
सखेटार्के चित्त रोग: ११ चंद्रेतिसारे च १२

टीका अष्टम गत ग्रह सें रोग कहो अगर अष्टम
कोई ग्रह न हो तो देखने वाले ग्रह सें कहे १ शनि
वा चंद्रमा वा शुक्र अष्टम हो तो अतीसार रोग हो-
ता है २ ८ राहु शनि हो तो वायु रोग ३ शुक्र मंग
ल ८ हो तो वीर्य हानि ४ क्रूर ग्रह युत बुध ८ हो
तो सन्निपात होवे है ५ शनि किसी और ग्रह के सा
थ हो तो और रोग होता है ६ शनि मंगल हो तो म
हा कुष्ट होवे है ७ राहु सूर्य हो तो कुष्ट ७ मंगल-
सूर्य ८ हो तो रुधिर बगना ८ गुरु बुध हो तो क्षय
रोग ९ सहित क्रूर के गुरु हो तो त्रिदोष वात पित्त
कफ १० किसी और ग्रह साथ सूर्य ८ हो तो चित
भ्रमादि रोग ११ चंद्रमा ८ हो तो अतीसार का चित्त रो
ग होवे है १२ ॥

राह्वर्कौ चर्मदलम् १३ सपापे शनौ कंप:
१४ मंद सूर्ये रक्तपित्तम् १५ सूर्यशैवा १६
बुधे श्लेष्माजीर्णौ १७ मंदपापद्वयगेज्ये
शीतरोग: १८ सूनावत्ते भौमे योनिलिंगरो
ग: १९ कुज्ञार्कयोर्मदेतापः २० मांद्येकुजे
बुधे सम: २१ शुक्रेज्यौ शिर: २२ शनौ वा
युकंपो रक्त मालावेग्रमन्यत्कृत: २३ स्रा

कांट्येर्हस्पयुते रंध्रेतज्ज्ञानुकोपात्त्र २४ केंद्रे कादौज्वरवातरक्तौ २५ त्रैज्यसितैर्न २६ मंदाग्निमरणनाशाः शेषैः २७ ॥

टीका राहु सूर्य ८ होंतो (चर्मदल) चंचल कष्ट होवैहै १३ किसी क्रूर ग्रह साथ शनि होतो कंप वायु हो १४ चंद्र सूर्य ८ हों रक्तपित्त १५ सूर्य मंगल ८ सेभि रक्तपित्त १५ बुध ८ कफ अजीर्ण १७ चंद्र दो क्रूर गुरु ८ होतो शीत वासन्निपात १८ सप्तम अष्टम मंगल होतो योनि रोग वा लिंग रोग १९ मंगल सूर्य ७ होतो ताप २० मंगल ७ अग्निमंद बुध होतो सम अग्नि २१ शुक्र गुरु ७ शिर रोग २२ सप्तम शनि हो वायु कंबली रक्त विकार हजी (या) उन्म (सखन) किसी शत्रुका कीया कराया है २३ अष्टम को सूर्यादि कोमे जोग्रह देखता हो तिस ग्रहके धातु विकारसे रोग होता है सूर्यो रोसितेंदु त्रेज्यौ शनि सर्यो पित्त श्लेष्म समवातः ॥ अस्थिरक्त मज्जा चर्म मेदोरेतः शिराः स्नावाः संज्ञा ध्यायसे इनसूर्योका अर्थ देखिये १४ केंद्रमे सूर्य होतो ताप चंद्र होतो वायु मंगल होतो रक्तविकार २५ बुध गुरु शुक्र मेसे एक वा तीनो होतो रोग नहीं होता २६ शनि होतो मंदाग्नि राहु होतो मरण केतु होतो नाश होताहै २७ ॥ ❖ ॥ ❀ ❀ ❀

रोगर्त्ते मत्ते शुभे शुभम् ३० किमौषध मितिवाच्ये २९ वैद्योगः सबलौषधिवैद्ययोर्विबलरोगीरोगयोश्शुभम् ३१ नान्यथा ३२ ॥

त्रिकोण केंद्रगा सबलाः शुभास्तुंग गावा ३३ लग्ने सपापे लाभे सबले दीर्घरोगः ३४ मृत्युपे केंद्रगे पनष्टे स्माष्टमे क्षीणेंदौ वा ३५ कर्तरी योगे केंद्रे दौ रविपापे एकोदयेंगे मरणम् ३६ चंद्रेंगे रसे सशुभे केंद्रेन ३७ रंध्रान्मरणम् ३८ मेषे गेल्पं शेभौमे वासिंदौ वा ३९ नन्तपोरंध्रेकेंद्र केवा ४० ॥ ॥ भाषा टीका

रोग की राशि ७ शुभ हो तो शुभ अशुभ हो तो अशुभ २९ क्या औषधि देनी चाहिये यह दशम घरसे कहे ३० वैद्य लग्न होना है ३० औषधि और वैद्य बली हो रोगी का और रोग का घर निर्बल होतो रोग जावेगा ३१ उलटा होतो मृत्यु ३२ नवम ९ पंचम केंद्र १।४।७।१० के स्वामी सबल शुभ ग्रह हो वा येह सर्व उच्च मे वा इनमें से एक उच्च मे होतोभि शुभ होता है ३३ लग्न मे क्रूर हो लाभ घर मे बली क्रूर हो तो दीर्घ रोग होगा ३४ अष्टम पति केंद्र मे हो लग्न पति नष्ट हो वा आठवें वा क्षीण चंद्र होतो भि दीर्घ रोग होगा ३५ कर्तरी योग मे चंद्रमा हो १ कर्तरी लक्षणं मुहूर्तचिंतामणौ लग्नात् पापावृजु नजुर्व्ययार्थस्थौ यदा तदा कर्तरी नामसा ज्ञेया मृत्युदारिद्र शोकदा १ अर्थ २ क्रूरग्रहोमे से एक क्रूरग्रह सीधा चलता हुवा लग्नसे १२ घर हो दूसरा क्रूरग्रह वक्री लग्न से दूसरे होतो कर्तरी रोग होता है मृत्यु दरिद्र और शोक होता है इस जगा लग्न चंद्रमा समझना अगर लग्न को कर्तरी योग हो तो वैद्य बेफम होकर दवाई ठीक नही देता वा वैद्य की दी हुई दवाई अनुकूल नही

१० क्रूर को कर्तरी होतो औषधि निष्फल जाति है चंद्र
मा को कर्तरी होतो रोग नहीं अच्छा होता सप्तम च
द्र को कर्तरी होतो रोग बढ़ जाता है कर्तरी योग स
हित केंद्र में चंद्रमा हो ४ क्रूर हो पृष्ठोदय लग्न होतो
मरण होता है ३६ चंद्रमा लग्न मे हो या शुभ ग्र
ह साथ छठे हो या कर्तरी रहित केंद्रमे हो नही मरे
३७ अष्टम राशि से मरण कहे ३८ मेष लग्न नवां
श वृश्चिक मे लग्न वा किसी भाव मे मंगल हो वा चं
द्रमा सहित मंगल वृश्चिक नवांश मे हो मरण हो
ता है ३९ लग्नेश अष्टमेश अष्टम एक द्रेष्काण
मे होतो मरण होता है ४० ॥

भौमे नंदानले भद्रा सर्पभे रुद्रवसुरिक्ता
सिते पित्र्यकरूज्रयेज्ये मंदयमश्रुणीसवा॥
४१ नतौ चंद्रे केन्द्रे सद्योन्यथा रोगः ४२ स
बले लग्नेन त्यवाले:ऽबलेष्टपेन ४३ अन
लेंगपे लाभगे शुभदृष्टेऽबलेष्टपेवान्यथा॥
न ४४ : नतौपे वा पति दृष्टशुभे नन्निमै:
भैर्न ४५ अंगपे सखे सबलो हिनायपे
वा ४६ अनुके नतपे नतौ सितेवा ४७
लग्नेष्टमे सूर्येन्दौवा जलान्मृत्युः ४८ कु
जेतैर्यौह्रि दोषज्वर नृस्मान: ४९ ॥

टीका: मंगल वार नंदा १।६।११ तिथि कृत्तिका मे रोग होय
भद्रा २।७।१२ अश्लेषा बुध वार ॥ आर्द्रा धनिष्ठा रि
क्ता ४।९।१४ शुक्र वार ॥ मघा हस्त जया ३।८।१३

गुरु वार ॥ शनि भरणी पूर्णा ५।१०।१५ इन नृतयज्ञ योगो मे रोगा रंभ होतो मरना है ४१ लग्न मे क्षीण चंद्र सप्तम सूर्य होतो सद्यः मरण अन्यथा उलटा योग होतो रोग होवे है ४२ लग्न बली हो लग्न पति सप्तम हो निर्बल अष्टम पति होतो नही मरना॥ ४३ लग्न पति अस्त न हो लाभ पति शुभ दृष्ट हो॥ अष्टम ८ पति निर्बल हो तो भि नहि मरना अन्यथा मरना है ४५ लग्न पति चतुर्थ हो सबल उदित॥ लाभ पति हो तोभि जीवेगा ४६ लग्न पति उदय हो शुक्र बली लग्न मे हो तोभि जीवे रोग जावे ४७ लग्न मे वा अष्टम मे सूर्य चंद्र होतो जल से मरे है ८ न घथा ? लग्न मे सूर्य चंद्र हो वा अष्टम सूर्य चंद्र हो वा लग्न मे सूर्य अष्टम चंद्रमा लेना ४८ मंगल बुध बृहस्पति हो तो सन्निपात वा तापवा तृषा से मृत्यु हो॥ यह योग तीनों के एकत्र होने पर है ४९ ॥

शनि राहू केतवः क्षुधया ५० क्रूरेष्टमेभिचा॥ रात् ५१ वह्निनोशस्त्रात ५२ भौमेपाशात्॥ ५३ नव चरादौ परे रेव पक्षिः ५४ नवमशुभे॥ केंचनीर्थे कंद्रेवा ५५ धर्मेपेगुरौवा ५६ प कर्तगेधर्मांगास्थेपेर्कैः ५७ केंद्रार्थहेत्वे रामगुरावगुरौवा ५८ चंद्रसितौ शनिज्ञौसूर्या रौगुरूः पितृनरकपातालस्वर्गपाः ५९ म दार्याष्टदौलोके ६० रवीहोर्वलवहुत्कपलो कागमनम् ६१ रोग्रर्क्षाच्छिनाडिका: ६२ प वीतु नामकैकनाड्यांमरणम् ६३ ॥

टीका॰ शनि राहु केतु लग्न मे वा अष्टम चर तीनों वा दोनो वा एक एक ग्रह होनो क्षुधा सें मरन ५॰ क्रूर अष्टम होनो मूठ चलने सें ५१ राहु सूर्य दोनो होंनो शस्त्र सें मृत्यु ५२ भौम होनो फांसी सें ५३ अष्टम चर राशि होनी परदेश मेमरे स्थिर मे स्वदेश द्वि स्व भाव मे मार्ग मे मरना है ५४ सर्व री तीसें जब मरण योग हो तब वा कोई पुरुष पूछे के मै जब मरूंगा तब किसी तीर्थ का स्थान होगा वा नही अ ष्टम बृहस्पति शुक्र होनो तीर्थमे मरण हो सूर्य अष्टम हो वा केंद्र मे शुभ ग्रह हो वा सूर्य केंद्र मे हो तो तीर्थमृत्यु होगी ५५ नवम का स्वामि न्होवा बृहस्पति होनोभि तीर्थ मे मरण होगा ५६ एकरा शि मे नवम लग्न धन के स्वामि किसी भाव मे वा के वल अष्टम पर तीनों होनो मोक्ष होजाता है ५७ के न्द्र १।४।७।१० छठे ६ अष्टमे ८ वा स्वराशिका वा उच्चरा शिका गुरु होनोभि मोक्ष होता है ५८ चंद्र शुक्र पितृ पति शनि बुध नरकके॰ सूर्य मंगल के पाताल के गुरु स्वर्ग पति है ५९ सप्तम ७ छठे ६ आठ वें ८ इन तीनोमेसे वली राशि के पति के लोक मे मर कर जावेगा ६० सूर्य चंद्र सें वली के द्रेष्काण पति के लोक सें उतर कर इस संसार मे प्राप्त हुआ था ६१ आर्द्रा नक्षत्र सें लेकर तीन नाडि चक्र व नावना ६२ सूर्य नक्षत्र चंद्र नक्षत्र नाम नक्षत्र जब एकही नाडी मे होनो असाध्य रोगी का मरण होताहै मरणे को होनो प्रति दिन देखने सें जि स दिन यह योग मिले निस्संदेह कहे ६३ ॥८

नाडीत्रयचक्रम् ॥

आ	ह	उ	ऽनु	ज्ये	ध	श	भर	आदि:
पु	म	ह	वि	मू	पू	पू	ऽश्वि	मध्या
पू	श्र	चि	स्वा	मृ	उ	उ	रे	अन्त्या

दिनर्क्षो नामर्क्षे रोगेंद्रष्ट योर्विशा

क्षी कालमृत्युधनिष्ठाद्वे ६४ नत्रमत्स्वश्मभगान्यत्र ६५
रोगनष्ट देंष्ट्र विवाद विग्रह रण दष्टास्थगांन
सन् ६६ लग्नौलग्नपे वाया वंतो ग्रहा रोगिपार्श्व
गाः ६७ लग्नेधने व्ययेवा ६८ पुंस्त्रीनक्ष ६९
चरेंगे देशेनगृहे रोगी ७० रोमस्थरेवा ७१ स्थि
र आसीन: ७२ रोगेवा शुभमध्य ७३ रंध्रे स्थि
रेस्वगृहेऽस्ति ७४ लग्नपेत्रिके क्रूरदृग्युतेऽशुभ
म् ७५ इति द्वितीयाध्याये प्रथमः पादः समा
प्तः ॥२॥ टीका· दिन नक्षत्र सें नाम नक्षत्र ५।१४
।२३ संख्या नक्षत्र कालका मुख होता है १८।१० न
क्षत्र दंष्ट्रा का होति है ६४ मुखदंष्ट्रा मे जिस दिन
गोचर मे नक्षत्र नाम को जिस दिन १ अन्य नरोगग्र
सित पुरुष की मृत्यु होति है और नक्षत्र शुभ होते है
६५ रोगपर नष्ट वस्तु पर सर्पादि दंशन पर विग्रह यु
द्ध मे आने पर मुख दंष्ट्रा मे नक्षत्र होतो अशुभ होता
है ६६ लग्नके साथ वा लग्नपति के साथ जितने
ग्रह हों उस समय उतने जीव रोगी के समीप हों ६७
लग्न वा लग्नेश के साथ कोई ग्रह न होतो उक्त लग्न
लग्नेश के दूसरे द्वादश घरों मे जितने ग्रह होत गु
ण संख्या कहै वा द्वि द्वादश भी कोई ग्रह न होतो

लग्नपति वा लग्न इन दोनोंमेंसे जो वली हो तिसकी न
राशि संख्या कहे दोनो पूर्णवली वा तुल्य वली होंतो
दोनोकी संख्या मिलाकर कहें ६८ पुरुष ग्रहोंसे पुरु
षस्त्री ग्रहोंसे स्त्री कहे ६९ चर लग्न होतो विदेशमे
रोगी हो वा स्वदेश मे दूसरे के घरमे ७० रोगभी (चर
राशि) ग्रहो ७१ स्थिर लग्न होतो रोगी बैठा हुआ स्वगृ
ह मेंहे ७२ द्विस्व भावमे देश सेंबाहर रहे वा स्वगृह मेंसे
रहा है ७३ अष्टम स्थिर राशि होतो स्वगृह मेंहे ७४
लग्नपति त्रिक ६।८।१२ मे क्रूर ग्रहों करके दृष्ट युत हो
तो अशुभ मरण होता है ७५ इति श्री प्रश्नदर्शन टी
कायां द्वितीयाध्याये प्रथमः पादः ॥२॥

सप्तखांबु भानि चोर लाभ द्रव्य स्थानानि १
लग्नं चंद्रश्च द्रव्यनाथः २ नष्टांशि लीभान् ३
सर्वोगो बुधे द्विज्याः शेषोबली केंद्रे धात्वादिः ४
भान्वादीचतुरस्त्रो हृते द्विधे बुधस्य ५ दीर्घवृ
त्तं चंद्रस्य ६ वर्तुलं गुरोः ७ शुक्रस्यातिदी
र्घसत्तमम् ८ सार्द्धरदीर्घं मंदस्य ९ चौरद
शेष्टलग्नः १० स्थानं प्रवदान् ११ नष्टस्थानं स
ल्वान् १२ लग्नपतनस्य वर्णाद्याम् १३ अंध सं
द मध्य सुलोचनं धातुतो लाभो यत्रास्त्रवर्णा
न्सर्वादिदिश १४ धनेशोलेमदेश चोरलाभः १५

टीका सप्तम घर चोरका स्थान कहिये दशम घर द्र
व्य लाभ का स्थान चौथा घर ४ द्रव्य के स्थानका १
लग्न वा चंद्रमा द्रव्यका स्वामी हैं २ वा नष्ट वस्तुका स

४५ ना होतोभि शीघ्र लाभ होता २३ शीर्षोदय ३।५।६
७।८।११ लग्न हो पूर्ण चंद्रमा लग्न मे वा लाभ मे शु
भ दृष्ट युत होतोभि लाभ होता है २४ पंचम चतुर्थ
लग्नमे शुभ दृष्ट युत होतोभि लाभ होताहै २५ लग्न
पति ६।८।७।१२ चरसें बिना अन्य चरों मे शुभ दृष्ट
युत होतोभि लाभ नष्टवस्तुका होता है २६ उक्तस्था
नों मे लग्न पति क्रूर युक्त हो वा केवल लग्न पति ६।
८।७।१२ हो वा क्रूर युक्त युत ४ स्थानों में होतो लाभ
नही होता २७ पूर्ण चंद्रमा शुभ ग्रह साथ चतुर्थ ला
भ मे होतोभि लाभ होता है २८ ॥
मदपे शुभ दृग्युतेदोवा २९ मेषालिस्त्रीकी
टे वे शुभ दृग्युतेवा ३० लग्ने शुभेवा ३१ शी
र्षोदयोगेकर्क्षगत ३२ लग्ने सर्वेमरेन ३३
लग्नपेमदेवा ३४ सार्केदीमदेनथा ३५ मद
पेवक्रे लग्नेवा स्वयं ददाति चौरः ३६ सपा
पेरोन ३७ एवं नष्टे लपेयुनपे वक्रे वा ३८
चंद्रेपूर्णेलपेवा सूर्येन ३९ त्रिनवगेनेत्यशा
ले धनयेन्यदेशेद्रव्यम् ४० चरादौ लग्ने वा
दौ गृहे ग्रामे ४१ स्थिरे वर्गेतिमेगृहेस्वप्रकृत
हतम् ४२ ॥ ७ ॥ टीका सप्तम पति शुभ दृष्ट
युत हो वा चंद्रमा शुभ ग्रहो करके दृष्ट युत हो वा
चंद्रमा सप्तम पति हो कर शुभ दृष्टयुत होतो लाभ
नष्टका होता है ३० मेष वृश्चिक कन्या कर्क रा
शि स्थान चर हो शुभ ग्रहोका दृष्टियोग होतोभिला

भ हो ३० लग्नमे शुभ होतोभि लाभ हो ३१ लग्न
वा और सप्तमेश का योग विना लग्न चतुर्थ सप्तम
और भावोमे होतो कष्टसें कुछ (थोडासा) लाभ हो
ताहै ३२ लग्न चतुर्थ सप्तम चरसे लग्नेश सप्तमेश
का योग होतो कुछ लाभ नही होता ३३ केवल ल
ग्नपति सप्तम होतोभि नहि लाभ होता ३४ सूर्य
चंद्र दोनो सप्तम होतोभि नहि ३५ सप्तम पति व
क्री हो वा (विना वक्री लग्नमे हो) तो चौर आपहीदे
जाता है ३६ चंद्रमा क्रूर ग्रहो के साथ लग्नमे हो
वा सर्व योग के होने पर चंद्र क्रूर युक्त किसी भावमे
हो तब नष्ट वस्तु नहि मिलेगा ३७ (पर्व (प्रवेक
आकर्षणकरो) चंद्रमा क्रूर युक्त अष्टम नवम भावमेहो
सप्तमेश वक्री हो तोभी लाभ नही होता ३८ केवल चं
द्रमा या क्रूर युक्त चंद्रमा ६।७।५ होतोभि लाभ न
ही होता सूर्य ६।७।५ होतो लाभ होता है ३९ धनप
पतिका सप्तमेश के साथ इत्थशाल करना तथा चर
[illegible] हो द्रव्य अन्य देश मे समझना ४० चर लग्न होतो घ
र से बाहर द्रव्य होता है स्थिर लग्नमे चर मे द्विस्व भाव
व मे घरसें बाहर ग्राम के अंदर द्रव्य है विशेष योह है
नवांश बहुत आचार्योने माना है जैसे चर लग्नमे च
रका नवांश होतो देश सें बाहर वस्तु चली गई है च
र लग्नमे स्थिर का नवांश होतो घरसें बाहर देश के अ
ंदर आपने घरके समीप है चर लग्न द्विस्व भाव का
नवांश होतो अपने घरसें बाहर देशके अंदर दूर कि
सी मकान मे वस्तु है स्थिर लग्न हो स्थिर का नवांश
होतो स्वगृह मे वस्तु है स्थिर लग्न मे चरका नवांशहो

तो घरसें बाहर अपने देशके अंदर घर के पासले मका
न मे वस्तु हो स्थिर लग्न द्विस्व भाव नवांश होतो घर
सें बाहर देशके अंदर दूर किसी मकान मे हो द्विस्व भा
व ३।६।९।१२ के दो भाग हें प्रथम १५ अंशातक स्थि
र ३० तक चर लग्न द्विस्व भाव के पूर्वार्द्ध मे हो नवां
श स्थिर का होतो स्वगृह मे चर नवांश होतो गृह स
मीप द्विस्वभावका नवांश होतो गृह सें दूर स्वदेश मे
द्विस्वभाव के दूसरे भागमे लग्न हो नवांश चरका हो
तो देशसें बाहर हो स्थिर का नवांश होतो घरके समी
प द्विस्व भावका नवांश होतो घरसें दूर कहिये घरम
योह लेना जिस स्थान से वस्तु नष्टहो ४१ स्थिर राशि
का विशेष कहते हे स्थिर राशी २।५।८।११ लग्न व
र्गोत्तम नवांश (२।५।८।११ का) हो स्वगृह मे अपने
घरके जीवने चोरी करी हे ४२॥

चरे न्येन ४३ द्व्यंगे समीप वासिना ४४ द्वे
ष्केंद्रोर मध्यान्त्ये ४५ लग्नात्तपोनवगोस्व
गृहगश्चोरः ४६ त्वोद्विनोवा ४७ चकश्चेत्स
मीपगः ४८ रवींदु नलपैर्न दृष्टोंगोवा ह्यगाः
४९ मदपेतंगे स्वगृहगः प्रसिद्धः ५० अंत्येभृ
त्यः ५१ मंदेपिताप्तोभृत्योवा ५२ सितेंदुजी
वैर्मीनाद्स्त्रीगृहमनुष्यश्च ५३ ॥ टीका-

चर लग्न होतो घरसें अन्य पुरुष चोर होता है ४३
द्विस्व भाव लग्न होतो समीप रहने वाला चुराता है
४४ पूर्व योगोंके अनुसार चरके बीच वस्तु नष्ट नि
श्चय होतो स्थान विशेष वर्तमान रीति सें कहे प्रथ

म द्रेष्काणमे लग्न हो दरवाजेपास यका हो मध्य द्रे
ष्काण होतो गृहके मध्यस्थान मे तीसरा द्रेष्काण
होतो गृह के पीछे स्थान मे हो ४५ लग्न पति सप्त
म पति दोनो लग्न मे होतो घर मे चोर होताहै प
क लग्न मे होतो बाहर का पुरुष घरके भेतमे चो
री करता है ४६॥ ५ चर चंद्र सूर्य दोनो होतोभि
घरकापुरुष४७एक होतो घरके पुरुष के भेतमे जा
ती है चोर समीप रहने वाला होता है ४८
सूर्य चंद्र लग्न पतियेहलग्नको न देखते हों तो बाहर के
चोर तीन ३ होते है एक ग्रह न देखता होतो २घरके
[illegible] बाहर का ३ तीनो मेसे दो न देखते होंतो दो २
[illegible] बाहर का चोर कहिये ४९ सप्तम पति
घर के [illegible] चोर (प्रसिद्ध) नामी हो
उच्चमे होतो [illegible] नौकर
ना है ५० सप्तम [illegible]
चोर हो ५१ सर्व योगो द्वारा घरका मे हो वा दे
ने पर कौन चोरहै यह कहते है शनि सप्तम का स्वा
मि होतो पिता वा पुत्र वा अन्य चोर कहिये १ द्रेष्का
न मे शनि होतो पिता २ द्रेष्काण मे पुत्र ३ द्रेष्काण
मे नौकर ५२ सप्तम स्वामि शुक्र होतो माता चंद्र हो
तो स्त्री गुरु होतो घरका मुख्य पुरुष ५३ ॥
भौमे पुत्रो भ्राता वा ५४ ज्ञेबंधु मित्रो वा
५५ ग्रह दृग्योगादेवम् ५६ पुर्णेस क्रूरे ह
रे पुराण चोरः ५७ अर्कात्पितृ मातृ सुता
मित्र मुख्य स्त्री अन्यसहजो ऽभावेतणतः ५८
विप्र ताम्र वैश्य शूद्र बंध स्त्री मातृ पुत्र दास

स्पर्षोंदुरभुवो मेषाम् ५९ सिंह मृगेंत्यजो विश्योवा ६० सखा पुत्र भ्रातरस्तुलायाम् ६१

टीका• मंगल ७ पति होतो पुत्र वा भाई ५४ बुध हो तो संबंधि भाई मित्र ५५ इसी प्रकार सप्तम पति ७ को जो ग्रह देखता हो वा साथ होतो बली सें कहे जो संबंधि चोर आवे वो मूत होतो उसके मुल्य का और संबंधि लेना जैसे पिताका नाम निकले वोह जिंदा न ही तो चाचा वा ताया वा कोई घर मे जो बड़ा है अ गर आपही सबसें बड़ाहे तो जो चीज गई है वोह आपही कहीं राख के भूल गया है इसी प्रकार बुद्धि द्वारा समझे ५६ सप्तमपति ९ नवम चा क्रूर दृष्टयुत हो (वा केवल) नवम भाव क्रूर दृष्ट युत होतो चोर पुराणा है ५७ नवम चा सर्वादि ग्रहों कि दृष्टियोग सें पिता आदि चोर कहे सूर्य नवम हो वा नवम को देख ता होतो पिताचोर होवे है चंद्र सें माता (भौम सें पुत्र) बुध सें मित्र गुरु सें घरका मुख्य भृगु सें स्त्री शनि सें भृत्य राहु केतु सें भाई कहिये ५८ मेषादि राशि नव म वा लग्न होने सें विप्रादि जानो विशेष येह है लग्न अधिक बली होतो लग्न राशि नवम अधिक बली होतो नवम राशि समजो मेष लग्न वा नवम होतो ब्राह्मण चोर २ क्षत्री ३ वैश्य ४ शूद्र ५ भाई ६ स्त्री ७ भाई मित्र ८ पुत्र ९ मे दास १० (स्त्री) पुत्र की स्त्री ११ मूसे १२ जमीन ५९ वा उक्त स्थानोंमे सिंह मक र राशि होतो चांडाल वा वैश्य तुलामे मित्र पुत्र वा भाई चोर कहियेगा ६१ ॥

सेवकोलिः ९२ धनेषिस्त्रीपितृभ्रातरः ९३ युवार्भक मध्यस्थ विराभौमो बुधस्त्वबृद्धसितौ शेषाः ९४ वलीलग्नगाहृष्टलग्न ९५ भावेननुपात् ९६ शुक्लाद्यातोदिदिनैः मध्यमान्यवयः ९७ समगे मदपे स्त्रीहृष्टेंगना पुरुषश्च ९८ भिन्नेत्वंडेवास्त्रीनरा कारेश्वमधुश्च ९९ ॥ ॥ टीका॰ वृश्चिक लग्न वा नवम होतो सेवक चोर हो ९२ धन मे स्त्री पुत्र भाई ९३ मंगल युवा बुध बालक चंद्र शुक्र मध्या वस्था शेष सूर्य गुरु शनि राहु केतु वृद्ध उमर वाले हे बालक १० पर्यंत ॥ युवा ३० ताकर मध्य ६० ताकर उपरंत वृद्ध उमर कहे है ९४ लग्नमे जो ग्रह गयाहो वा लग्नको जो ग्रह देखता हो तिसथी चोरकी उमर कहे दो वा तीन ग्रह लग्न मे हों वा देखते हों उनमे जो अधिक वली हो तिसकी आयु कहो ९५ शुक्ल प्रतिपदा से १० दिन वाल फिर १० मध्य फिर १० दिन वृद्ध प्रश्न मय तिथि के अनुसार आयु जानो ९७ सप्तम पति समराशि २।४।६।८।१०।१२॥ मे स्त्री चंद्र शुक्र देखते होंतो स्त्री चोर कहे सप्तमेश १।३।५।७।९।११ मे हो पुरुष ग्रह सूर्य मंगल बृहस्पति देखते होंतो पुरुष चोर हो ९८ (उक्त योगों से भिन्न) मदपति सम राशि मेहो बुध शनि देखते होंतो (स्त्रीवेसरा) सप्तम पति विषम मेहो बुध शुक्र देखेंतो पुरुष वेसरा वा मदपति सममेहो पुरुष ग्रह देखेंतोस्त्री पुरुषाकार हो मदपति विषममेहो स्त्री ग्रह शुक्र चंद्र

देखना होतो पुरुष स्त्रीका आकार वाला चोर होवे है । वा विना दाड़ी खोहा हो ६९ ॥

वृषाजौ युग्मककौ सिंहो स्त्रीघटसर्पौ धन्व मृगकुंभौ मीनं पूर्वात् ७० लग्नदचं देशे प्र पद उक्रमशः ७१ वह्निभात्त्रयंमध्यान्तवको ष्ठेष्वंतत्र ७२ नव तिथि वार योगे युगाप्ते शून्यतोपूर्वादिः ७३ केंद्रगैर्दिशासंभवेलग्न तोत् ७४ ततोर्मध्यांशकाद्योज्ञनम् ७५ मदपांशाद्वा ७६ तेगवकेविर्ष्ठिः स्वाशुभे द्द क्के ७७ ॥ ॥

टीका वृषमेष लग्न होतो पूर्व दिशामे द्रव्य है ३।४ आग्नि ५ सिंह दक्षिण ६ नैऋत ७।८ पश्चिम ९ वायु मकर १०।११ उत्तर । १२ ईशान ७० (स्व) लग्न (कु) पूर्व ॥ सप्तम पश्चिम दशम दक्षिण चतुर्थ उत्तर क्रम से ७१ कृत्तिका नक्षत्र से तीन तीन नक्षत्र मध्य कोष्ठ से नवकोष्ठ लि दे इष्टनक्षत्रजिस दिशामे हो उस दिशामे कहे चक्रमेस्पष्ट है ७२ तिथि शुक्लप्रतिपदासे वार सूर्य से गिन नव ९ मिलाई चार ४ का भाग देने से शून्य शेष होतो पूर्व एक बचे तो दक्षिण २ बचे तो पश्चिम ३ बचे तो उत्तर दिशा कहिये ७३ वा केंद्रगत ग्रहोसे पूर्वादि दिशा समझो अग १ लग्नादि केंद्रो मे कोई ग्रह न हो तो लग्न राशि से चक्र द्वारा देखो ७४ लग्न के नवांश वस्

ईशान [illegible]	पूर्व आ।पु।पु।	आ नि. [illegible]
उत्तर [illegible]	कृ. रो. मृ.	दक्षिण [illegible]
वायव्य [illegible]	पश्चिम [illegible]	नैऋत [illegible]

पू

	०	२।५	०	
३	२।४ १२	०	२।६ १०	२
	०	२।७ ११	०	

प

योजन पंचम नवांश से अधिक होतो पंचम से गिनके र योजन समझना चाहिये ७५ वा सप्तम पति के नवांश योजन जानो ७६ उक्त लग्न पति वा सप्तम पति उच्च राशिका वा वक्री होतो पूर्व रीति से प्राप्त योजन त्रिगुण करके कहो अपने नवांश मे वा अपनी राशि मे वा अपने द्रेष्काण मे ग्रह होतो दोगुना करे उक्त नेगादि के नहो तो पूर्व तुल्य ही मिलेगा ७७ ॥

लग्नप त्वपे त्वथशाले सार्थि कोगतः ७८ मदये ऽ हृत्ये ऽन्या देशो ऽन्यथान ७९ लग्नपो वक्री यदा गमनम् ८० चंद्रे लपे वाकी सत्रे ना मिलति ८१ खाष्टपेत्यथशाले राजपतः ८२ द्विपदादि सर्वे व्यंन्याष्ट स्वामीनादिदृष्टेस्यान म् ८३ चतुष्पथजले दग्धे त्रिकोचस्वगोष्ठा वास्वमिनान् ८४ सवेभूम्यग्नि जलवायुभाव ८५ नवग्रानो मलिनेनमासिवा ८६ गुरौ देव नारामे ८७॥ ❀ ❀ ❀ भाषाटीका लग्न पति दशम पतिका परस्पर इत्थशाल होतो चोर धनले कर देशांतर गिया ७८ सप्तमपति अदृश्य राशि लग्न के व्यतीत अंश से द्वादश ११।१०।९।८ सप्तम के लग्न तुल्य शेष अंश यावत् दृश्य इससे उलटा अदृश्य होता है) येहोतो अन्य देश चोर गया अदृश्य १।२।३।४।५।६ सप्तम भुक्त अंश और लग्न के भोग्यअंश अदृश्य है) दृश्यमे होतो स्वदेश मे समझो ७९ लग्नपति जब वक्री होगा तब स्वदेश मे आवेगा ८० चंद्रमा वा अस्तपति) सप्तमस्वामी) सूर्य साथ होतो

चोर नहि मिलना है ८१ दशमेश अष्टमेश का इत्थशा
ल होतो राजपक्षद्वारा चोरकी जय (वरी) होताहै ८२
द्विपदादि राशि चतुर्थ मेहो सूर्यादि ग्रह लग्न मेहो परंतु
लग्नेश अष्टमका स्वामी नहो वा सूर्यादि दृष्ट होतोउसि
स्थान मे वस्तु चाहिये ८३ सूर्य चतुर्थ हो वा देखताहो
तो चतुर्थ पंचस्थान मे द्रव्य चाहिये चंद्रमा होतोजलमे
वाजलसेमीप मंगल होतो अग्निस्थान मे वा दग्धस्थान
मे बुध होतो ईटोमे वा ऊंचे स्थान गुरु होतो देवमंदिर
भृगु होतो गोशाला शनि होतो देशसे बाहर राहु केतु
का निवत् ८४ चतुर्थ घर भूमि राशि होतो जमीनमे
अग्नि राशि होतो अग्नि समीप जल राशिमे जलमे वा
समीप वायुराशिमे हवा खोरे मंदिर मे वा मकानमे ८५
(तत्र) चतुर्थ घरमे शनि होतो मलीन स्थान मे वा अं
धेरे स्थान मे ८६ गुरु होतो देव स्थान वा वगीचा वा
वृक्ष तले ८७ ॥ ✤ ✤ ✤ ✤ ॥
रवौगृह पगोधने ८८ शुक्रे तौल्ये ८९॥
बुधे पुस्तक चित्राग्नि ९० कूप पार्द ताल नदे
शौंडो ९१ अभावे लग्नपात् ९२ मित्र शुभ
दृष्ट युते शुभेचा शुभे ९३ तत्र सर्पेंदु भौमास्तो
जलासन्ने ९४ धनुर्मेष सिंहे चतुष्पदे ९५
युग्म तुल कुंभे नानाकारे ९६ शेषेषु चरान्
९७ कीट हरि मृगे नद्यादौ वा ९८ धनुषिवृ
षेवालेभ्रम् ९९ ॥ ✤ ॥ टीका सूर्य च
तुर्थ होतो घरके मालक पास गोशाला मे धनस्था
न मे ८८ शुक्र होतो (तौल्य) तोलने के स्थान वा न

कुंडी मास ८८ बुध ४ होतो पुत्तकचित्र अन्नसमीप ९० ९३ चंद्रमा होतो कूपस्थान वा हाथपादधोने वाले स्थान ९१ चतुर्थ घर कोई ग्रह नहोतो देखने वाले ग्रहसे क हि देखना न होतो चतुर्थ पतिसे स्थान विद्वान् कहे ९२ मित्र और शुभ ग्रहों करदृष्ट युत चतुर्थ पति होतो शुभ स्थान (चकारसे) उलटा अशुभ दृष्ट युत होतो अशु भ स्थान मे हो ९३ सुखपति ८।१०।१२ इन राशियो। मे होतो जलमे वा जलसमीप (९४)राशि १।२।५ से होतो चार पाये स्थान मे ९५ राशि ३।७।११ मे होतो। नानानरोंके कारखाने मेहो (९६) शेष राशियों मे रा शिचार से कहे वृषमे बैल गाय के स्थान कन्या राशि मे पुरुखों वा स्त्रियोंके विषय स्थान मीनमे होतो जल स्थान मे ९७ राशि ४।५।१० मे नदि तालाव वावली कूआके स्थान मे ९८ राशि ६।२ देत्रकरसानके वो ने वाले स्थान ९९ ॥ ❋ ❋ ❋ ॥

अजे युग्मे स्त्रीजूका लिघटांत्ये वणग्राम गृहांतरेता निगर्नमार्गे १०० राशिभुक्तां नरभसंख्या १०१ समद्वित्रिगुणाश्चरादौ १०२ विषमेतुल्याः समेद्विगुणाः १०३ चंद्रेह विगोंश्चमलकचालस्थ १०४ स्त्रीयुग्मगोनान कम् १०५ जुलेचर्मपटोकीटे १०६ सिंहेरवि दृष्टेस्वर्णरौप्ये १०७ अन्यथायमादिचुटे १०८ सितदृष्टेसकृधभांडे १०९ नत्रालोस्वर्णरोप्ये कुजदृष्टेनासंच ११० गुरुभेन दृष्टेचित्रमक्कादि १११ पतंमदेलोहम् ११२

भाषा चतुर्थ पति मेषमे होतो वरामे मिथुन मे ग्राम कन्यामे गृह ॥ तुलामे छत्तपर वृश्चिक मे आगि में दर कुंभमे (मार्ग) टोबेमे) मीन मे (मार्ग) मशान रा स्तामे) १०। चंद्रमासें बुध पर्यंत राशि योगिन कर संख्यारुपयों की वा भूषण की कहे १०१ उक्त राशियों मे सें क्रम पूर्वक चरके तुल्य स्थिरमे द्विगुण द्विस्वभा व मे त्रिगुण रुपया चला गया कहे उदाहरण लग्न मेष बुध ११का चंद्रमा मिथुन मेंहै चंद्रमा सें बुध त क गिनी राशियां, ९ प्रथमभई मिथुन द्विस्व भाव है ९ का त्रिगुण २७ कर्क चरके तुल्य २७ रहै सिंह आगे स्थिर है द्विगुण ५४ आगे कन्या द्विस्वभाव है त्रि गुण १६२ तुला चर १६२ वृश्चिक स्थिर द्विगुण ३२४ धन द्विस्वभाव त्रिगुण ९७२ मकर चर ९७२ कुंभ स्थिर द्विगुण १९४४ कुल (१९४४) रु. का नुकसान कहिये इस प्रकार देखना १०२ भूषण विषम राशी मे तुल्य स म मे द्विगुण उदाहरण मे मिथुन सें कुंभ तक गि णतो ९ विषम है तुल्य ९ भूषण कहिये १०३ चंद्रमा वृष राशि वृश्चिक नवांश मे होतो मस्तक भूषण दो नी टिक्का आदि गल भूषण माला मोहरां कलियां कं ठा आदि १४ कन्या मिथुन मे होतो प्रच्छादित द्रव्य ॥ १०५ कर्क राशिमे होतो चमडा वा रेशम वस्त्र तुलस्था न मेहै ६ सिंहमे चंद्र होर विदेखताहोतो स्वर्ण चांदी १०७ सूर्यन देखता होतो सिक्का जिस्त लोहा आदि च डे मे है १०८ सिंह गत चंद्रमा को शुक्र देखता हो सुगं धिवाले पात्र मे १०९ (तत्र) चंद्रमा वृश्चिक मे होतो स्वर्ण चांदी भौम देखता होतो ताबा ११० धन मीन मे चं

दृष्टो गुरु देखना होतो (चित्र) नानानरादि जडन मोलि आदि मुक्त १११ शनि की राशि ११।१० मे शनि। देखना होतो लोहा ११२ ॥

जीवदृग्गुर्जीवजम् ११३ कनकं सितेन ११४ रविबुधयोर्मीनकम् ११५ धान्वादिसंख्यो व र्णो ह्रस्वादिसारादिश्चांशस्तेज्ञातम् ११६ अं शो सबलैतः सारोन्यथा फल्गुकः ११७ नीचे। स्तेनष्टप्रायम् ११८ द्रेष्काणैस्तस्कराः ११९ कृ। ष्णोनरो रक्ताक्षः परम्ब रौद्रो मेषाद्ये १२० ॥

टीका विना धन मीन राशि के अन्यराशि मे चंद्रमा स्थि तको गुरु देखना होतो जीव जाना रहा है ११३ विना। ७। २ राशि अन्य गत चंद्र को शुक्र देखना होतो स्वर्ण ११४ सूर्य बुध देखेंतो अप्रदित्र सुव्य ११५ धातु जीवमू ल। संख्यारंग ह्रस्व दीर्घ मध्य [illegible]र असार (अंश) नवां श मे संज्ञा प्रकार गोक्त कहे ११६ नवांश बली होतो शुभ्यादि अंदर से मज बूत निर्बल होतो सबके खस्र व त ऽसार कहो ११७ अंश पति नीच अस्त होतो नष्ट हू आ द्रव्य अर्थात् घु न आदि लगा काष्ठ ११८ द्रेष्काण में वक्ष्माण स्वरूप चोरका कहे ११९ मेषके प्रथम। द्रेष्काण मे लग्न होतो काला पुरुष लाल आंखे चुवा। डा हाथ भयानक चोर हो १२० ॥ ० ० ० ॥

रक्तांबरादीर्घभुवोस्थूलोदरी १२१ क्रूरः कपि लो रक्तांबरोदंडी १२२ केचिन लूनकेशा स्थूलोद री दीर्घपान्त्री वृषाद्ये १२३ कलालांगलकग्र। लोहस्तः १२४ वृहत्कायः पुमान १२५ त्रिप्रज्ञा

रूपवतीस्तुरमाद्ये १२६ उद्यानस्थो विवस्त्रो कवचधनुष्मान् १२७ रत्नभूषणधनुष्मान् पंडितः १२८ गजदेहः शूकरास्यः कीटाद्ये १२९ ॥

भाषा॰ मेषके २ द्रेष्काण मे लाल वस्त्र लंबा मुख स्थूल पेट वाली स्त्री १२१ कर्क्का पुरुष लाल वस्त्र वा पगडी दंडधारी १२२ मेषके ३ द्रेष्काण मे कुंडल युक्त कर्कश केश स्थूल पेट लंबे पैर वृष के आदि द्रेष्काण मे स्त्री १२३ वृषके २ द्रेष्काण मे कला नाच गान आदि हलमे कुशल इत्त वली पुरुष १२४ बडा लंबा शरीर पुरुष वृषके ३ द्रेष्काण मे १२५ वस्त्र रहित रूप वाली स्त्री मिथुन के १ द्रेष्काण १२६ मिथुन के २ द्रेष्काण वन उजाड का रहासी वस्त्र रहित सन्नाह धारी धनुष वाला पुरुष १२७ रत्न भूषण धनुष धारी (पंडित) बुद्धिमान्विद्वान् पुरुष मिथुन तृतीय द्रेष्काणमे १२८ हाथी के तुल्य शरीर सूरकी तरा लंबा ऊंचा मुख पुरुष कर्क के आदि द्रेष्काण चोर होता है १२९

दुष्टारण्यस्थायौवना १३० कनक भूषी ससर्पो नौस्थः १३१ शाल्मलीस्थो गृध्रश्वकास्यः सिंहाद्ये १३२ नराग्रनसो धनुष्मान् ॥ १३३ कूर्ची कुंचितकेशो दंडहस्तः १३४ पुष्पसगचटा दग्धांवरा गुरुकुलगास्याद्ये ॥ १३५ लेखी श्यामो कार्मुकः १३६ देवार्चिका धनकुंचा गौरी घटा १३७ नीलीवीष्यापण गोनर्तभांडचिंतको जूकाद्ये १३९ ब्रह्मचिनो

चटीगृहस्थः १२९ दीर्घस्तुखोधन्वी १३० १०७

टीका॰ कर्क के २ द्रेष्काण मे खराब वनमे रहने वाली वाला स्त्री १३० कर्क के ३ द्रेष्काण मे स्वर्ण भूषण धारी सर्प सहित वेडीमे रहने वाला १३१ शाल्मली वृक्षपर रहना है गिरजवा नोनेकी तरा मुख सिंहके प्रथम द्रेष्काण मे १३२ सिंह के २ द्रेष्काण मे नासाका अग्र भाग नीचे हो धनुष् धारी हो १३३ लंबी दाडी कुंडला वाले केश हाथमे दंडा सिंह के ३ द्रेष्काण मे ॥ १३४ कन्याके १ द्रेष्काण मे फूलोका भरा घट सहित स्त्री दग्ध वस्त्रधारिणी गुरु की कुलमे रहणे वाली १३५ कन्या के २ द्रेष्काण में लिखारी काला धनुष्धारी १३६ कन्याके ३ द्रेष्काण मे देव पूजका स्त्री सवन लंन गौर रंग घटा धारिणी १३७ तोलमे बनारगली वा दुकानवासी नाच गान कर्ता भांडे वाला पुरुषतुलाके १ द्रेष्काण १३८ तुला के २ द्रेष्काण मे भूषादि पासा घटा धारी गिरज मुख १३९ तुला के ३ द्रेष्काण मे लंबा मुख धनुष् वा गुलेल धारी १४०

नग्नास्थानच्युता मनोहरगात्याद्ये १४१ अन्यभर्तृगारूपवती १४२ उरुषस्त्रिपटः १४३ धनूरूपयौवनो धनुराद्ये १४४ सरूपागौरा १४५ कूर्चीदंडी १४६ रौद्रास्यारोमशःस्थूलदंतः पाशीमृगाद्ये १४७ स्यामायौवना भूषाढ्या १४८ दीर्घमुखो मलिनांवरोदंडी १४९ दीर्घास्यः सकंवलो वृद्धोघटाद्ये १५०

गौराह्वी रक्तांबरामध्या १५१ श्यामोम ध्योविपुत्रोदुःखी १५२ नौस्थश्चनरोननर्तकोमीनाद्ये १५३ नौस्थाह्वीगौरामध्या॥ १५४ नग्नःकेशी ससर्पांगः पंडितोपूर्ववयः ५५॥ ❖ ❖॥ टीका॰ नग्न स्त्री अपने स्थान से विमुख सुंदर वृश्चिक १ द्रे॰ १४१ वृश्चिक २ द्रे॰ दूसरे स्वामी और रूप योवन वाली स्त्री॥ १४२ उच्चा पुरुष द्रे॰ ३ वृश्चिक के १४३ धनुषरूप यौवन युक्त पुरुष धनके १ द्रे॰ १४४ सुन्दर गोरी मध्य उमर ३॰ वर्षके ऊपर धनके २ द्रे॰ १४५ लंबी दाढी दंडधारी वृद्ध पुरुष धनके ३ द्रे॰ १४६ भयानक मुख रोम सरीर मे अधिक मोटे दांत फाही युत मकर के १ द्रे॰ श्याम रंग जुवानी भूषणवाली स्त्री मकर के २ द्रे॰ १४८ लंवा मुख मैले वस्त्र दंड धारी वृद्ध पुरुष मकर के ३ द्रे॰ १४९ दीर्घ (लंबा) मुख कंवल धारी वृद्ध पुरुष कुंभ के १ द्रे॰ १५॰ गोरे रंगकी स्त्री लाल वस्त्र मध्य उमर वाली कुंभ के २ द्रे॰ १५१ श्यामरंग पुत्र रहित मध्य उमर दुःखी कुंभके ३ द्रे॰ १५२ मलाह चतुर नाचनेवाला पूर्ववयः मीनके १ द्रे॰ १५३ मलानी वा गोरी मध्य उमर की स्त्री कर्कशा मीनके २ द्रे॰ १५४ नंगा केशधारी सर्पधारी पंडित पूर्ववयः वर्ष ३॰ यावत् १५५

राशिस्थःकाल दिग्देशाः १५६ दिनरात्रिराशिषु १५६ संज्ञानोदिकू १५७ कलिंग मद्र पांचाल सिंधुदेश गौड गुर्जर म्लेच्छमा

राधपाः सूर्यात् १५८ सजल निर्जल मध्याःशुचरमक राशावुगुरवः १५९ वयो जातिर्लग्नपात् १६० सप्तत्रिंशद्द्विंश चत्वारिंशषोडशषष्टिद्वशरवोष्ट रवोर्क रवेनवय स्सूर्यात् १६१ जातिर्ग्रहाणाम् १६२

टीका· राशी लग्न राशि से सर्वत्र समय दिशादेश समझना चाहिये षट पंचाशिकायां राशिभ्यः काल दिग्देशावयो जातिश्च लग्न पात् १५८ दिन राशिमे दिन रात्रि राशी मे रात्रि नष्ट जातक मे उलटा जन्म रात्रि राशि मे दिन दिन राशिमे रात्रि जन्म होना है॥ १५६ संज्ञा प्रकरण से राशि कि दिशा कहे १५७ देश कहते हैं सूर्यका कलिंग चंद्र का मद्र मंगल का पांचाल बुधका सिंध बृहस्पतिका वंग शुक्रका गोड शनिका गुर्जर राहु का म्लेछ देश केतु का मागध देश कहे १५८ शुक्र चंद्रका देश बहुत जल वाला (तर मुलक) सूर्य मंगल केतु राहु शनि का निर्जल (खुशक मुलक) बुध गुरु का मध्य (न खुशक न तर) १५९ उमर जात लग्न पति से जानो १६० उमर लिखते है सूर्य की ७० वर्ष तक आयुः चंद्र २६ तक भौम ४० तक बुध १६ तक गुरु ८० तक भृगु ५० तक शनि ८० तक राहु ९० तक केतु १२० तक १६१ जाति संज्ञा प्रकरण से ग्रहों की कहे १६२ ॥

सप्तहार माद्यस्तंद्वं मनौ १६३ द्विगुने· ते मयात्तूर्यम १६४ आरवेदत्रिरुद्रेनागे

११· नर्यछुनमसवममात् १६५ भेदाम्नकपप
मात्रयंहुपात् १६६ फनाव्हयंरमालौ १६७
अगांकेकात्रयम् १६८ हावेदोमगे १६९
ग्रहवर्णादिभिश्चैर वर्णादम् १७० इति।
श्रीबालमकुंदकृत प्रश्नदर्शनद्वितीयाध्या
ये द्वितीयः पादः समाप्तः २ ॥

टीका· धन लग्न होतो म· प· ह· स· मा· यह।
आद अक्षर चौरके होवे हैं वा औरभी किसीका
नाम कोई पूछे तो चौर नामकी नरां निकाले १६३
मकर वृषमे म· यसें चार अक्षर मकरमे मादि वृ
षमे यादि ४ अक्षर १६४ सिंह लग्नमे (छ) आदि
३ अक्षर कर्क लग्नमे (म) आदि ३ मिथुन लग्न
मे (म) आदि ३ कुंभ लग्नमे (ल) आदि ३ मीन
लग्नमे (व) ब) आदि ३ तुला लग्नमे (म) आदि
३ वृश्चिक लग्नमे (म) आदि ३ (१६५)) भेदलि
खने है वृष मे (क) आदि मिथुन मे (प) आदि क
र्क मे (प) आदि सिंह मे (म) आदि १६६ कन्या
मे (फ) आदि वृश्चिक मे (न) आदि (१६७ तुला
धन मे (क) आदि ३ मकर मे (ह) आदि ४ अक्षर।
का नाम १६९ ग्रह के वर्ण जाति स्वभाव आदि में चौ
र का वर्ण जाति स्वभाव आदि संज्ञा ध्याय में कहे ॥
१७० इति श्री बालमकुंद कृत प्रश्नदर्शनटीकायांछ
त्रबोधिन्यां द्वितीयाध्याये द्वितीया पादः समाप्तः ॥२

अथ गमागम प्रकरणम्

गमागमौ वोलाभ्याम् १ खेचरे सपापे दृष्टे

वा गमनम् २ चरे गेहे हुंगे चरांशे वा ३ ॥३॥
नास्थिरे चे ४ मंदेज्ये दिनेर्ग्रे ५ चरोदये
शुभेक्षिते स्तः ६ अर्कार्कि जेज्या नामेकस्य
न चवक्रे ८ द्वयंगेंशे चिरेण ९ चरे शीघ्रम
१० चरोदये चरांशे शुभे वा ११ शीर्षोदये शु
भेन पृष्टे ॥१३॥ मीनलग्नेंशे वक्रे निष्फला
१३ नवांश गृह तुल्यैः पथि विश्रामः १४ व
ली लग्नात्त स्वांश तुल्य दूरे १५ ॥

टीका (यात्रा)

स्वगृह सें अन्य देश जाना) प्रथम चरसें आगम दू
सरे देशथी स्वगृह यात्रा समय सें देखना १ प्रथम
घर चर १।४।७।१० राशि हो क्रूर ग्रह साथ हो वा दे
खना होतो यात्रा हो २ चर राशि १।४।७।१० लग्न हो
चंद्रमा द्विस्वभाव ३।६।९।१२ राशिमे हो वा चर राशि
के नवांश मे होतो भि यात्रा होगी वा लग्न चर हो चं
द्रमा द्विस्वभाव राशिके चर नवांश मे हो ३ चंद्र स्थिर
नवांश मे हो तो नही होती ४ वा स्थिर नवांश में वा
अन्य नवांश में शनि बृहस्पति देखना होतो भि नही
होती ५ चर लग्न मे शुभ ग्रह होतो भि यात्रा होगी वा
शुभ देखने होतो भि हो ६ सूर्य शनि बुध बृहस्पति
येह सर्व ग्रह वा १ वा दो २ वा ३ इनमेसें एकही ग्रह
चर लग्न मे होतो भी यात्रा होगी ७ अगर सर्व योग मे
वा अन्य योगमे वक्री ग्रह लग्न मे होतो यात्रा नहि हो
ति ८ केवल द्विस्वभाव मे चंद्रमा हो चर राशि बिना
लग्न हो चिरकाल को यात्रा हो मास ६ के उपरंत कहे

९ चर राशि वा चर नवांश में चंद्रमा होतो शीघ्र हो १० चर लग्न हो चर नवांश मे शुभग्रह हो वा चरलग्न चर के नवांश मे हो लग्न मे शुभ ग्रह हो वा चर लग्न के चर नवांश मे शुभ ग्रह होतो भि शीघ्र यात्रा होगी ११ शीर्षोदय लग्न मे शुभ ग्रह होतोभि होगी पृष्टोदय लग्नमे शुभ होतो नही वा शीर्षोदय लग्न मे क्रूर होतोभि नही १२ मीन लग्न मे मीन का नवांश हो उसी लग्न मे वा नवांश मे कोई ग्रह वक्री होतो व्यर्थ यात्रा विना कार्य सिद्धि के होतिहै १३ लग्न जितवें नवांश मे हो उतने ही स्थानोमे मार्ग विश्राम १४ लग्न वा सप्तम इनमे से जो राशि वलि हो उस राशि से चतुर्थ राशि के नवांश तुल्य योजन कहे १५

लग्नान्त्याद्वायावत क्रूरो तत्रोपद्रवः १६ ॥ तत्र शुभोल्लाभः १७ रंध्रे क्रूरे चौरभयः १८ तत्रखग तुल्या श्चोराः १९ खार्येगे शुभदृग्युतेनहानि २० सिंहे सूर्येष्टगे भौमेंदू मंद दृष्टौ शस्त्राघातो न्यथान २१ तनौ शुभे हरवम् २२ चरादौ शीघ्रेन कालेन सिद्धिः २३ विश्रामेक द्वित्रि स्थाने २४ कर्मे शुभे दृष्टेवान्यथान २५ मदे शुभम् २६ ॥ ❀ ❀

टीका लग्न से वा पति से जितवें घर क्रूर हों उतने स्थान मे उपद्रव कष्ट हो १६ तिस विषे शुभ ग्रह होतो लाभ हो १७ अष्टम क्रूर ग्रह होतो रस्तेमे चोरका भय होता है १८ अष्टम जितने ग्रह हो उतने चोर हों ॥१९

दूसरे स्थानके लग्नमे शुभ ग्रह युत दृष्ट होतो हानि
(द्रव्य नाश आदि) नही होता २० सिंहका सूर्य शु
भ हो मंगल हानि किसी भाव मे शनि दृष्ट हो
वस्त्रका नाश रलेमे होता है अगर् उसका योग हो
तो नहि होता २१ लग्न मे शुभ ग्रह हो सर्वांशु यो
ग होने पर भि लाभ होता है २२ चर राशी लग्न हो
तो शीघ्र कार्य होता है स्थिर मे नही होता द्विस्व
भाव मे फिर पीछे हो २३ चर लग्न होतो रलेमे
१ विश्राम स्थिर मे २ स्थान द्विस्व भाव मे ३ स्थान
मे स्थित हो २४ (कर्मेति शुभे) दशम घर शुभ ग्र
ह से वा शुभ देखना होतो भि कार्य सिद्ध होता है
अन्यथा योगमे नही २५ सप्तम शुभ ग्रह होतो भि
शुभ और कार्य सिद्ध होता है २६॥
लाभे हर्षो कार्यम् २७ मध्यकुर्वे मरण म
ल्यम् २८ गुरु प्रवेश मनौ धनये वक्रेन अ
स्तापायेषे वा २९ सूर्ये च्छूरे लाभे ३१ अ
के हो समीपे ३२ शुर्विंदावसान: ३३ पानि
राहीन ३४ लग्नात्लरंध्रे भावभौमा व्यायेके
न ३५ एताविंदौ वा लग्नपद्षेउ वा क्षिमीर्ये वा
रिणा ३६ लाहु प भाग्यप: क्रूरर्दो न हन्ते म
रणे लग्ने सोम्ये रोगपद: ३७ क्रूर दृष्ट युते केन
नीर्ये ३८ लग्नात्क्रूरर्को नष्ट विंनेर्यकप्रहो
यहावा ३९ लग्नेंद्वनरोगासु लग्ने लग्नात्

मभामासोवा ४० सर्ववली लग्नाद्यत्रनमा
सेश्वरांशे द्विविंशोस्तु ४१ यदा गर्विंदाल्के
येकस्तनीवा ४२ सूर्येस्ते लग्नपे लग्नांशेवा
४३ ग्रंथे स्वपेकार्यंक्तत्वागमः ४४ सपापस
विरोगीमृत्युर्वा ४५ ॥ ✤ ✤ ॥

चतुर्थ मे शुभ ग्रह होतो सर्व कार्य होता है २७
चतुर्थ ग्रह क्रूर होतो मरण तुल्य हो. २८ द्वेषाके प्र
वेश लग्नमे धन पति वक्रि होतो कार्य नही हो २९
सूर्य मंगल चतुर्थ मे होतो क्रूर कार्य को प्राप्त हो
३१ शुक्र बुध ४ होतो समीप कार्य सिद्ध हो ३२ गुरु
चंद्र होतो कार्य करके आगया है ३३ शनि राहु हो
४ तो कार्य नही होता ३४ लग्न अष्टम सप्तम सूर्य
मंगल २ दोवें हों वा एक होतोभी कार्य नहि होता॥
३५ (नव) गुरु वा चंद्रमा पंचमेषा करके दृष्ट हो वा
युत हो रक्षेमे भय प्राप्ति हो (शत्रु स्थान पति) देखा
ता होतो नही हो (३६) सहित अष्टम पति के न
वम पति क्रूर राशिमे हो क्रूर देखता होंतो मरण
होता है राशि पति सौम्य हो सप्तम होतो योग होता
है मरण नही होता ३७ नवम स्थान क्रूर दृष्ट हो तो
तीर्थ मे नही गमन हो वा सर्वोक्त मरण योग होने
पर नवम क्रूर दृष्टि योग होतो तीर्थ मरण नहीं हो
ता ३८ लग्नसे चलकर जितनी राशिमे ग्रह हो उ
न राशीयों को १२ साथ गुणा कर जो प्राप्त हो. न
क्षत्र्यादिनो करके प्राप्त होना है वोही ग्रह जब

वक्री हो वा सप्तम पति जब वक्री हो ३९ लग्न चंद्र ११५
मा के बीच जितने अंश हों तिनके साथ लग्न रा
शि को गुणकर तीसका भाग देनेसें जो प्राप्त हो वो
ह मास फिर शेष तीस संग गुणाकर ३० का भाग
देने सें दिन फिर शेष को ६० संग गुण कर ३० का
भाग देनेसें प्राप्त घटी फिर ईसी प्रकार पल कहे॥
४० सर्व ग्रहों सें वली ग्रह लग्न सें जितवी राशि मे
हो उस राशि तुल्य मास कहे चरनवांशमे ग्रह होतो
स्थिरराशि मे होतो द्विगुण द्विस्व भावमे त्रिगुण कहे ४१
जय लग्नमे गुरु वा चंद्र वा शुक्र गोचर द्वारा प्राप्तहो
तव कहे ४२ सूर्य सप्तम हो लग्न पति लग्न मे वा स
प्त राशी के नवांश मे जब हो ४३ धन पति ३।९ प्र
श्न लग्न में होतो कार्य करके जलदी आता है ४४॥
चतुर्थ पापी ग्रह होतो रोग युक्त स्वगृह मे आता है
वा मृत्यु होनेकी प्राप्त होता है ४५ ॥

शूनेकलहरुचटकान ४६ सपापेंद्रोकेंद्रेप्र
हारः ४७ नव्रस्थपंगुकेंद्रे शुभ दृग्युते शुभा
मन्यथान ४८ चरेशोस्त्रखे सौम्ये शीघ्रम ४९
स्तनवारिभान्दुषा ५० विक्रूरे केंद्रेष्टगेंदौसो
पलीभेवा ५१ केंद्रा ददृग्रे खगोयवा ५२ प्र
वेविमदं चंद्राद्दा ५३ मंदेक्षोर्मागेगः ५४ भा
नरिश्यको यस्मिन्वा ५५ नवपे परेर्हे निष्ट
निः चरेषु तनौ स्तखेंदोगृहागतः ५६ स्तखेश
स्तखेवा ५७ नत्र सवलेंदु शुक्रेतन्पदृष्टेवा ५८

टीका सप्तम क्रूर होतो क्लेश झगड़ा मे आवे है ॥
४६ क्रूर ग्रहों साथ केंद्र मे चंद्र होतो चोर लगे है
४७ लग्न पति धन पति चंद्रमा केंद्र मे हो शुभग्र
हों का दृष्टि योग होतो शुभ अन्यथा नहीं हो ४८ च
र लग्न हो चतुर्थ घर शुभ ग्रह होतो शीघ्र आवेगा
४९ पंचम दशम तृतीय छठे शुभ होतोभि जल
दी आवेगा ५० क्रूर ग्रह विना केंद्रो मे वा अष्टम चं
द्र होतो सौम्य ग्रह देखते हो वा लाभ गतभी सौम्य
हो वा ग्यारवे घर चंद्रमा शुभ ग्रहों कर दृष्ट होतो
भि शीघ्र आवेगा ५१ केंद्रमे जो ग्रह हो वोह जब
(विना अष्टम) पन फर मे आवेतब आगम नहो
गा ५२ इसी प्रकार सप्तम विना केंद्र में चंद्रमा
जब आपोक्लिम पणफर भावमे प्राप्तहो तब आवे
गा ५३ शनिचंद्रमा केंद्र सें पणफर मे होतो बंध
मे हो वा केवल शनि चंद्र दोनो केंद्रमे होतोभि मार्ग
मे कहिये गा ५४ वा तीसरे शुक्र जिस वक्त आ
म हो तब आगम न हो ५५ सप्तम पति पराई (स
प्तम से पर भावों) मे होतो यात्रा सें निवृत्ति होति है
५६ चर राशि नवांश मे लग्न हो चतुर्थ चंद्रमा हो
तो घरमे आगया है ५७ चतुर्थेश चतुर्थ घर मे होतो
भि आगया हो चतुर्थ घर सबल शुक्र चंद्रमा हो च
तुर्थेश देखता होतोभि आगया हो ५८ ॥

शुभैर्विलेखी ५९ शुक्रे भोगं तद्यात् दुः
खकर्मा शुभप दृष्टयुतो मदानवा क्रूरैः दुः
खाभ्या माये पुत्रे विक्रूरेषु दृष्टैर्मसैमपेवा ६१

वक्र ग्रहो वा ८३ तिथिपामकेवार योगा
गामशेषात् ८४ स्थितिरागमाई ग्राम स
मीप पुनरावर्तव्याधिः रवोत् ८५ सौम्य ग्र
हो केंद्रस्थलग्नेशादन्यत्र ८६ तिथिवार
र्क्ष नामाक्षर योगे न शेषे फलम् ८७ नष्टे
ष्टा मार्गी ग्रह पुनर्गम विघ्न शून्यानिरूपात्
८८ इति श्री बालमुकुंद कृते प्रश्नदर्शने द्वि
तीयाध्याये तृतीयः पादः समाप्तः ॥ ३ ॥

टीका चतुर्थ शुभ ग्रह बली हो चतुर्थ पति न देखता
होतो थोडे दिनोमे आता है ७९ शुभ ग्रह चतुर्थ मे
जितना राशि भोग गया है तितना काल व्यतीत से
यात्रा को हुआ जितना शेष रहिता है इतना बाकी
समय आवने मे है जैसे ८० मेष ग्रह गया होतो बी
स शेष है दूर्ध जाने से जो समय हुआ उसकी द्विगु
ण समय को प्राप्त होगा ८० सप्तम चतुर्थ को शुभ
ग्रह वा पति देखते होंगे जब गोचर अनुसार गत
आवेगा क्रूर दृष्ट युत होतो नही ८१ जब लग्नमें
चतुर्थ सें ११ ग्यारवें वा पंचम क्रूर रहित सर्वो चं
मा देखता हो वा उक्त घरों मे (स शुभ) चंद्र शुभ ग्र
ह युक्त हो तब आवेगा ८२ वा वक्री ग्रह उक्त घरों
मे जब होवे तब आवसी ८३ तिथि शुक्ल प्रतिपत्
सें पहिर सूर्योदय सें नक्षत्र अश्विनी सें वार सूर्य
सें जो वर्तमान तिथ्यादि हो तिनका योग कर सप्त
म का भाग देनेसें शेषका फल कहे ८४ अन्यशेष

होतो उसी स्थान मे स्थिति है १ शेष मे आवने वाला है २ शेषमे आधा रास्ता मेहै ३ शेष ग्राममे आ गयाहै वा ११२ दिनको आवेगा ४ शे० समीप आके अट क रहा है ५ शेष फिर आकर चला गया और देशमे ६ शेष व्याधि कष्ट है ६५ शुभ ग्रह युत सूर्य अष्टम होतो उस देशाथी अन्यदेश गयाहै ६६ अब गर्गाचार्य जीका मत लिखते है तिथि वार् नक्षत्र नामके अक्षर योग कर ७ का भाग देने से शेषमे फला देश कहै ६७ एक शेष हो तो उसी स्थान मे स्थित है २ शेष आवने की इच्छाहै ३ शेष मार्ग मे स्थित है ४ शेष घर मे आगया है वा आज काल आवने वाला है ५ शेष आकर रस्ते से मुडगयाहै ६ शेष विघ्न हुआ० शेष विमार है वा मरगया है श्लोकः तिथि वारं च नक्षत्रं नामाक्षर समन्वितम् सप्तभिश्च हरेद्भागं यौथिकं सफलं वदेत् १ एके नव सति नत्र द्वाभ्यामागमन मिच्छति तृतीयेमार्गे मध्यस्य अनर्थे गृहमागतः २ पंचमे पुनरा वृतिः षष्ठे विघ्न दायकः गर्गाचार्येण संप्रोक्तं शून्ये मृत्युं वदेद्बुधः ३ इति श्री बालमुकुंद कृत प्रश्नदर्शन टीकायां द्वितीयाध्याये तृतीयः पादः समाप्तः ॥ * * * * * *

अथ मित्र प्रकरण प्रारंभः ॥

तन कार्य योहि परस्परे कर्तृगौ चंद्र दृष्टोकार्यसिद्धिः १ विशेषो मित्रवर्गो २ शत्रुनीचेक्ष्य ३ चंद्र परस्पर दृष्टिं विनाईप्यादौ ४ तंत्र

येनेंद्रुनावेत्स्थमालेखपेलेगादि विरेखवरदृष्टे यदा राज्य लाभः ५ लाभे शुभे पदाप्तिः ६ नान्यथा ७ केंद्र त्रिकोण खगैर्दृष्टे नैशुभदृष्टौवा ८ ननुपेलो लग्नपतेर्गगा दृष्टेच ननौतस्येवा ९ व्यलि स्थिरेंगेशुभदृष्टेनेवा १० अल्पमलौ ११ अनलेवेशोद्रेकायकोणः स्येकम्बुरेवा १२ लग्नपयोः परस्पर दृष्टयुतयोर्वा १३ सेंदुखापतौहि लाभेया १४ ॥

टीका लग्न पति कार्य पति स्व स्व राशिमे हो (लग्नेश लग्नमे कार्येश कार्यमे लग्नेश कार्य भाव मे कार्येश लग्नमे वा लग्नेश लग्नमे कार्यशाभि लग्नमे वा लग्नेश कार्य वा कार्यमे हो दोनो को चंद्र देखता होतो कार्य सिद्ध होता है १ मित्र के द्रेष्काण सप्तांश नवांश द्वादशांश त्रिंशांश मे होतो विशेष कार्य सिद्ध होताहै २ शत्रु नीचवर्गमे होतो अल्प कार्यहो ३ चंद्र दृष्टि न होतो अर्द्ध योग परस्पर लग्न कार्य पति न देखते होतो पाद योग होताहै ४ लग्न पति के साथ वा चंद्रके साथ दशम पति का इत्थशाल हो उच्च स्वराशि मूल त्रिकोण मित्र राशिमे स्थित होकर कोई शुभ ग्रह दशम घरको देखता हो जिस समय गोचर ग्रहानुसार मदो राज्य मिलता है ५ ग्यारवें ११ घर वली शुभ ग्रह होतो (अधिकार) तहसीलदारादि) पद मिलता है ६ अन्यथा नहीं

केन्द्र १।४।७।१० त्रिकोण ९।५ उच्च वृष स्वर्ती भी
चंद्र हो शुभ ग्रह देखता होतोभि पद मिलता है ११
चर उक्त चंद्र होतो विशेष भारी पद मिले ८।८।१२
चर सें अन्य स्थान उक्त गुण युक्त चंद्र होतो अल्प
पद मिले है ८ लग्न पति को उच्च पति उच्च राशि मे
होकर देखता हो वा लग्न मे उच्च पति होतो पद प्रा
प्ति ९ विना वृश्चिक स्थिर २।५।११ मे लग्न हो शु
भ ग्रह देखते हो वा युत होतोभि राज्य वा पद प्रा
प्ति हो १० वृश्चिक होतो अल्प राज्य वा पद मिले है
११ दशमेश अस्त न हो केंद्र त्रिकोण १।४।७।१०।९।
५ ग्यारवे ११ हो (अन्य) और एक शुभ ग्रह चर राशि
मे होतोभि राज्य वा पद मिलता है १२ दशमेश लग्ने
श परस्पर दृष्टयुत होतोभि पद प्राप्ति १३ लग्न चं
द्रमा के दशमेश लाभेश दशम वा एकादश घर मे
होतोभि पद मिलता है १४ ॥

चरराशि तुंग कोण गः खे भौमे वा १५ ॥
लग्ने तुंगे भौमा लाभ कोण स्वर्गा वा १६
सर्व ग्रह दृष्ट चंद्रे लग्ने वा १७ राजयो
गे वा १८ लग्नपो चे स्थाने सर्व ग्रह दृष्टे वा ॥
१९ पदाप्तिः प्रोक्ता २० पद योगे र्मुद्रा २१
सबले लग्नपे केंद्रे स्वपदे मेलापः २२ परे
नि केन्द्र गते २३ नन्पारे न्यगृहे मार्गे वने
वा २४ लग्नपे द्रुमदे मद पगे वा लेख
प्राप्ति २५ लेख प्रश्ने लग्नप चंद्रश्च ग्राह्यः

को मदपलयोर्वले २६ पकर्दगयो वी
गाद्दा २७ मदपेनमौ सोगपेलेवःप्रेषित
२८ चंद्रांगयपोर्यगाहदृष्टौ शुभदृष्टयोर्मी
लिनः २९ कलत्रेगपेंडकेवलेच शुभतोद
दृष्टावा ३० ॥ ❖ ❖ ❖ ॥

टीका कोई ग्रह ४ से सात ग्रहों तक ग्रह उच्च राशि मू
ल त्रिकोण में हो. भौम दशम घर होतो पदाप्ति १५ ल
ग्न मे उच्च ग्रह हो शेष सर्व ग्रह लाभ ११ मे ९।५ स्ववा
शि मे हो तोभि पदप्राप्ति हो १६ सर्व ग्रह अपनी केन्द्रको दे
खते हो तोभि. पदाप्ति वो लग्न को सर्व ग्रह देखते होतो भ
भि पदाप्ति हो १७ पूर्वोक्त राज योग हो तोभि पदप्रा
प्ति हो १८ पंचम पति उच्च राशि का किसी स्थान मे
हो पंचम घर को सर्व ग्रह देखते हों तोभि पदाप्ति १९
पद का राज्य प्राप्ति दशम घर से देखना २० पदवी
योमें मुद्रा (मोहर का अधिकारी) वा देशलेखका
अधिकारी होताहै २१ (स्त्रीमेलाप प्रश्न मे) सप्तम
पति बली केंद्रमे होतो स्वगृह मे परस्त्रीका मेलाप हो
२२ पणफरों मे अपनी स्त्री अन्य पुरुष के घर मे
लाप हो २३ आपोक्लिम ३।६।९।१२ मे होतो गा
लीमें बाहर अन्यगृह मे मेलापहो वा दर्शनमे वा ब
न बागमे २४ (हमको चिठी मली आई) ऐसे प्रश्न
मे नवम पति चंद्रमा सप्तम हो वा मद पति का योग
... (चिठी) आती है ... चिठी भेजने वा
... पति या चंद्रमा चिठी भेजे वाना समय ...

 त्रिनों का बलाबल चिंतन करणा २६ २ लग्नेश वा सप्तमेश का योग इत्थशालादि हो या चंद्रमा के साथ सप्तमेश का उक्त योग हो वा एक राशि योग हो तो चिठी मिलती है २७ सप्तमेश का लग्नेश साथ योग हो वा सद पति वा लग्नपति लग्न में एक वा दोनो होतो लिखने वालेने चिठि लिखकर भेज दीहै २८ लग्नपति वा चंद्रमा का आपस में योग वा दृष्टि हो शुभ ग्रहोंकी दृष्टि होतो लिखा मान लीया है २९ सप्तमेश लग्नेश चंद्रमाका कंबूल योग (ताजकज्योतिष्यकापाके दूसरे भागमे) वा इन तीनोंको शुभ ग्रह मित्र दृष्टि देखते होंतो लिखी चिठी मानी गई है ३० इंदो शुभे तिन युते शुभ मुनरेत्र ३१ शुभ दृष्टयुत होंदीवान्यथान ३२ सप्तपे होरा श योग मितस्तणवासर मासवर्षैः ३३ चंद्रे नवपोवास शुभदृष्ट केंद्रेवार्ता सत्यान्यथान ३४ दृतोद्यमात् ३५ शुभा शुभौसे ग्यक्रूरैः ३६ पुंग्रहैः पंवाच्योन्यथास्त्री ३७ थनेस्त्री ग्रहेवली ३७ क्लीवाह्वा ३८ किं शुक राजादली कटुकाः शमी वादरौसलोर कदलीगुदीसवाः सर्वाभ ३९ राहु कण्टःनिवत् ४० वली ग्रहान्तफलोन्यथाबि फलम् ४१ ॥ ❋ ❋ ❋ ॥

टीका बुध चंद्र शुभ ग्रहों कर दृष्ट युत होतो आरम्भ

॥ आवेगा क्रूर दृष्ट युत होतो अशुभ इसी प्रकार झगडे का हुकम कैसा सुनाया जावेगा उसमेंभी ऐसा ही देखना ३१ वा चंद्रमा पूर्ण शुभ दृष्ट युत होतो शुभ अन्यथा लेख अशुभ हो ३२ लग्नपति और चंद्रमाके अंशोंके योग तुल्य क्षणदिन पलोंकरके वि दी आवनी चाहिये अर्थात् इन दोनों सें बली जो हो तिसकी चर राशि होनेंसे क्षण स्थिर होने से दिन द्वि स्वभाव होनेसें पल कहिये ३३ चंद्रमा वा लग्नप ति शुभ युक्त दृष्ट केंद्रमे होतो वार्ता सत्य है अन्य था असत्य है ३५ छाया अशुभ सें देखना ३६ [illegible] ग्रह होतो शुभ [illegible] शुभ दृष्ट होतो [illegible] कहे ३८ पुरुष ग्रह होतो पुरुष [illegible] स्त्री ग्रह होतो स्त्री वाची [illegible] ३७ धन [illegible] होतो वेल पत्र फल ३८ नपुंसक ग्रह होने परभी वह पत्र ३९ सूर्यका किंशुक पृ[illegible] द्रका राजादली भौमके कटुकादि बुधका [illegible] जी) बरी (बेरी आदि) [illegible] बृहस्पति के) केले आदि आम्र आदि शुक्र के गोंद वाले [illegible] शनि के ४० राहु केतु पानी के तुल्य मानो ४१ बली ग्रह होतो फल सहित निर्बल होतो फल रहित क हियेगा ४२ ॥ * * * ॥

क्रूर दृष्ट योगे विफलः [illegible] ४३
[illegible] नाव: [illegible] फलानि ४४
[illegible] ४५ नो[illegible]

१०८ लग्ना ४६ नन रंध्रो स्वप दृष्टौ नभ्रु कुनम् ॥ ४७ ग्रहदृष्टावन्यथा ४८ नन्तपयोर्मदे नस्या व्यवहारा लाभः ४६ नन्नपे सेगे छिद्रे स्वे पापैर्मोपोम्मनः ५० नन्नाष्ट पौनी चारि भे धर्मेन लाभः ५१ ननौपदृष्टेगेज्यो स्लि ५२ छिद्रे सिने शुभेक्षित ग्रते स बलेंगपेजलात ५३ चंद्रेष्टगे सबलेगे लान्यदेशात् ५४ नन्नमोभे शुभ दृष्टे भू स्थिरः ५५ ॥ ॥

टीका प्रश्न घर को क्रूर ग्रह की दृष्टि योग होनेसे फल रहित वा खंडित वा टूटा हुवा ४६ कैन्द्र में रोगी का मरण बेडी जहाज आग कोई ... तीन फला देशमे तुल्य है ४६ मृत्यु ... लग्न में होतो बेडी प्रश्न मे टूटे रोगी प्रश्न ... की प्रश्न मे आवना ४५ बेडी जहाज ... म दूर से कहे ४६ लग्न और अष्टम स्वरपति दृष्ट होतो बेडी दूधनी नही ४७ देखते न होतो डूबेगी ४८ लेनी में अष्टमेश सप्तम होतो बेडीके व्यवहार में लाभ होगा ४६ लग्नपति अस्त होकर लग्नमे हो अष्टम षष्ठ क्रूर ग्रह होतो नौका (बेडी) का स्वामी मरजाता है ५० लग्नपति अष्टमपति शीघ्र शत्रु राशि का होकर नवम होतो नही लाभ होना ५१ लग्न को लग्नपति देखता हो अष्टम गुरु हो लाभ होता है ५२ ... शुक्र हो शुभ ग्रह देखते हो या सप्तम हो लग्नपति बलि होतो जलसे लाभ ... कोभ

अष्टम वा बली होकर सप्तम होतो अन्य देशमे लाभ हो ५४ अष्टम वा सप्तम उच्चराशिका शुभ ग्रह शुभ दृष्ट होतो अत्यंत बहुत लाभ होता है ५५

सुखे सुखेपे दीर्घं बंधनम् ५६ मदाष्टेऽहेतनौ वा ५७ छिद्र केंद्रे पापे विबले सौम्ये [illegible] वधबंधौ ५८ मदे शुभ दृष्टे तन्ये केन्द्रे शुभर्क्षे नमोक्षः ५९ द्युनेन्त्ये केन्द्रेषु मोक्षः ६० चरेंगे दो सप्त रात्रेण ६१ स्थिरे पक्षद्वयेन ६२ द्यूनेगे क्रूरे बंधनम् ६३ [illegible] मरणम् ६४ मदेंगे वाष्टेंगे मो[illegible] [illegible]गमः ६६ स्वे बंधनम् [illegible] शुक्र बली यावच्चोरः [illegible]मोक्षः ७० ॥

[illegible] चतुर्थेश चतुर्थ होतो (दीर्घ) चिर कालके द होगा ५६ मद ७ अष्टम लग्नमे चंद्र होने पर भी दीर्घ बंधनहो ५७ ॥ २।३।१।४।७।१० क्रूर ग्रहो सौम्य ग्रह बल रहित हों चंद्र अष्टम हो रोगी [illegible] प्रश्नमे मरण [illegible] केद प्रश्नमे कैद होता है, वा कैद होकर मरन [illegible] ५[illegible] सप्तम शुभ देखते हों स सप्तमपति नवम [illegible] मित्र और शुभ राशिका होने [illegible] हि मोक्ष (कैदसे नहि छूटे) सप्तम पति ७।१२।१ [illegible] १ मे होतो मोक्ष हो ६० चर लग्न मे चंद्रमा हो वा [illegible] लग्न हो चंद्रमा भि [illegible] भावका होकर चर [illegible]

राशि मे हो मोतहो सात दिनमे ६१ स्थिर राशिमे
लग्न चंद्र हो क्रूर ग्रह देखते हो वा युत होतो न
ही. ६२ सप्तम और लग्न इन दोनों मे क्रूर होतो
बंधन होवे है ६३ लग्नमे अष्टम क्रूर होतो मरण
कहे रोगीका। ६४ सप्तम लग्न मे वा अष्टम लग्न
मे क्रूर योग होतो बंधनहो ६५ लग्नमे क्रूर हो
तो शुभ आगम वो केंद्रमें कहे ६६ दूसरे
तो बंधन होताहै ऐसे मनु आचार्यका मत है
सप्तम क्रूर होतो बंधन होताहै ६७ क्रूर द्वादश
र होतो रोगी सप्तमे मरण कहे ६८ शुक्र बली
...हों जिस चंद्र मे हो उतने चोर प्रास...
रोगी चोरी करणे मे केंद्र हो ६९
होतो मोत ७० ॥ ❀ ❀

...वेंगे शुभे शीघ्रं ७१ ... मृत्युर्भवेत्...
शुके स्थिरः ७३ चौरे ...
दीर्घम ७५ होगे मध्य...
भो लाभात् ७७ जीवेंगे...
सर्वे विर्केवा ७८ कर्केगो विकु...
देहींस धनाबा ७९ लाभेके ...
कजे सरूप गुणा ८० सिते ... लाभेकेग
...गी भानर्याकें मरणं ८१ सार्हकाव
...को शुभाशीला दरिद्रातनौ भौमात् ८२॥
उ बेन्नूर्यन्तोरुष्ठ दृष्टे विद्याधरी ८३॥ ❀

 राशिमे हो मोतहो सातदिनमे ८१ स्थिर राशिमे लग्न चंद्र हो क्रूर ग्रह देखते हों वा युत होंतो न ही. ८२ सप्तम और लग्न इन दोनोंमे क्रूर होंतो बंधन होवे है ८३ लग्नमे अष्टम क्रूर होंतो मरण कहे रोगीका। ८४ सप्तम लग्नमे वा अष्टम लग्न मे क्रूर योग होतो बंधनहो ८५ लग्नमे क्रूर हो तो शुभ आगम हो केंद्रमें हो ८६ दूसरे ... तो बंधन होताहै ऐसे ...आचार्यका मतहै ... सम क्रूर होतो बंधन होताहै ८७ क्रूर ... र होतो रोगी प्रश्नमे मरण कहे ८८ ... बली ... जिस चरमे हो उतने और ... क ... चोरी करणे मे केंद्र हो ८९ ... होतो मोत ७० ॥ * * ...

चरेंगे शुभे मीत्रे ७१ ... मनुष्यहोरे ... शुके स्थिरः ७२ चरे ... दीर्घम् ७५ भोगे मध्य... भे लाभात् ७७ जीवेंगे ... त्रवेर्वेकेवा ७८ कर्केगे विकु... देवीसधनाया ७९ लाभेके ... कुजे सकृपगुणा ८० सिते ... लाभेकेगु ... भानर्याके मरणं ८१ साहंकारव ... शुभाशीला दरिद्रजनौ भौमात् ८२॥ ... विद्याधरी ८३॥ *

वैशि. प्रश
पत्र १२५५

भाषा ग्रंथ

भाषागम ग्रंथ

श्रावकोंजा के

का ग्रंथ पत्र ११

62

रोग प्रश्न मे जो नाडी नव
चक्र है सो उस मे कृति
का रोहिणी मृगशिर
ये तीन नक्षत्र वी लेले
रोगु है का वीउपलक्ष
ण कर लेगा कृतिका रु
हु ॥ रोहिणी मघा ॥ मृ
गशिर अनुराधा इसा तरका
लेगा

दुसरा प्रश्न दुःनक्षत्र जैसे
नामनक्षत्र जो पंचम ५ त्र
वा चतुर्दश १४ हो तै और जो
किं पश्चात् आते हो मघा कृतिका
और जो ... १८ ... १०

चाहते हो तो बीम स्युकल को
और संपूर्ण न होत्र क्षम
होते हैं :॥ ये रोज प्रश्न
प्रश्न दर्शन के पत्र ८० के
पर है

वैदिक

मोला ज्ञापक प्रतिनिहो
त्रि इलाहाबाद
गोत्रावली म...

III) दत्त वंश चंद्रिका
प्रेवई से मंगावनी

प्रवर दर्शन
की मंगावना

65

प्रश्नदृष्टान्ते
ग्रन्थ मे

लाभ प्रश्न पत्र
८५ पर है

पुत्र प्रश्न पत्र १२०

रोग प्रश्न पत्र
८३

चौर प्रश्न प- ९६

गमागम प्रश्न प.
१११

मिश्र प्रश्न प्रकर
णं ११८ पत्र प.
२८

स्त्री प्राप्ति प्र
श्न पत्र १३६

जय पराजय प्रश्न
पत्र १३३ पर

[illegible]
पत्र ५६ पर है

[illegible]
पत्र ५८ पर है

[illegible]
पत्र १८

[illegible]
पत्र ६९ [illegible]